

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

ताराशंकर वंद्योपाध्या

दुनिया एक बाज़ार



अनुवादक
हंसकुमार तिवारी

मूल्य छः रुपये



भारती मुद्रणालय शाहदरा दिल्ली में मुद्रित
DUNIYA EK BAZAR (Novel) by Tarashankar Bandyopadhyay
Translated from the Bengali by Hans Kumar Tiwari   Rs 6 00

सारास की हाट जाओगे ?

मेरा झुनझुनी रोग ले जाओगे ?

गवई लाकाविन है एक। 'सालार' है कटवा के पास। वह लोगों की जीभ की नोक पर 'साराल' कैसे हो गया, यह पंडित लोग बता सकते हैं। लेकिन लोग साराल कहते हैं। और, साराल की हाट बहुत बड़ी हाट है, बड़ी प्राचीन हाट है। लोग कहते हैं, किसीको झुनझुनी रोग हो, तो वहां खरीद बेची करने से—खास करके अगर कुछ बेचना हो तो अपने मन से 'फाव' दीजिए, उस फाव के साथ ही आपका झुनझुनी रोग जाता रहेगा। और अगर कुछ खरीदना हो, तो वाजिब दाम से एक पाई भी किसी तरह से ज्यादा न दीजिए। उस ज्यादा दाम के साथ रोग भी चला जाएगा। सो सालार के दुकानदार बड़ी सावधानी से साथ सामान बेचते हैं। कभी किसीसे पाई-पैसा ठगते नहीं, नहीं तो उसीके साथ झुनझुनी रोग भी चला आता है।

भुवनपुर की हाट बड़ी पुरानी हाट है। इस इलाके में भुवनपुर कई हैं। गंगा के किनारे है गंगाभुवनपुर, कई कोस पश्चिम हटकर है विप्रभुवनपुर, उससे आगे छोटा भुवनपुर। माठान इलाके में श्रीभुवनपुर की जमीन बड़ी उपजाऊ है। फी बीघा बारह चौदह मन, सोलह

मन तक भी पार हो जाता है। एक बीघा जमीन का दाम बड़ा महंगा है—ढाई हजार रुपया बीघा भी बिका है। उसमें बहुत बढ़िया किस्म का मनकचूड़ धान होता है। उस धान का भात बड़ा उम्दा होता है, वह मोती का दाना हो जैसे। पौधों में जब बालियां लगती हैं तो पुनापू स दूर तक महमहा उठता है।

लेकिन यह हाट भुवनपुर जो है वह सिर्फ भुवनपुर है। यहां भुवनेश्वर प्रतिष्ठित हैं—उन्हीं के नाम पर भुवनपुर। बाहर के लोग शिवभुवनपुर कहा करते हैं, यहां के लोग सिर्फ भुवनपुर कहते हैं। आदि भुवनपुर। विश्वेश्वर की काशी है, तारकनाथ का तारकेश्वर है, वैद्यनाथ का देवघर—भुवनेश्वर का भुवनपुर।

शिव से दुर्गा का झगड़ा हुआ था। दुर्गा ने गहने मांगे थे, कपड़े मांगे थे, आखिर में शंख की चूड़ियां मांगी थीं। शिव ने साफ सुना दिया था, भई अपना तो पेट भीख पर चलता है। यह सब मैं कहां से लाऊं? इससे दुर्गा बिगड़ खड़ी हुईं और मैके चली गईं। लाचार शिवजी चूड़ीवाला बनकर वहां गए, दुर्गा को मनाया।

मगर झगड़ा कभी मिटने को भी था! दुर्गा को गहने का बड़ा ही शौक और शिवजी भीख मांगने के सिवा दूसरा काम नहीं करने के। सो जब फिर इसी बात पर ठनी तो शिवजी बोले, अरे बाबा, देवता-दानव सब तो तुम्हीं को तीनों भुवन की मालकिन कहते हैं। अपना इंतजाम तुम आप भी तो कर ले सकती हो। मेरी जान बख्शो, मैं बेचारा भीख मांगूंगा, मरघट में चिता के चूल्हे पर पका-भुनाकर खाऊंगा और पेड़ तले पड़ा रहूंगा।

दुर्गा ने शिव को सबक सिखाने की सोची। विश्वकर्मा से कहा, देखो, मणिकर्णिका के मसान पर, शिवजी जहां अपना त्रिशूल गाड़े बैठे हैं वहीं पर रातोंरात मेरी राजधानी खड़ी कर दो। विश्वकर्मा ने वैसा ही कर दिया। दुर्गा राज राजेश्वरी अन्नपूर्णा के रूप में वहीं जा रहीं। तीनों भुवन का सारा अन्न हरण करके काशी में अन्नकूट का पहाड़ खड़ा

किया और घोषणा कर दी, जो भी यहां हाथ पसारेगा, पत्तल बिछाएगा, उसीको भर-पेट भोजन मिलेगा। शिव ने सारा विश्व-ब्रह्मांड छाना, भीख में दाना नहीं मिला। आखिर को वह काशी आए। अन्नपूर्णा की भीख पर जिए। मगर मन का मलाल नहीं गया।

मन ही मन सोच विचारकर एक दिन उन्होंने नंदी को बुलाया। कहा, "नंदी, मैं भी एक राजधानी बनवाऊंगा। नंदी ने छूटते ही कहा, बहुत खूब भगवन्! मां जी की जया विजया दो दाइयां हैं न, उनकी भिड़कियां तो अब बरदाश्त नहीं होतीं!

—लेकिन राजधानी बनाएगा कौन? कमबख्त विश्वकर्मा की दौड़ तो यही काशी बनाने तक है। इससे अच्छी नगरी बनाना तो वह जानता नहीं। मगर मुझे तो काशी से बेहतरीन नगरी चाहिए।

नंदी ने कहा, फिक्र किस बात की है दयालु! आपके भूत प्रेतों की यह जमात है! जानें कितने मंदिर बनानेवाले, महल बनानेवाले, किला बनानेवाले कुशल कारीगर मर-मरकर भूत हुए हैं और आपके दरबार में हैं। खाते-पीते हैं आपके डमरू की ताल पर नाचते हैं हरि नाम के साथ। उन्हींसे कह दीजिए, बना देंगे। विश्वकर्मा ने रात भर में बनाया था, ये मिनटों में बनाकर रख देंगे।

निम्मी भूतों ने सुना तो बड़े खुश हुए। कमबख्त विश्वकर्मा को हराकर रहेंगे। वे बोले हुकुम हो भूतभावन आशुतोष! अभी बनाते हैं। लेकिन गांजे का हुकुम हो भगवन्।

शिव बोले, नंदी, इन कम्बख्तों को पांच सौ मन गांजा दे दो। लेकिन सुन लो, यह नगरी काशी में कतई न मिले। यह नदी किनारे नहीं, सूखी धरती पर होगी। पत्थर-पत्थर को नहीं मणि माणिक, स्फटिक मरमर कुछ भी नहीं। सिर्फ मिट्टी! और मेरा जो घर होगा, उसकी नींव माटी की होगी, दीवाल हवा की, छत आसमान की, और तुम सबके के लिए होगा बहुत बड़ा किला। बल के पेड़ों का बरक, बरगद का बैरक, सिहोड़ का बैरक। लोगों के लिए होंगे घर, पानी के लिए विशाल जलाशय

और एक बाजार।

भुवनपुर के लोग कहते हैं पगले शिव की पगली धुन, भूता का भुतहा काम एक पहर बीतते न बीतते उस धू धू करती धरती मे एक टलमल जलवाल विशाल सरोवर के चारो ओर भुवनपुर खडा हो गया। सरोवर के घाट पर नर-खोपडी पर मिट्टी का टीला खडा हुआ, वही हुआ भुवनेश्वर स्थान। आज भी वहा पहुचने के लिए बीस सीढिया चढनी पडती हैं। हवा की दीवाल और आकाश की छत को तो लोग नही देख पाते देखता देखते हैं। भूत देखत ह। चारा तरफ बाबा के भूतो का किला बन महल बरगद महल सिहाड महल। बेल के बगीचे म ब्रह्मदत्य सेना पतियो का वास हुआ बरगद बगान म रही भूतो की सेना और सिहोड महल म प्रेतो की पलटन बस गई। नदी ने ढाक पिटवाया सिंगा फुकवाया। माटी के भुवन के लोगो को जता दिया—भुवनेश्वर के इस भुवनपुर में जो बसेंगे उन्हें भूत का भय नही रहेगा। उन पर प्रेतनियो की नजर नही लगेगी।

दल के दल लोग आए। लोगो स खचाखच भर गया भुवनपुर। मगर मुसीबत आइ लोग बाग खाएगे क्या? अन्नपूर्णा और उनके साथ लक्ष्मी तो इधर को पीठ किए काशी म बैठी हैं। सो शिव ने गधेश्वरी को बुलाया। बोले गधेश्वरी तुम्हें भुवनपुर की मा बनना होगा। अन्नपूर्णा और लक्ष्मी का घमण्ड तोडना होगा। गधेश्वरी ने कहा ठीक है। लगाया मैंने भुवनपुर के बाजार म आसन। मूग मसूर चना मिर्च और मसाले—ये चीजें भुवनपुर के सिवाय और कही नही मिलेंगी। धान चावल लिए अन्नपूर्णा पडी रह काशी मे!

भुवनेश्वर न कहा, और मेरा कहा रहा मेरा वचन—इस भुवनपुर मे जो भी चीज बिकने आएगी सब बिक जाएगी वापस नहीं लौटेगी। कुबेर को आदेश रहा कि वह सब खरीद लेंगे।

वही हुआ। भुवनेश्वर की हाट खूब जम उठी। कुबेर के अनुचरा ने मनुष्य का जन्म लिया भुवनपुर म गद्दा सालकर बठ गए। धन्वतरि के

चेले बद बने यहां। कोई रोगी आए तो यहां चंगा होकर ही रहेगा। दवा से नहीं तो भुवनेश्वर की धन है चरणोदक है।

तमाम से लोग आने लगे। खबर आई कि काशी में अन्नपूर्णा सोच में पड़ गई हैं। भुवनेश्वर बोले, मैं मगर नहीं जाता।

देवगण आए—प्रभो! यह कैसा पागलपन है। आप काशी चलिए।

भुवनेश्वर बोले, हरगिज नहीं। ब्रह्मा विष्णु भी आए तो भी नहीं। मैं गयेश्वरी के साथ ही यहां राज करूंगा।

देवगण हताश होकर लौट गए।

कई दिनों के बाद गयेश्वरी और कुबेर आए।

बोले—आफत आन पड़ी है।

—कैसी आफत?

एक खूबसूरत जवान औरत आई है। हाथ में एक पिटारा है। पिटारे में वह अपने मन का दुःख लाई है। वह दुःख उससे कौन खरीदे? हम खरीदने गए। न होगा तो खरीदकर उसे पानी में फेंक देंगे। मगर कीमत सुनकर लौट आया। वह कीमत तो अपने पल्ले नहीं है।

शिव ने पूछा, क्या कीमत मांगती है वह? राज? स्वर्ग का राज? हीरा मोती?

—नहीं देवता, वह कहती है एक पिटारा सुख देकर दुःख भरा यह पिटारा लो।

—बस यह कौन-सी बड़ी बात है। चलो, उसे एक पिटारा सुख दे आएं। उदर का गर्भ में रखा है दुःख को न होगा तो कलेजे में रख लूंगा।

शिव गए। आकर सामने खड़े हुए तो उस औरत का रूप देखकर पलकें ही न गिरीं। अवाक् अपने को जरा संभाल कर बोले, अपना दुःख का पिटारा दो मुझे।

—पहले सुख का पिटारा तो दो देवता!

—अजी ओ कुबेर, लाओ एक पिटारा तो लाओ।

पिटारे को हाथ म लेकर शिव बोले, मेरे वरदान से यह पिटारा तुम्हारे मन के सुख से भर जाए !

औरत ने सुख का पिटारा लिया। शिव की जय-जयकार की। कहा अरे ओ शिव के दूतगण कहा हो। शिव के वचन को सत्य करा के लिए आओ। मेरा पति भाग गया है। उसे बाधकर मेरे घर पहुचा दो। पति के बिना स्त्री को मन का सुख कहा ?

वह स्त्री हुनहुनाती हुई बढ चली। इधर बेल सेमल बरगद के पेडो से शिव की सेना उतरी सबके आगे स्वय नदी—रस्सा लेकर वे सब शिव को बाधने लगे।

अरे ! यह क्या ? अबे ऐ ! करता क्या है ? शिव रुज होकर गरजने लगे।

नदी ने कहा चीख-पुकार न करिए देवता ! हाठ दबाए चुप रहिए। खुद ही तो वरदान दिया है और फिर आपने ही बाधने का हुकुम दिया है। अब चीखने चिल्लाने से क्या होगा ! ऐ भूतो बाधो, पगले बाबा को, खूब कसकर बाधो। देखना खोलकर भाग न जाए। तोड न डालें !

शिव ने गरजकर कहा नदी !

नदी ने हाथ जोडकर कहा आपसे आपका वरदान आपका वचन बडा है प्रभो ! हम क्या करें ! पहचान नहीं रहे हैं इन्ह ये मा दुर्गा जो है !

शिव ने एक लबा निश्वास छोडा तो तो चल। न न भया तनिक रुक जा। यह कहकर पुकारा दुर्गा मैं हार गया, हार मानता हू। तुम्हे पहचान नही पाया। आज सवरे नशा जरा जोर का हो गया था। आखा स देख ही नही पा रहा था। खर ! जब हार हो गई, तो मैं आप ही चलूगा। लेकिन मेरे बडे शौक से बनवाए इस भुवनपुर की कोई व्यवस्था कर जाओ। आखिर यह तुम्हारे पति की ही कीर्ति है—बरबाद होने से तुम्हारी ही बदनामी होगी।

दुर्गा ने हसकर कहा, अच्छा। मैं यह वर देती हू कि तुम्हारा थोड़ा-सा भरा यहा रहेगा भुवनेश्वर शिव होकर, मैं गधेश्वरी होकर रहूगी और यह हाट रहेगी। इस हाट मे अनबिकी कोई चीज नहीं रहगी। सुख की कीमत पर यहा दुख बिकेगा। दुख की कीमत पर सुख। लेकिन हा मेरे जैसी निष्ठा होनी चाहिए मन की। विश्वास होना चाहिए। दोमना होने से, दें कि न दें, यह दुविधा मन मे होने से नही होगा। दुख का बोझा बचने को आने पर दूना होगा। सुख के बदले दुख नहीं मिलेगा, सुख को बढाकर घर लौटेंगे लोग। हुए खुश ? शिव ने कहा, हा। खुश।

तो फिर चलो।

चलो। बधन खोलने को कह दो।

दुर्गा बोली बधन खुलेगा, लेकिन नदी के कधे पर चढकर चलना होगा। वरना मुझे तो तुम्हारी हरकत का पता है, जाने किस मछुआ टोली म कौन-सी औरत को देखकर भाग पडोगे। याकि डोमटोली मे गाजे की गध से जा जमोगे।

सो शिव नन्दी के कधे पर सवार हुए। साड को सिंह की दुम म बाध दिया गया। दुर्गा सिंह पर सवार हो काशी लौटीं।

यहा लोगो मे यही कथा प्रचलित है। बगाल मे शिव-दुर्गा की बहुतेरी कहानिया हैं। यह भी उनमे-से एक है। बगाल में शिव खेती करते हैं। शख की चूडिया के लिए रुष्ट होकर दुर्गा नैहर चली जाती हैं। शिव के चरित्र को परखने के लिए दुर्गा मछेरिन बनती हैं मछली पकडती हैं। उनके रूप पर रीझ कर शिव मछुआटोली के चक्कर काटते हैं कीचड-पानी घाटकर मछुओ के साथ साथ मछली पकडते हैं। भुवनपुर म भुवनेश्वर भैरव आज भी अलक्षित रहकर खरीद बिक्री पर निगरानी रखते हैं। गधेश्वरी पूजा के समय मेला लगता है, उस समय शिव पूर्ण रूप म भुवनेश्वर म अधिष्ठित होते हैं।

आजकल आजादी के बाद सन् चौवन-पचपन साल म सेटलमट हुआ—उसमे सरकारी छानबीन से यह सब गप्प-गालिया खुली। यह

सब किसी गजेडी पुरोहित आदि की करतूत है—भुवनपुर के पीतम सिहोड़ के जंगल से घिरे उस टीले पर पत्थर गाडकर मानिया की भीड़ जमाने के लिए यह कहानी गढ़ी गई है। भुवनपुर के पास का गांव गधगषिके का गांव है। मुसलमानों के प्रमल में फौजदार का कोप भाजन होकर कटवा अंचल से पलान दे यहां सगे सबंधियों के बीच भाग आए थे। कारोबार-कुशल उन नवीन दे ने पत्थाय मगन हुए अपने मामा से बिना कोई वर विरोध किए दो कोस दूर की इस धरती का बंदोबस्त लिया था। उस समय पांच कोस लंबा लाल माटी के इस पथरीले मैदान का नाम था तीन भुवन का मैदान। इसके ठीक बीचोबीच उस जमाने की सड़क चली गई है। सड़क के पास उत्तर की ओर तीन कोस पर और दक्खिन की ओर दो कोस पर दो गांव हैं। बरगद बेल पीपल का यह जंगल उस समय खूनी डाकुओं का अड्डा था। इस पांच कोस की दूरी में कोई अच्छा तालाब नहीं था। बंदोबस्त लेने के बाद नवीन दे ने यहां एक छोटा सा पोखरा खुदवाया था और डाकू चोर छिछोरों से समझौता करके उन्हें थोड़ी थोड़ी जमीन देकर रमन बनाकर बसाया था। उसके बाद यहां एक चट्टी कायम की थी। ये डाकू लोग ही यहां के पहरेदार थे। चट्टी से धीरे धीरे इसे धान चावल का आढ़त बनाया। फिर उस छोटे से पोखरे को बड़ा जलाशय बनवाया। बड़ा ही निर्मल पानी निकला। नीचे से सोता फूटा था। गढ़ इलाके में कुछ हाथ माटी खोदते ही जल पानी निकल आता है सौभाग्य से दे को वैसा ही सोता मिल गया था। धीरे धीरे वह प्रान्त जम गया। दे ने मकान बनवाया। कुछ अपने सग आ बसे आसपास। उनके गुरु भी वहीं आ बसे। दे ने उनके लिए मकान बनवा दिया। कुछ जगह-जमीन भी दी। यही गुरु साम विद्वान उस टीले पर बैठा करते थे। रात के सन्नाटे में कुछ जप-तप भी करते। अचानक एक दिन उन्होंने सपना देखा। वही सपना। और एक दिन सचमुच ही माटी ठेलकर शिवजी निकल आए। देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। गुरु ने कहा अगली पूर्णिमा वैशाखी पूर्णिमा

का तुम गधेश्वरी की पूजा करो नवीन। लोगों से कहा, इस सरोवर के एक हजार आठ घड़ा पानी से शिव को स्नान कराना होगा।

सरोवर का नाम पड़ा भुवनदीघी। तीन भुवन के मदान का नाम हुआ भुवनपुर। बाबा का नाम भुवनेश्वर। लोगों की भीड़भाड़ होने से ही बाजार-हाट लग जाता है। आप ही बाजार लगा। खरीद बिक्री खूब हुई। इसी प्रवाद से तालाब के बांध पर हाट की नींव पड़ी। शिव के वचन को पूरा करने के लिए नवीन दे हाट की सारी अनबिकी चीजों को खरीद लिया करते थे। उन चीजों को दूसरे दिन गाड़ी पर लादकर पांच कोस दूर की गोपालगंज हाट को भेज दिया करते। नुकसान भी होता तो उसे व्यापारी नवीन दे झेल जाते। सोम और शुक्र शिव का दिन है। उन्हीं दिनों बाबा भुवनेश्वर की हाट लगती। शिवजी की पूजा भी होती, भेंट-पूजा भी चढ़ती। हाट से वसूली भी की जाती। भेंट पूजा और हाट की वसूली का दो हिस्सा होता। भेंट-पूजा का तीन हिस्सा गुरु का, एक हिस्सा दे बाबू का, और वसूली का तीन हिस्सा दे बाबू का एक हिस्सा गुरु का होता। आगे चलकर सन १९०३ में इसके लिए गुरु शिष्य में मुकदमे-बाजी हुई। शिष्यों ने ठाकुर के टीले के प्रवेश द्वार पर एक दान पेटी रख दी थी और लोगों को उसीमें पूजा प्रणामी डालने को कहा था उन्हीं पैसों से तालाब का सस्कार पक्के का घाट, टीले पर जाने की सीढ़ी और ऊपर के चौतरे पर संगमरमर लगाया जाएगा। उस मुकदमे में ये बातें सामने आईं। मामले का सुलहनामा दोनों ही तरफ है। सेटलमेंट के समय उस सुलहनामे की नत्थियां निकलीं। उससे और भी अजीब अजीब बातें जानने में आईं। हाट की वसूली में शिष्यों ने गुरु के हिस्से पर एतराज किया था। भुवनेश्वर के पंडे उसका हिस्सा क्या पाएंगे? हाट की जमीन कुछ देवोत्तर नहीं है। वह दे वंश की अपनी खास जायदाद है।

गुरु वंश के वृद्ध त्रिपुराचरण मिश्र ने इसके जवाब में कहा था हाट शिव के कारण चलती है। शिव का जो दिन है सोमवार उसी दिन हाट

लगती है। जो लोग शिव की पूजा करने आते हैं, वही लेते-देते हैं। और फिर व्यवसाय में हिस्सेदार के रूप में यह मिश्र वश शुरू से परिश्रम करता आया है। इसके नजीर म यह बताया कि कभी यहां मिथिला की नाईं शिवरात्रि के समय ब्याह-सबध पक्का करने की प्रथा चलाने की कोशिश की थी उन्होंने। वे स्वय मथिल ब्राह्मण हैं। मिथिला म ऐसा मेला लगता है जहा वर और कन्या-पक्ष के लोग जाते हैं देवता के दर्शन करते हैं और बेटा-बेटी के ब्याह का सबध तय करते हैं। यह मेला मिथिला म आज भी लगता है। शिव के वरदान से भुवनपुर मे सुख-दुख की खरीद बेचो होती है लिहाजा बेटी का ब्याह दुख और बेटे का ब्याह सुख है। शिव को साक्षी मानकर इस विनिमय से विवाह आनद का होगा—इसका भरोसा किया था। रामकेलि के मेले म वष्णव लोग वष्णवी खोजते हैं वष्णवी वैष्णव। माला बदल होती है। यहा भी गुरु न बता ही कुछ करने की सलाह दी थी। शिष्यों ने मानी भी थी। विवाह पीछे सवा पाच आना शिव की प्रणामी और चार आना हाट का कर लेने से काफी आमदनी होती। कोशिश की गई थी। कुछ दिन चला भी था। उसके बाद उठ गया। १८८०८१ की बात है। निपुराचरण उस समय युवक थे। उन्हें याद है। दे वश के बूढ़े पुरनिए शोभाराम दे हैं वे बताए। यह रिवाज तो उठ गया पर अभी भी ब्याह के समय लोग यहा से बाबाथान का सिंदूर और हाट से सूप आदि ले जाते हैं। इससे ब्याह शायद शुभ होता है।

मामले मे आपसी सुलह हुई। उस सुलह के मुताबिक शिव की आमदनी गुरु की और हाट की आय शिष्य की होती है। हा तरकारी की जो वसूली होती है उसमे गुरु का हिस्सा होता है। एक टोकरी तरकारी वसूल करके उसे शिष्य ही भेज दिया करते। थोडी बहुत तरकारी शिवजी पर भी चढती। कदे की डठल ओता करणी। नीम का मौसम हो न हो नीम। ज्यादा चढौवा इसीका चढता। कभी कभी मिठाइ दूध और खुशबूदार अरवा चावल शहद।

यहां अनेक प्रकार की बातें यहां के बारे में प्रचलित हैं—

भुवनपुर की हाट जाओ,
माटी दवर दमनी लाओ।
अनपच रोग सहज ही जाता,
दुख के बदले सुख है आता।

बड़ा लंबा-सा है। कंदे की डंठर, कलमी शाक—जो भी वहां में जाइए, बिक जाएगा। देसी दवा में साग, खटाई, गुड़ मुरमुरा—इनकी मनाही होती है। मगर बाबाधाम की दवा खाने से साग—यहीं की हाट का साग—खाना ही पड़ता है। यहां से ज़रा ही दूर पर मयूराक्षी नदी से बनी एक झील-सी है। उसके चारों तरफ तरह-तरह का साग बेशुमार होता है। वह जगह दे बाबुओं की है और साग खाने का नियम सेखावत मिश्र परिवार का चलाया हुआ है।

ये छोटी-छोटी बातें हुईं। बड़ी बात है यहां का गंज। इस हाट के पास ही सड़क के दोनों तरफ एक समय बहुत बड़ा गंज जम गया था। छोटा तो अभी भी नहीं है पर टूटन शुरू हो गई है। यहां के शिव और हाट के महातम से तथा इस सुंदर जलाशय के कारण धान, चावल, मूंग, मसूर मिर्च, उड़द लदी गाड़ियां यहां जमा होती थीं। भुवनपुर से दो कोस के फासले पर गोपालपुर है। गंधवणिकों की प्रधानता है वहां, जहां आकर नवीन दे ने शुरू में पनाह ली थी, पुराने समय में आढ़तदारी का यही बड़ा गंज था। उसके परली तरफ तीन कोस पर एक छोटा-सा बाज़ार था। इन्हीं दोनों की चलती को मंद करके भुवनपुर की हाट और गंज का सितारा बुलंद हुआ था। चालीसेक साल पहले भुवनपुर से अनेक कोस दूर पर एक लाइट रेलवे की सहूलियत आई। गोपालपुर से कोस भर की दूरी पर तब से भुवनपुर का वैसा नुकसान तो नहीं हुआ पर मंदी-सी आई। गोपालपुर के व्यवसायियों ने स्टेशन के करीब एक गंज बसाने की कोशिश की। कुछ-कुछ कामयाब भी हुए। सोलह साल पहले मुल्क आज़ाद हुआ। उसके दस साल के बाद फिर पासा पलटा। इस सड़क को सरकार ने

कोलतार का बनवा दिया। बस लारी ट्रकें दौडने लगीं। एक मारवाडी ने चावल की मिल खोल दी। फिर सन साठ में अनोखी ही बात हो गई। रास्ते के दोनों किनारे कतार से लोहे के खभे खडे किए गए। एक कतार हुई टेलीग्राफ के तारों के खभो की फिर दूसरी कतार उन खभो पर तीन झूलते हुए तार दूर तक दौड गए। खभो के निचले हिस्से को कटील तारों से घेर दिया गया, उनपर लाल रंग से आदमी की खोपडी के बोर्ड टाग दिए गए। उन पर लिखा रहा—सावधान! कल्पना से परे की बात। बिजली की बत्तियां जलेंगी!

भुवनपुर के गोले के इलाके में बिजली के लटटू जल उठे। गोपालपुर में भी जले स्टेशन के इलाके में भी जले। बिजली की यह लाइन माइथन से जा रही है। दुर्गापुर होकर यहा-वहा यो कहिए सारे देश में दौड जाएगी। अभी बनाव बडे-बडे शहरों में ही यह जगर मगर पहुचा है छोटे छोटे गावो तक नहीं पहुच पाया। आगे चलकर पहुचेगा। भुवनपुर की हाट के बीच में भी एक खभे के माथे पर एक लटटू लटक गया।

हाट तीन बजे दिन से लगती। टूटने में साफ हो जाती। या कहिए साफ होने में ही बढाना पड जाता। सोमवार की हाट अवश्य रोशनी जलाकर भी चलती है। कोई लालटेन जलाता कोई दो मुही कुप्पी कोई दजक। आंधी-पानी में मुसीबत होती। वह मुसीबत बिजली की वजह से जाती रही।

इसमें सबसे ज्यादा खुशी टिक्ली की मा के परिवार को हुई। और हुई परकन्ना पुजारिया के बाप को और शीवा जमादार को। सबसे रंजिश हुई दमना रामाल को। कृष्ण रामाल गाजा पीता है। दपनी होता है।

सकेगी। टिक्ली को चुनरिया की तरह बाप का डर नही है। उसकी मा सब कुछ जानती है। उसे सबसे ज्यादा खुशी हुई। रात का गाहक आने पर वह दूर से ही देख लेगी और कही चुनरिया उसके गाहक को बहका ले तो उससे झगड सकेगी।

हाट म जैसे कूडा-कचरा एक ओर ढेर होकर पडा रहता है, ये भी हाट म ही जमी पडी हैं। यहीं इनकी पदाइश हुई, यहीं मौत होगी। इन लोगो म शादी-ब्याह की बसी कोई कठिन पाबदी नहीं है। एक दिन एकाएक टिक्ली की माग म सिंदूर दमक उठा। किसने दिया—किसीने इसकी खोज-खबर नही ली।

भुवनपुर की इस हाट म अचानक एक दिन रूपवती मालती आ पहुची। भरी जवानी। उन्नीस-बीस साल की क्वारी लडकी। अजीब लडकी। बदन पर सादी कमीज, टकटक रगीन कोर की साडी, कमर पर एक टोकरी। एक अधबूढी औरत के सिर पर दूसरी एक टोकरी रखकर वह हाट के अदर पठी और ताती के छज्ज के सामने खडी होकर बोली घरनीदास की दुकान कौन-सी है बता सकते है ? सुरभि गाव का घरनी दास—तात के कपडे बेचन हैं। हाट मे उस समय भीड भाड कम थी। बेचनेवालो का आना शुरू ही हुआ था। सौदा-पाती खरीदनेवालो की भीड नहीं आई थी। फिर भी जो थोडे से लोग आए थे, सबका मुह उस छज्जे की तरफ घूम गया। एक छोकरा—कमर पर खडी एक लाठी, उस पर बास-सा बनाता हुआ आडा आडा पडा एक डडा, उसपर झूलता हुआ रग बिरगा फीता, कार, बाल म खासने के काटे, हेयर क्लिप। हाक लगाकर बेचा करता है—

दो-दो आना, फीता, कार
लवाइ मे हाथ चार।
बाल बाधो, खुलेगा ना
चल देगा तो मिलेगा ना।

दामाद को बाधा, नहीं टूटने का। दामाद बाधनेकी कार चाल बाघने

का फीता ! दो दो आना ! दो दो आना ! वह छोकरा चिल्ला पड़ा—कुमकुम टीका महावर !

उसका बोलना बेकार नही गया। उस युवती ने आग उगलनेवाली नजरो से एक बार उसे देखकर मुह फेर लिया।

तात के कपड़ों का वही दुकानदार धरनीदास था। पुरनिया आदमी। मालती की ओर दुविधा की नजर से ताकते हुए बोला—धरनीदास से तुम्हे क्या काम है बिटिया ? धरनीदास से ?

'आप ही है ? मैं पहचान गई थी। फिर भी पूछा। आपने मुझे पहचाना नही ? मेरे बाप

—तुम श्रीमनदास की बेटी हो ?

—जी हा। मैं मालती।

—तुम ? तुम धरनीदास माना बोल नही पा रहा था।

मालती ने कहा, सात दिन हुए, छूटकर आई हू ! धरनीदास ने कहा मैं तुम्हारे बाप के बराबर हू बिटिया कुछ ख्याल न करना जेलखाने मे कुछ बुरी तो नही रही ! बड़ी खूबसूरत हो गई हो !

मालती हसी। बोली जी। घर से वहा कही अच्छी तरह थी। घर रही होती ता दाईगिरी करनी होती या फिर ससुराल जाकर लौंडी-बादी बनती।

—तुम्हे तो चार साल की सजा हुई थी ?

—हा लेकिन साढे तीन ही साल म छूट गई।

वह छोरा फिर स हाक लगा उठा—कुमकुम, महावर स्नो, साबुन पावडर—सस्ता लगा दिया, सस्ता ! आलूवाला भी आदमी पुरनिया है। वह उठकर मालतो को देखने गया था। लौटकर अपनी चटाई पर बठते हुए बोला अरे ओ रे रसिया छोर वह कोई मासान छोकरी नहा है। खूनी है खूनी। जरा सोच-समझकर सस्ते म बेचने जाना। हा।

खूनी ! वह छोकरा चौंक उठा।

श्रीमत बरागी माथे पर टोकरी उठाए मनिहारी सामान बेचने के लिए इस हाट में आया करता था। और और दिन घूम घूमकर इस-उस गांव में फेरी करता था। मनिहारी का मतलब सस्ता तेल फुलेल, सिंदूर माला, फीता, कार, हेयर क्लिप, हेयर पिन, ताला-कुंजी, पेंसिल, रबर, कापियां, चीनी मिट्टी के खिलौने स्लेट, स्लेट पेंसिल, पहाड़े की किताब, पहली किताब कपड़े धोने का साबुन, बदन में लगाने का साबुन, खूब सस्ता सेंट। यही सब, इनके सिवाय श्रीमत के पास मछली शिकार का सरंजाम होता। दो चार ह्विल किस्म किस्म के कांटे मूंग का धागा, सूता सहित लग्गी। सूता श्रीमत के खुद के हाथ का बनाया होता। और फिर उसके दोस्त गोरख लुहार का बनाया कांटा। श्रीमत उसे स्पेशल कांटा कहता। श्रीमत अपने सूत में आध मन का एक बटखरा झुलाए रखता था। लग्गी के कांटे सूत से मयूराक्षी की झील में दो-दो मगर पकड़े गए थे। एक का चमड़ा श्रीमत के अपने ही घर में था। नमक लगाकर चमड़े को सुखा लिया था, फिर उसके अन्दर पुआल भरकर एक टेढ़ा मेढ़ा मगर बनाकर उसने अपने घर की दीवाल में लटका दिया था। खुद श्रीमत मछली का पक्का शिकारी था। जिस दिन मनिहारी की फेरी में नहीं निकलता, उस दिन वह झील में मछली

मारने जाता। और रात को गाव के सुखी गृहस्थो के पोखर से चुराकर मछली मारता। उसका वह मछली मारना गजब का होता। जिस तालाब म खासी अच्छी मछलिया होती उसम लगातार सात आठ दिन तक छिप छिपाकर मसाला डाल आया करता। उसके बाद एक दिन बास की एक करची के बीचो-बीच कपडे म काफी चारा बाधकर उसे पानी म गाड आता। करची का थोडा-सा हिस्सा पानी के ऊपर होता। उसीपर घोघे की तीन चार खोलिया सूत म बाध देता। लगातार आठ दिनो तक खाद्य की खुशबू पाकर वहा मछलिया बहुतसी चक्कर काटा करती। करची म बधी पोटली पर थुथने मारतीं जिसस ऊपर बधी घोघे की खोलिया से खुट-खुट खुट-खुट आवाज होती रहती। और तब एक दिन श्रीमत रणबाकुरा सा वहा जाता। रात म एक छोटी मोटी छिप मे लम्बी का मजबूत धागा डालकर उसम तीन चार काटे गूथ देता और उन काटो को करची की पोटली म धागे से बाध देता। खुद कमर भर पानी म खडे होकर छिप को धोती के फेंटे का सहारा देकर दोनो हाथो स कसकर पकडे रहता। ज्यादा देर नही लगती। लुभाइ मछलिया काटे लगाने के वक्त हट तो जातीं पर आदमी के हटते ही फौरन आकर पोटली पर मुह मारना शुरू कर देतीं। घोघे की खोलिया खुट-खुट करती। शिकारी की करामात यही पर है। बाघ का शिकारी जस अधेरे मचान पर व बठे मरी की हड्डी चबाने की आवाज से ही ताड जाता है कि यह आवाज गीदड की है यह भेडिये की यह धारीदार बडे बाघ की—मछली का शिकारी श्रीमत ठीक वसे ही आवाज स ही समझ लेता कि यह मछली ढाई सेर की यह पाच सेर की यह दस सेर की है, यह कतला यह रोहू या मिरकी है। वह घात लगाए खडा रहता जसे ही कोई पद्रह सेर की राहू की ठोकर से खटाखट-खटाखट की आवाज होती कि वह दोनो हाथो से जोरो का झटका मारकर हाथो को अपने पीछे की ओर तक खींच लेता।

श्रीमन दम्न हो साहसी म था। उसके उस भटके से पद्दह सेर की रोहू नाव म गुमवर गिर के ऊपर से घूम म उठकर एकबारगी पीछ सूखी जमीन पर जा रहती। यह कोई आसान काम नहीं। यह माटी पर रस्से-सड़ पुसार वाघ व निकार के समान है—वाघ का दसवी मुदान के साथ ही पछाड डालन जसा कठिन काम है। कमर म बधी हुई छिप के भटके से मछली यदि सिर के पीछे जाकर गिर गई, तो निकारी की जीन जानिए, वही मछली पीछे जाकर नहीं गिरी, वह पानी म ही रह गई या जरा-सा उठकर फिर पानी म ही गिर गई, तो उसक धक्के से निकारी का औंधे मुह पानी मे गिर जाना पडेगा और उतनी बडी मछली की पानी म उतनी ताकत की लच से डूब मरने की नौबत आ जाएगी। लेकिन मरते कम ही हैं। ऐसे म जमीन पर पडे होकर बाघ के निकार म इसका बडा फर है। क्योंकि बाघ के निकार म ऐसे निकारी बहुत मरते हैं।

श्रीमन ऐसे निकार म कुगल था और बदन से भी वास्तव मे मरदाना था। और महज मरदाना ही नहीं, खूबसूरत भी था।

मौर पर गुजर-बसर चलानेवाले गापालपुर के बैरागी का यह लडका छुटपन से द बाबू के यहा खानसामागिरी म भर्ती हुआ था। बाबू के यहा और जगतपुर के बाजार म नई बयार बही। पहले महायुद्ध के बाद, १६२६ २७ साल। एक ओर वदमातरम दूसरी ओर मोटर गाडी का आगमन, एक ओर विदेनों म लोगा के आकाग म उडने की खबर, और दूसरी ओर जात पात उठ जान के नारे से देग म सब कुछ उलट-पुलट, बिखर बिखर गया-सा हाल। द बाबुओं न सन् १६२४ म मोटर बस खरीदकर सर्विस चलाई थी। बस का नाम था— जय गणेश्वरी। द परिवार क लडका ने जगतपुर म क्लब खोला था। उन लोगो के बराती दवाखान म जूना, सिर टोप क ढग का कपडा तथा चश्मा वाली नस आई थी।

श्रीमन का बाप मलखल्ला, मूछ-दाढ़ी-बालवाला अवधूत बैरागी

था। करताल बजाकर टहल लगाया करता। कम उम्रवाले छोटे छोकरो न उसे अवधूत कहना शुरू कर दिया था। इन सब कारणो से श्रीमन बाप दादो की लीक छोडकर और ही तरह का हो गया। बाबुओ का मछली के शिकार का शौक था। उसन सूना बनाना वही सीखा था। वैरागी का बेटा होते हुए भी उसने बोतल से चुस्की लेनी भी सीख ली थी। नई जवानी मे भुवनपुर के बाबुओ का खानसामा श्रीमत अचानक एक दिन मालती का मा विमला के प्रेम म पागल होकर उसके साथ भाग गया। सन २७ २८ की बात। विमला थान विधवा और रूपवती थी। चरित्र उसका बुरा ही था। उसके बाप का घर भुवनपुर से डेढ कोस दूर था उस झील के किनारे। ससुराल म उसकी अनेक तरह की बदनामी ही नही हुई थी और भी ज्यादा कुछ हुआ था। छिछोरे रात को जबरदस्ती उसे उठा ले भागे थे और उसे बहार म फेंककर चले गए थे। सो ससुराल वाले उसे उसके बाप के घर छोड गए थे। मा बाप बचारे क्या कर व उसे निकाल नही सके। वे उसे बाबा भुवनेश्वर के सेवायत मिश्रजी की शरण मे रख गए कि दो मुट्ठी खान को दिया कीजिएगा। यह बाबाथान को बुहारा करेगी बतन बासन माजा करगी। उस समय तक भी मा बाप को यह विश्वास था कि बाबाथान की सेवा म लग रहने से उसका परकाल बनगा और जाग्रत देवता बाबा भुवनेश्वर की परिचारिका के बदन पर हाथ डालने की किसीको हिम्मत नही होगी। लेकिन कलयुग म खास करके यूरोप की पहली लडाई के बाद समुद्र मथन के विष की नाइ युद्ध के विष से घोर हो बाबा सो भी गए थ। पेट्रोल और बारूद का धुआ गस तोप बदूक की आवाज से बचन के लिए नाक-कान म रूई डालकर सोने के सिवाय उपाय नही था। लिहाजा बाबा की ऐसी एक खूबसूरत और सदा प्रसन्न दासी की ओर बेपरवा ही बहुतेरे हाथ बढ़ आए।

धरनीदास भी उस समय जवान था। तात के कपडे बेचता था।

विमला जिस दिन पहली बार कमर पर टोकरी लिए हाट की वसूली ले जाने के लिए मालती जैसी ही यहां आई थी, उस दिन की बात उसे याद है। बाबाधाम की आखिरी सीढ़ी पर बगल में टोकरी लिए जरा बांकी अदा से जैसे ही विमला खड़ी हुई थी, वैसे ही हाट के सारे लोगों की नजर बाबाधाम की ओर फिर गई थी। गो कि इधर सड़क होने की वजह से हाट का मुंह—दस पंद्रह साल से भी ज्यादा पहले बाबाधाम को पीछे की ओर रखते हुए सड़क की तरफ को घूम गया है। मिसिर जी के पीछे-पीछे टोकरी लिए विमला जब उसकी दुकान के सामने खड़ी हो गई थी, वसूली के एक पैसे के लिए, तो मिसिर जी को पैसा देकर धरनी आज के इस बार पीछे वाले छोर जैसा ही औचक बोल उठा था—मनमोहिनी लाल पमोला, पक्का रंग—ले ला! अगल बगल के लोग खिलखिला कर हंस पड़े थे। विमला गरदन घुमाकर मुसकराकर कटाक्ष मारती हुई बोल उठी थी—फतिंगा खाने वाले गिरगिट का शौक तो जरा देखो, मजा मार कर खाएगा! हाट की उस जगह हंसी की बाढ़-सी आ गई थी। बाबा भुवनेश्वर ने उस दिन धरनी की इज्जत रख ली थी। एकाएक सबकी नजर पड़ी कि श्रीमत का शौकीन मालिक है बाबू चुन्नजदार धोती, कुरता पहने, छाता लगाए बाबाधाम की सीढ़ी पर खड़े हो एकटक विमला को देख रहे हैं। धरनी तुरन्त बोल उठा, पेड़ की फुनगी पर बाज बैठा है! गई बेचारी मना! मालिक के पीछे श्रीमत था। उसके बदन पर बाबूवाली बढ़िया गंजी थी पुरानी, पहनावे में शौकीन कोर की धोती! वह भी विमला की तरफ ताक रहा था।

इस घटना के महीने भर बाद ही विमला और श्रीमत कहीं चपत हो गए। भागे तो भागे, दे बाबू की गमेश्वरी बस से ही भागे! वरना बाबा की दासी को लेकर यों भाग जाना मुमकिन न था दो में से एक का पैर जाता, एक की जान जाती। रास्ते में ही रह जाते।

तीन साल के बाद श्रीमत लौटा, जब बाबू गुजर गए। उसके साथ

माग मे सिंदूर भरे विमला थी और थी मनिहारी की छोटी-सी एक दुकान।

कुछ दिनो तक तो श्रीमत दुकान लेकर हाट नही आया। फिर आने लगा। उसने विज्ञापन भी किया था। धागे से टाटका दिया था आध मन का एक बटखरा और उसके साथ सोल की बहुत बडी-सी मछली। धरनीदास से श्रीमत की पहले से ही पटती थी। उसने धरनी से कहा भई, अपने चलिए के एक ओर थोडी-सी जगह दोगे मुझे! दुकान खोल दू!

धरनी ने जगह उसे दे दी। इसी एहसान से श्रीमत धरनी को अपने घर ले गया। उसे विमला के हाथ का ताड बडा और दुकान की मिठाई खिलाई। विमला ने जरा मुसकराकर उसे पुरस्कृत किया था—श्रीमत के सामने ही।

बीच-बीच मे श्रीमत उसे मछली भी खिलाता था। मछली शिकार के मामले मे वह ज्यादातर चालाकी का परदा डाले रहता। पोखरे मे घाट वह रात को चराया करता। कच्ची गाडकर चारे की पोटली रात को बाधा करता जब वह भील से मछली मारकर घर को लौटता। और मछली भी मारा करता तो भील स घर लौटने की राह मे ही। मछली मारकर गमछे म लपेटकर ले आता। उसपर किसीको सदेह करने की गुजाइश नही थी। कोई करता भी नही था सदेह। झील म इसके पहले मगर मार कर सब पर उसने अपने जादू का रग चढा रखा था।

मछली मारकर वह घर म लाता, मित्रा मे बाटता बेचा भी करता। रोजगार भी अच्छा ही चल रहा था। दूर दूर से आकर लोग उससे काटा-सूता खरीदकर ले जाया करते थे। लेकिन जो श्रीमत अवधूत वरागी के बेटे से बाबू का खास खानसामा बना उसके बाद उस खानसामागिरी को लात मारकर मालिक के ही शिकार को दबोचकर चल दिया और फिर लौटा (सो बाबू के मरने के बाद ही सही), वह श्रीमत कुछ सहज जीव नहीं। धरनीदास कहता है—सहज जीव कृष्ण

का जीव कृष्ण की ही कृपा से जीता है। श्रीमत किसीकी दया पर नहीं जीता। वह किसीकी काट नहीं खाता, पहले ही किसीको काट खाता है। सचमुच ही श्रीमत विमला का मना ले आकर जिस साहस और जिस कलेजे के जोर से सिर ऊंचा किए फिर लौट आया, उसके सर्गनि ग्खले हुए जो सब वाक्य वह कहता, उन्हें हजम कर सकना खरीदारों के लिए कठिन था।

उसका सूता लेकर खींच-तान करते हुए कोई अगर ज्यादा निराज-परख करता, तो काट को यों में बांधकर वह कह उठता, लो, अब जरा हो तो करा मेरे मोना!

—हां बस?

—जी। गलफड़े में कांटा लगा देता हूं, खींचकर तोड़ने हुए निकल जाओ, आजमा ही लो कि टूटता है या नहीं! इससे अच्छी परख और क्या है! या फिर छोड़ दो और अपनी राह लगो।

एक दिन की बात है, उसके पुराने मालिक का एक मुसाहब मित्र शहर में आम माल्गुजारी या दलाल का काम करता है, वह कचहरी के काम से दे बाबू के यहां आया था। हाट गया तो मित्र के पुराने खानसामा श्रीमत को देखकर स्नेह या करुणा या ऐसा ही कुछ उमड़ आया था। उसने अवाक होकर कहा, अरे! श्रीमत! हैं!

श्रीमत ने जवाब नहीं दिया।

उसने फिर कहा, अब ऐ सिरीमता।

श्रीमत ने सर उठाया और गंभीरता से कहा, क्या बे, क्या कह रहा है?

—अरे!

—अरे क्या? अरे? क्या, मैं बे हो गया। नौकर हूं तेरे बाप का? अबे?

नाराज होकर वह जनाब बाबुओं के यहां शिकायत करने गए थे। श्रीमत उन दिनों के बाबूस-दफ्तर में गया था। लेकिन एक रोज व-

बेकायदे पड गया। दारोगा की नाक पर अचानक एक घूसा जमा बैठा। थाना पहले गोपालपुर म था। बाद मे भुवनपुर उठ आया था। दारोगा था—शिवेन चटर्जी। परले सिरे का लपट और घूसखोर। उसने विमला पर नजर गडाई थी। श्रीमत के पुराने मालिक के चचेरे भाई को उसने इसमे अपना सगी बनाया था। विमला पहले चाहे जो भी रही हो हो श्रीमत के साथ वह सती स्त्री थी। विमला ने श्रीमत से यह बात कह दी थी। दारोगा ने श्रीमत पर चोरी का माल रखने का इलजाम लगाया और उसके घर की तलाशी के लिए आया था। खानातलाशी म उसने उसके घर की चीजें तहस नहस कर दी। चोरी का कोई माल लेकिन नही मिला। श्रीमत अपने को और नही सभाल सका उसने दारोगा की नाक पर मार दिया एक घूसा। दारोगा की नाक टूटी नो नहीं मगर बेतरह लहू बहा और कई दिनो तक नाक सूजी हुई रही। द बाबू के चचेरे भाई के गाल पर जोर का एक चाटा जमाया और दीवार फादकर रफूचक्कर हो गया। हुआ तो मगर फरार कब तक रहा जा सकता है ? पकडा गया। ६ महीने की सजा भी हुई। लेकिन हा शिवेन दारोगा की भी बदली हो गई और बाबू के चचेरे भाई भी होश मे आए। जल जाते वक्त श्रीमत कहता गया कोई परवा नही विमल ! जेल की सजा हुई है कोई सूली फासी नही ! छह ही महीने बाद लौट आऊगा। और लौट कर अगर पता चला कि किसीने तुझ पर कनखी भी चलाई है तो उस कमबख्त की आखें निकाल लूगा। इसके लिए फासी भी हो तो परवा नही।

एसा था श्रीमत। और उसी श्रीमत की बेटी है मालती। बाप उसे बचपन म माला कहकर पुकारता था।

मालती ने खून किया था। चार साल की सजा काटी। वह भी श्रीमत के मइती मारने के ही कारण।

पहली बार जब श्रीमत जल म लौटा, तो कुछ नम पड गया था। अपने मिजाज का उसने जूता पहन पाव की तरह और कुरता-कपडा पहने बदन की तरह सयम शृखला से साफ और भला कर लिया था। उसके

बाद पदा हुई यह लडकी। श्रीमत और भी हिसाबी दुनियादार बना। बच्ची को तीनेक साल की छोडकर विमला चल बसी। श्रीमत ने काफी दिना तक दूसरी शादी नहीं की। बच्ची को साथ ही साथ लिए घूमा करता। हाट आता तो बिटिया को लिए ही आता। श्रीमत दुकानदारी म मशगूल रहता नन्ही-सी बच्ची हाट मे घूमती फिरती। न्य उसे उसी वक्त म था। कभी बाप के बगल म बठी तसवीर वाली कोई किताब पलटती रहती कि कोई खिलौना लिए खेला करती। श्रीमत भील म मछली मारने जाता, बच्ची साथ जाती। चारा डालती, काटे म चारा गूदना। बारह साल बाद श्रीमत को जाने क्या हुआ, कहीं से एक वैष्णवी का उठा लाया। उमर की छोटी मोटी नहीं भरपूर जवान। उसे वह सन् प्रडतालीस में लाया। पूर्वी बगाल की औरत। नवद्वीप से आकर कठी बदल उसको ले आया। देखन सुनने म औरत अच्छी थी, स्वभाव लेकिन अच्छा नहीं था। उसम पहला दोष तो यह था कि हसती बहुत थी। गुदगुदी-सी कोई बात लगती कि हसने हसते लोट-पोट। बातचीत म भी कोई लिहाज नहीं। बूढा कहने से श्रीमत बिगड जाता था और वह कि बूढा यह बिना रहन की नहीं। बात-बात मे चपा कहती, गर बुड्ढे या कि पहनी, जरा बुड्ढे का रवैया देखो। या कहती, होगा नहीं भला बुढापे म इतना भला ? श्रीमत गरज उठता। चपा लेकिन क्यो माने। आखिर श्रीमत धमाधम जमाता पीठ पर।

चपा कुछ देर तक तो रोती, उसके बाद गुमसुम ही बठी रहती फिर हसती। कहती, जिसका जसा भाग। मेरे भाग म सारी जिंदगी ही भादो का महीना है। पीठ पर भदाभद जो पका ताड गिरता है गिरता ही है। कभी कभी भादो म सकरात भी नहीं और पड म ताड का भी मत नहीं। पहले पहल तो दो बार यह ताडतल से यानी घर से भाग भी खडी होती। श्रीमत वहा से पकड लाया था। मार खाते ही वह नवद्वीप भाग गई थी। श्रीमत वहा से पकड लाया था। उसके बाद बगर कहे सुने गगा दशहरा मे गगा नहाने, यहा-वहा का मेला घूमने चल देती। दो-तीन दिन के बाद घर लौटती। जाया करती मुहल्ले के

लोगो के साथ। साथ ठीक नही पीछे पीछे चल देती। कभी-कभी अकेली भी चल दी। लोग बात लेकिन बुरा कहते। फिर भी श्रीमत उसको छोट नही सका। शायद हो कि उमर ज्यादा होने का मोह हो। और फिर इस बच्ची मालती के लिए। चपा ने मालता को मुट्ठी म कर लिया था। चाहती भी थी उसे। उसके साथ घरौंदा खेलती। अगना म मगर मानुस का खेल खेलती। यह खेल मालती के लिए ही खेलती हो सो नही। अपने लिए भी खेला करती। घर से भागती तो अपन आप ही लौट आया करती। मालती के लिए काठ का खिलौना मिट्टी का घोडा लोहे की छोलनी हाडी, थाली जो भी हो कुछ न कुछ लेकर ही आती और आती समय समझकर जब श्रीमत घर म नही होता। घरौंदे में मालती के साथ खेलन लग जाती। श्रीमत घर म कदम रखते ही कहता, हू यह रही।

चपा कनखियो से ताककर आप ही आप बोल उठती पीठ की सूजन पुरानी हो गई मारो मुक्का। मारो आहिस्ता मारो। या कहती मालो या तो बिटिया मेरी पीठ पर चढ जा!

लेकिन जन चाहे पुरानी हो या फिर मालती ही पीठ पर सवार हो, मुक्का जो मारना होता श्रीमत मार ही लेता।

कभी-कभी मार पीट न करके श्रीमत उसे घर स निकाल देता। चपा बाहर दरवाजे पर बठी रोती रहती—अजी पैरो पडती हू तुम्हारे दरवाजा खोलो। जी चाहे जितना मुक्का मार लो मगर दरवाजा खोलो।

कभी-कभी श्रीमत ने अपने ही आप सोचे खेद किया, हाय हाय यह क्या किया मैंने! कौन-से पाप को घर ले आया!

कि चपा सामने आ गई। कहन लगी पैरा पडती हू ऐसा न करो। मारो मुझे। जितना चाहो मार लो। मेरी पीठ म खुजली हो रही है।

और इसी स्थिति म सौतली मा और बाप श्रीमत के झगडे रगडे म अपने आप ही बडी होती जा रही थी मालती। श्रीमत जब चपा को ले आया था तब मालती की उम्र छह साल के लगभग थी। या चपा का स्वभाव चरित्र जसा भी हो चाहे उसम जहर या काटा इन दो मे से एक

भी नहीं था। स्वभाव उसका मीठा था। भाग जाती, फिर लौट आती।
मिटती। हर हालत मे वह हसती और एक रसिकता थी उसमे। चपा की
आयु उस समय बीस से पच्चीस—कोई भी हो सकती थी। मालती को
घर म देखकर न तो उसन मुह लटका लिया नहीं उसे उसने मा के स्नेह से
अपनाया। मुह पर कपडे डालकर हसते हसते बेहाल हो गई थी वह,
हाय राम, इत्ती बडी लडकी की मा हो सकती हू भला।
श्रीमत इनसे नाराज हुआ था। चपा ने कहा, अरे बाबा नाराज न
हो। उनसे तुम्हारा नाता डबलकर दूगी मैं। वह बाप को मौसा कहेगी।
मैं उसकी मा नहीं बन सकती, मौसी बनूगी।
और मालती की ठोडी पकडकर कहा मुझे मौसी कहना हा। सोना
मेरी।
मालती ने हसकर कहा मैं सोना नही, माला हू। मालती।
—हू तुम मेरी सोने की मालती है। बिहुला का गीत जानती हो?
साने की मालती अरे हो, बहती जाए जल में। मालती बोली, तुम तो
बहुत अच्छा गाती हो मौसी।
—सिरफ गीत ही? नाच भी सकती हू सोना। घर का दरवाजा
बद करके नाचकर दिखाऊगी। तुम्हे।
चपा मालती को अपनी स्नेह-ममता अपनी जैसी मानकर ही देती
श्रीमत भी अपने जसा ही अपना स्नेह उसे देता अकृत्रिम स्नेह। लेकिन
लाख हो, देखभाल जितनी चाहिए, नही थी। वह अपनी ही प्राणशक्ति
और मनमानी रुचि म ही बडी हुई। पडो पर चढा करती, तैरती, टोले
की लडकी लडकों के साथ उछल-कूद किया करती। ही-ही-ही-ही हसती।
बिगडने पर जोर-जोर से गालिया देती। फल फूल चुराया करती। किसी
के बगीचे म कोई अच्छा-सा पोधा देखती तो चुपके स किसी वक्त घुसकर
उसे उखाडकर फेंक देती। डर उसे छू नहीं गया था। बाप से उसे विरासत
मे साहस मिला था।
पहले सुबह ही छह साल की वह लडकी हाथ में पना

रास्ते पर निकल पड़ती। वह अपनी गया को खोजन जाया करती। उनकी एक गाय थी। अजीब किस्म का स्वभाव था उसका। साझ को जब वह गुहाल म लाइ जाती तो अचानक कूद पडती। हाथ से डोरी छुटकर जाती और वह दौडकर भाग निकलती। रात भर किसीके बगीचे क पौधा को चरती किसीके खलिहान का पुआल खाती किसीके खत की फसल चाटती और इस तरह अपना पेट भरकर सुबह की किरण फटते ही निरीह की नाइ किसी पेड़ तले बैठी जुगाली करती रहती। मालती सुबह उठकर उसी गाय को खोजन जाया करती। खोजकर उस घर ल जाती। उसके बाद कोइ साढे दस बजे दो और गाया को उसके साथ भगाती हुई ले जाती और बस्ती स बाहर किसी पोखर के बाध पर या घासवाली जगह म लबी डोरी से खूटे म बाध आती। तीसरे पहर जाकर फिर उन्ह घर लिवा आती। साझ को कभी-कभी वह बकरिया की खोज म निकलती। बकरियो को सवेरे ही खोल दिया करती वह सब गाव मे इधर-उधर चर-चराकर शाम का आप ही घर लौट आती। जिस दिन लौटकर नही आती उस दिन मालती खोज म निकलती चलते चलते कहा कही रुक कर आ अरर आ—आवाज लगाती।

उस दिन पोखरे क बाध पर खडी चपा बतखा को घर लाती—कोई-कोई ति ति ति! और दिन यह काम मालती ही करती।

चपा के आने से पहले पाच वष की उम्र मे मालती न खुद ही ये जिम्मेदारिया अपने कधे पर उठा ली थी। चपा ने आकर उसका काम कुछ बढा ही दिया बल्कि। श्रीमत से कहा, बिटिया को स्कूल क्या नहीं भेजते ?

—क्या करेगी ?—अचरज स श्रीमत न पूछा।

—लिखना-पढ़ना सीखेगा।

—फिर ?

—फिर क्या ? मुलुक आजाद हुआ है। औरतें नौकरी करती हैं। नहीं करती हैं ? तुम्हारा बस्ती क ही उस सुनार की बेटी विधवा होने

पर उसने लिखना पढना सीखा इसीलिए स्कूल म नौकरी करती है। नहीं सीखा होता तो क्या करती आखिर ? दाईगिरी।

वाद श्रीमत को मजा नहीं लगी। उसने मालती को नि शुल्क प्राइमरी स्कूल म भर्ती करा दिया था।

जिस रोज बकरिया खो जाती, उस दिन मालती समझ जाती कि आज मर नसीब म कुछ लिखा है। बकरी जब घर नही लौटी ता दईमारा ने जरूर ही किसीके बगीचे म घुसकर लता-पौधा खाया है या किसीके आगन म धूप म सूख रहा अनाज चट किया है और आखिर पकडाकर या तो किसीके घर मे बधी पडी है या हाकिज मिया के अडगड में चली गई है। किसी के घर बधी होगी तो नसीब में भला बुरा सुनना बदा है, सुनना ही होगा। और कहीं अडगडा की हवा खा रही है तब तो बस सवरे के पहले छूटने का रास्ता नहीं कुछ घरमदड भी देना होगा। अडगडा श्रीमत जाता। छुडाकर बकरीको पीटते पीटते घर लाता। कहता, आगन का जब दम ही नहीं, तो किसीके यहा घुसने ही क्यों गई थी ? बकझक जो होती, वह सुनती मालती।

होठ बद किए ही खडी रहती। धीरे धीरे ये बकबक चुप हो जाते।—जा, ने जा। लेकिन बकझक बरदाश्त से बाहर हो जाती तो मालती फन उठाकर तन जाती। कहती अजी, खाया बेचारे बेजुबान जो ने है उसके अकल नहा है। तुम्हारा नुकसान हुआ है, मानती हू। पकड लिया है ठीक ही किया है। मगर अडगडे क्यों नही भेज दिया। उसे बाधकर किस कानून से रखा है ? छोडना हो, तो छोड दो वरना मैं बप्पा स कहती हू। वह थाने जाएगा। बाधकर रखने का कानून नहीं है।

यह सब उसे श्रीमत ने सिखाया था।

चपा न आकर दूसरा सवक सिखाया।

चपा ने सिखाया, मीठी बात करके थोडी बहुत खुशामद करके मन गलाकर देखो कोई तकलीफ नही होगी। कडवी बातें नही बोलो मौसी।

उस दिन मालती पिटकर लौटी थी।

उस दिन बकरी भुवनपुर के बाबा के पड़े के एक फरीक के यहा घुस गई थी। पूजा के फूलो का बगीचा था। उस साल सर्दियो म नए सिरे से मौसमी फूल लगाए थे। परिवार का इकलौता लडका। शौक था। बाप के असामयिक निधन से वही उस समय मालिक था। उसका नति हाल था बदवान म। मौसमी फूल के पौधे वहा से लाकर लगाए थे। रग रग के फूल भी खिले थे। उमर लडके की बारह साल की ही होगी पर पक्का लडका था सख्त। बगीचे म ही चौकी डालकर बठा रहता है, गीत गाता है। देखने म भी सुदर। घर म फूआ है। उसीका दुलरुआ। उसका बाप भी अच्छा गायक था।

बकरी घुसी। बगीचे के एक ओर के पौधो को फूल समेत साफ कर दिया। इसीलिए पकडकर बकरी को बाध रखा था। मालती खोजती चल रही थी और पुकार रही थी—आ अरर, आ।

मालती की हाक पर जबाव देने की आदत थी बकरी को। वह दे बाबुओं के घर के अदर से म मे कर उठी। उस दिन मालती को बडा चक्कर काटना पडा। इनका घर था देवगज। गाव के एक अतिम छोर पर जहा सरायतों का टोला एकबारगी मिल गया है कलमुही बकरी उतनी दूर चली गई थी। देवगज म जब वह न मिली तो मालती ने सोच लिया, हो न हो अहमके चली गई है या कि रास्ते म अकेली देखकर बकरिया के व्यापारी ने उस अपनी बकरिया की टोली म मिला लिया है या गीदड के पेट म चली गई है। जसे ही अदर से मे-म की आवाज आई वह अदर गई और आवाज लगाई अरर

बकरी ने जवाब दिया। उसके साथ ही कोई बोल उठा—हु प्ररर !

आओ इधर। बकरी तुम्हारी है ?

मालती ने देखा, दस बारह साल का कातिक सा सुंदर एक लडका। माग करा बाल। हाथ म बास की एक करची लेकर निकला। बोला, इसे तुम्हारी पीठ पर तोडूगा।

मालती सकपका कर चुप रह गई।

—इधर आ, इधर।

मालती न कहा, बकरी को छोड दो। बांधकर क्यो रखा है ?

—हा हा, छोड दता हू। पहले तुम्हारी पीठ पर यह छडी तोड लूगा तब छोडूगा। कहीं बकरा होता, काटकर खा जाता। मादा है। खाई नहीं जा सकती। यह छडी तेरी पीठ पर तोडूगा।

—किया क्या है मेरी बकरी न ?

—देख, वह देख क्या किया है !

देखकर मालती को सचमुच ही अफसोस हुआ। बगीचे के एक ओर फूल ही फूल थे और उस ओर फूल सहित वह पौधा को जड से चाट गई थी। लेकिन हा ज्यादा दूर तक नही।

—क्या, चुप कैसे रह गई ?

अबकी मालती ने कहा, बस, उतना सा तो खाया है ! बाकी तो सब बच ही गया है।

—उतना सा ता खाया है ? खैर, तेरे सर मे तो बाल बहुत हैं। एक मुटठी काट तो लू भला !

—आवारगी की और कोई जगह नहीं मिली ! कहती हू छोड दो बकरी को। खाया है तो मडगडा क्यो नही भेजा ? बाध किस कानून से रखा है ? छोड दो, नही तो थाने मे खबर करूगी।

—थाने जाएगी। कानून दिखाती है, जा नही छोडता।

मालती को बरदाश्त के बाहर हो गया। वह जबरदस्ती बकरी को खोलने गई। उस लडके न कसकर उसका मोटा पकडा और उस घर

से बाहर निकाल दिया।

मालती रोते रोते घर लौटी। बाप ने सुना। बिगड़कर वह उसके साथ उस घर पर गया। उस समय अंदर से बड़े अच्छे गले की तान निकल रही थी। गाई—कोई और कौन वही लड़का। बगीचे में चौकी पर बैठा था पा-पा पा-ताम ना तोम ना तरे तोम ना द्राम ना—छेड़े हुए था।

श्रीमन ने हँसकर पूछा इसी घर में?

—जी।

—पर यह तो बड़ा अच्छा गा रहा है। बड़ी सुरीली आवाज है।

मालती को भी यही लगा था मगर मुँह से वह कुछ नहीं बोली। अंदर जाकर बाप देखता रहा। वहाँ लड़का उस्ताद जैसा बाएँ गाल पर हाथ रखकर दायाँ हाथ हिला हिलाकर द्रोम ना द्रिम कहते हुए बीच-बीच

रही थी ? पुलिस की धमकी क्या दी ? जरा देखो तो सही, मेरे पौधा की क्या गत कर दी है ? और फिर मुह पर जवाब कैसा देती है ? बड़ी झगड़ालू है यह लडकी।

अजीब बात ! श्रीमन का पारा हरगिज गरम नहीं हुआ। इतना ही नहीं मालती को भी पिटने का गम नहीं रहा। बल्कि गम ही आ रही थी उसे।

श्रीमत ने कहा, जी यह लडकी कुछ वैसी है। ने, ठाकुर के पालागन कर !

मालती ने लेकिन प्रणाम नहो किया। खडी खडी रही। उस लडके ने कहा, ले जाओ बकरी। बाधकर रखना।

दो दिन के बाद फिर वही। उस दिन बकरी को विलायती फूल का रस जो मिला, सो चाट लग गई। फिर उसी बगीचे म जाकर घुसी। फिर पकडी गई।

उस दिन मालती को बीच ही रास्ते म खबर मिल गई। सुना फिर वही बध गई है बकरी। गाव म जब ढूढे नहीं मिली तो मालती को भी ऐसा ही अनुमान हुआ था। लेकिन उस दिन उसके कदम नही बढे। बीच ही रास्ते से घर लौट आई। कहा, मुझसे नहीं होगा। रईमारी ने फिर वहीं जाकर पौधो का सफाया किया है। बप्पा जाए। मैं नही जाती।

चपा न कहा, अरे जाओ मौसी। बप्पा तो तुम्हारा मछली मारने गया है। लौटने म एक पहर रात होगी। जाओ। जरा मीठा बोलकर देखो। मीठा बाता से खुशामद करके देखो कोई तकलीफ नहीं होगी। कडवी बात न ही बोलो मौसी !

—तुम जाओ न !

—मैं ! बाप रे ! बहू हू मैं। साझ की बेला, मद सूरत

—बारह साल का लडका मद !

—रहा तो।

—वही तो क्या ?

चपा हस पडी थी। बोली बडी होगी, जब समझोगी मौसी! लडका है न! बारह साल का। मैं उससे क्या बात करूगी ? तुम जाग्रो। तुम बोलोगी तो पसीजेगा। समभी ?

बू से बात को कुछ कुछ समझा मालती ने। गाव घर की लडकी — तिसपर श्रीमत की लडकी चपा की दुलारी सौतेली लडकी। चपा दोपहर को कमरे मे किवाड बद करके गाती है नाचती है मालती को सिखाती है। श्रीमत से चपा की बातचीत होती है—लडकी के लिए वे कुछ दबा छिपाकर नही बोलते। सो मतलब पूरा चाहे न समझे, कुछ-कुछ समझती है वह।

और इसीलिए जवाब मे मुसकराकर वह बोली, ज , तुम बडी वाहियात हो।

चपा सुर मे बोली

वाहियात होके ही रही
फाव दिए भी ले ना कोई।

कहकर ही-ही हस उठी थी वह। फिर बोली, चलो मैं बल्कि साथ चलती हू। घूघट काढे मैं खडी रहूगी तुम बात करना।

—क्या कहूगी ? हाथ जोडती हू परो पडती हू छोड दो!

—यही कहने मे क्या दोष है ? ब्राम्हन का लडका है भला ग्रादमी

—न। मुझसे न होगा।

—खर। पैरा पडती हू हाथ जोडती हू न कहोगी न सही।

—तो ?

—कहना ठाकुर नासमझ बकरी की गलती का क्या करना! गुस्सा नहीं करना चाहिए सोना!

मालती खिलखिलाकर हस पडी थी—गुस्सा नही करना चाहिए सोना!

—बह बिना उपाय क्या है ? घर म इत्ते इत्ते से दो ममन हैं। दूध

के बिना मरेंगे नहीं। चलो चपा।

लाचार मालती गई। पीछे-पीछे चपा भी गई। उस दिन भी बैठा-बैठा गीत गा रहा था सौदाठाकुर। तान नहीं, गान—

वह उज्ज्वल नीला तारा,
सलज माधुरी भरी हाठ में
हमी सुधा की धारा।

दोनों जन घर के बाहर ही ठिठक गई। मालती ने हाथ के इशारे से बताया, वह सुनो! आज उस ओर भी अच्छा लगा। क्योंकि आज हरे ना-तेनाना ना नहीं था। नाद भी थे। और कितने अच्छे नाद! साम को पश्चिम आकाश में जो नीला-सा तारा धुक धुक जल उठता है उसकी याद आई। सुबह के सुरवा तारा की याद आई। यह भी याद आया कि इस गीत को उसने गधेश्वरीतला में यात्रा में सुना है।

चपा बोली, अरी ओ बहिन बेटी, यह तो खूब है री! उज्ज्वल नीला तारा!

मालती बोली, हां! कितना सुंदर गा रहा है।

—वह तारा होने की साहिश नहीं होती है मौसी?

—धत्त!—फिर कहा, यह सब बालोगी तो बप्पा से कह दूंगी।

—मैं तो तुम्हारे बप्पा की वही तारा हूं!

—चुप! कोई खड़ा है।

सच ही कोई उसके टूटे हुए दरवाजे के सामने खड़ा था। वह भी चुपचाप गाना सुन रहा था।

चपा बोली, कोई मरद खड़ा है बहिन बेटी।

—हां।

गानेवाला लेकिन बड़ा मस्ती में गा रहा था। उस मस्ती से उसने मानो साझ को ही मस्त बना दिया था! गीत खतम हुआ कि वह आदमी, जो खड़ा था, अंदर चला गया। चपा ने कहा, बहिन-बेटी, चलो चलो। वह आदमी अंदर गया हम भी चलें। इस समय वह कुछ

बोल नहीं पाएगा । हजार हों आदमी के सामने हुआ न !

व भी अदर चली गइ । जाकर जा देखा वह एक अजीब दृश्य ! जो आदमी चुपचाप खडा गीत सुन रहा था, वह जाकर सोनाठाकुर के सामने खडा हुआ कि सोनाठाकुर मानो वृद्ध बन गया ! उस आदमी ने उसके दोनो कान पकड लिए—हु । *उज्ज्वल नीला तारा !* स्कूल क्या नहीं गए ? ए ?

मालती खिलखिलाकर हस पडी । उस हसी से सोनाठाकुर का बुढ़पना शायद कट गया । वह बोल उठा, गुरु होकर कान मत पकडिए । मैंने मतर लिया है ! गुरु का कान ! छोड दीजिए ।

—गुरु का कान ? अच्छा । बाल ? बाल किसका है ? उस आदमी ने उसकी चुरकी पकड ली ।

—छोड दीजिए ।

—छोड दूगा ? देता हू । स्कूल क्यो नहीं जाता है ?

—बुखार आया था मास्टर जी । आज ही पथ्य खाया है । वह क्या कर रहे हैं ? छोडिए, छोड दीजिए ।—घूघट को जरा खिसकाकर चपा बोल उठी ।

मास्टर जरा सकपका गया । मगर उसने झोटा नहीं छोडा ।—बुखार ? ऐसा चमकता चेहरा और बुखार ! तुम कौन हो ? गवाही देने आई हो ?

चपा बोली मैं यहा काम धाम करती हू । आती जाती हू । कई दिना से बुखार था । आज भात खाया है । सर कौए का खाता हो गया था । इसीसे तेल डाला है । आप मारते क्यो है ?

मास्टर ने अब छोड दिया । कहा बुखार है तो सरदिया की इस शाम मे खुली गीत मे बैठकर उज्ज्वल नीला तारा क्या कर रहा है ?

सोना ठाकुर ने इसपर जो किया उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती । उसने बगीचे मे पडे बास के एक डडे को झट उठा लिया और

उसे ढग से तानकर कहा, मैं जो कर रहा हू, ठीक ही कर रहा हू रे बेटा ! तेरे मुह मे, तेरे स्कूल के श्राद्ध का कीतन गा रहा हू। मैं पूछता हू, जाता है यहा से कि लू इस डडे से खबर ?

मास्टर ने फिर एक शब्द भी न कहा। पीछे मुडकर चुपचाप चला गया। दरवाज़े के पास जाकर कहा, तुझे रस्टिकेट करूगा।

—ठेंगे से। मैं बाबा भुवनेश्वर के सर पर बेलपत्ता चढाकर खाता हू, गधेश्वरी थान में फूल चढाता हू, मा सरस्वती कोई बुलाने से आती है ? तेरा स्कूल भी छोड दिया। जा।

मास्टर फिर भी खडा था। इन दो औरतो के सामने शायद यह अपमान सहन नही हो रहा था। बोला, बचपन ने बाप को खाया, मा को खाया बूढी फूआ के लाड से बहक गया है। अरे, आखिर तक गाजा शराब पिएगा तो कि पडे सदा कन्न रहे हैं।

सोनाठाकुर बोला, जाता है कि तुझे बिना इजाजत के अदर घुसने के कारण इस बकरी की तरह बाध दू ? मैं कानून जानता हू।

अब मास्टर चला गया।

सोनाठाकुर ने डडे को फेंक दिया और जनेऊ पकडकर बोला, मैं शाप देता हू, तुझे शूल पडगा।

फिर रूखे स्वर मे बोल उठा, क्या है ? आज तुमलोगो ने फिर बकरी छोड दी है। यह छोरी ! आज सचमुच ही मारूगा मैं !

—पहले सुन लीजिए। बात सुन लीजिए सोनाठाकुर !

—सोनाठाकुर क्या ? हैं ?—खुद भी अचकचा गया वह।

चपा ने कहा सोने जैसा रग है आपका, बासुरी जैसा गला। तुम सोन के गौर हो ठाकुर। जभी मैं सोना ठाकुर कह रही हू।

—यह सब कहने सुनने से नहीं होगा। रोज रोज तुम्हारी बकरी पौधा खाएगी मैं नहीं छोडने का। बाधकर क्यो नहीं रखती ?

—जभी तो कहती हू सोनाठाकुर, बात सुन लीजिए। मेरी बहिन बेटी ने जाकर मुझसे कहा, ओह मौसी, तुमने सुना नहीं। क्या गाने हैं !

बासुरी बजती हो जैसे ! कदम तले की मुरली ! रात को बिटिया सोती नही है। आज मैंने कहा जा न गीत सुन आ तो बाली किस वहान जाऊ। मैंने कहा बहिन बेटी, इस बकरी को छोड दो। यह फूल के पौधो के लोभ से वहा जरूर जाएगी और पकडी भी जाएगी। फिर तुम जाना। सो उसके साथ मैं भी आ गई। तुम्हारा गीत सुनकर कान जुडा गया सोनाठाकुर। दया करके अब बकरी को तो छोड दो। घर मे दो मेमने मिमियाकर मर रहे है।

खोकाठाकुर ने बिना कुछ कहे बकरी को छोड दिया।

चपा ने रास्ते म कहा बहिन बटी जरा बठ जा। हस लें।

और सच ही वह खूब हसी। उसके साथ मालती भी हसी। आज की साझ की सारी बाते उसके लिए उपभोग्य हो रही। कितना अच्छा लगा वह गीत! गीत सुनती रही और आसमान म उस नील तारे को खोजती रही। लेकिन पश्चिम की ओर शिव के सवायतन के छप्पर और पेड पौधा से घिरा हुआ है। नजर नही आया। आसमान म आज ज्यादा सितारे नही थे। आज पूर्णिमा है या इजोरिया पाख की चौदस। जो हैं भी वे चादनी मे मिटमिटा रहे हैं। सरनी भी खामी पड गई। लेकिन उसकी याद भी नही आई। खोकाठाकुर का गाना कितना अच्छा था! और मास्टर के साथ जो वारदात हो गई? खूब है खोकाठाकुर! कहा कान गुह का है। खबरदार जो पकडा! याद आते ही हसी आती है। और फिर घास का डडा उठाकर ठाकुर ने नन्हे भीम का रवया कर दिखाया। मास्टर दुम दबाकर भागा। गलती भी थी मास्टर की। इतनी अच्छी आवाज इतना अच्छा गा सकता है वह अपने घर मैं बठा गा रहा है तो कौन सा गुनाह हुआ? पढना उसे अच्छा लगे भी क्या? और पढ़ने की जरूरत भी क्या है उसे? यात्रा पार्टी म चला जाएगा गधेश्वरी यान म कलकत्ते की बडी-बडी कपनिया आती हैं। उन कपनियो का भी तो गाना सुना है मालती न! उनम स क के ऐसा गला है? खूब कहा, बाबा के माथे पर बेलपत्ता चढाकर आता हू

गर्भेश्वरी की पूजा करता हू सरस्वती आप ही आती हैं। और अपनी चपा मौसी। मौसी भी खूब है ! खूब हो तुम मौसी ! खूब जावाज, खूब वाहियात, पक्कड। जरा भी हसी बिना कसे कह दिया, तुम्हारा गीत सुनन का कोई बहाना तो चाहिए। इसीलिए बकरी को छोड दिया। और कस सवार सवूरकर यह कहा कि सोन के गौर जैसी शक्ल है तुम्हारी, बासुरी जसा गला। तुम सानाठाकुर हो। माला को कुल मिलाकर बडा मजदार मामला लगा। मगर जोत चपा मौसी की है, इसम सदेह नहीं।

य बातें श्रीमत ने दूसर दिन धरनीदास का बताई थी। गुरुवार की हाट के दिन। श्रीमत को चपा मौसी ने बताया था। हाथ-पाव हिला-डुलाकर हसते हसते लाट-पोट होते-होते कहा था।

श्रीमत एक बार रज हो उठा था, खँव-खँव करके हसती है ?

चपा और भी हस उठी थी। श्रीमन्त ने कहा, लोढे से तुम्हारे दात तोड दूगा मैं।

चपा ने कहा, ठगा जाओगे। फिर तुम्ही उछल-कूद मचाओगे, तुम इतना बिगड क्या आन हो गया। तुम्हारे तो दात नही टूट हैं।

श्रीमत न कहा, अच्छा माला, तू बता, इतनी हसी की क्या बात है ?

माला ने कहा, मैं नही कह सकती। मुझे हसी आ रही है।

—तुझे भी हसी आ रही है !

—बाप, बाम का डडा उठाकर तुम कही सोना ठाकुर की गुरुजी को भगान की मूर्ति देखते ! तुम भी हस पडते।

बिना दखे भी सिर्फ सुनकर ही श्रीमत काफी हसा। चपा न ही किसी तरह स अपनी बात पूरी की थी।

दूसरे दिन सोनाठाकुर पडा बनकर हाट गया था। इसके पहले दिन तक उसकी फूआ ही आती थी, बाबाथान में खड़ी होती थी। हाट आन वाले और तीरथयात्रियो को पुष्प दिया करती थी। अनपच व्याधि की

दवा देती थी, पैसा लेती थी। बाबा गाँव में जो पैसे चढ़ते उसका ना पैसा हिस्सा लेती। दे के यहा से वसूली भेजने का नियम था। वसूली पोलदार का होता, तो भी एक बमन, दो मूली चार मानू यह जबरन्स्ती आंचल में बाँध लेती। कहती, नाबालिग लड़का है। कहाँ जाएगा? बड़ा होगा तो नहा लेगा।

इसपर भी कोई कुछ कहता तो कहती देखो भया बकबक मत करो। मेरा भतीजा बड़ा होने पर पहागिरी करने नहीं आएगा। देख लेना।

फूआ ने बड़े अरमान से उसे पढ़ने भेजा था कि वह नौकरी करेगा। या कि नोबू कोई बड़ा उस्ताद होगा। नोबू यानी छोटा बाबू का नाम नवगोपाल था। नवगोपाल का बाप भी उस्तादी करता फिरता था। इलाके में नाम-गाम भी था। उस समय गान बजाने की चलती चल पड़ी थी, खास करके ब्याह के लिए भल घर की लड़कियों में। लड़कियाँ यहा मिडिल तक पढ़तीं। कोई पास करती कोई नहीं करती। लेकिन उसने से ही पढ़ी लिखी है यह हो जाता। लेकिन मात्र पढ़ने लिखने से शादी नहीं होती। कोई संबंध आता तो वर-पक्ष के लोग पूछते गाना वाना जानती है?

ठीक पूछते ही नहीं शहर बाजार में यह पूछा जाता इसीलिए यहा भी पूछें शायद इसलिए भी और फिर लड़की की शादी शहर के लड़के से करेंगे इस इच्छा से भी यह रिवाज चल पड़ा था। नोबू के पिता नित्यगोपालमिश्र का गला भी बड़ा अच्छा था गाना उसका भी जन्म जात दौलत था—अच्छे उस्ताद से तालीम भी ली थी। उस्ताद से गीत भी सीखा था नशा भी। नशा बाबा के पड़े करते ही है। वह उस्तादी करता फिरता था। गावों में उन दिनों थिएटर का चलन हुआ था। वतानिक बनकर थिएटर में भी गीत गाता। थोड़ी बहुत आय भी होती थी। गाव में इसी समय नया डाक्टर तिशि बाबू आया था॥ वहा के डाक्टरखाने की नौकरी में आया था। साथ में उसकी स्त्री

और दो लड़कियाँ थीं। लड़कियों को स्कूल में भर्ती करके ही वह बाज नहीं आया, प्राइवेट ट्यूटर भी रक्खा था। बड़ी लड़की ने मिडिल की पढ़ाई खत्म की थी। उसे गाना सिखाने के लिए नित्यगोपाल को भी रक्खा था। उसी की देखा-देखी द बाबू के यहाँ भी इसका रिवाज चला।

नित्यगोपाल तीस ही साल की उम्र में अचानक मर गया। नवगोपाल उस समय अपनी माँ की गोद में तीन साल का था। नवगोपाल से पहले दो बच्चे होकर मर चुके थे। नवगोपाल पाँच साल का हुआ कि माँ मर गई। पर में फूआ थी। फूआ—माकू यानी मोक्षदा—ने ही पाला पोसा। और चूंकि बचपन में ही लड़के ने माँ-बाप को खा लिया, इससे फूआ को उम्मीद थी कि लड़का बहुत बड़ा आदमी होगा।

नवगोपाल के लिए घर पर भी मास्टर रक्खा गया। पर उसके फेल होते ही मास्टर बदल जाया करता। यह जो मास्टर था, जिसने उसका कान पकड़ा, सबकी बरखास्त किया गया था।

नवगोपाल ने कल शाम ही फूआ से कह दिया—यह पढ़ना लिखना मुझसे न होगा। कल से मैं बाबाथान जाया करूंगा। अपना बपौती काम करूंगा।

फूआ ने कहा सुना रोई धोई, मगर नवगोपाल अडिग रहा। बारह साल की उम्र में उसने बाईस साल जैसा कानून सीख लिया। कहा, तुम मेरी अभिभाविका नहीं हो। बाप के मरने पर माँ रहने से अभिभाविका होती है। बाप-माँ दोनों ही गुजर जाएं तो चाचा ताया होते हैं। तुम फूआ हो, तुम्हारा गोत्र दूसरा है। तुम तो अभिभाविका हो ही नहीं सकती। मैं अपना अभिभावक आप ही हूँ।

उसने आज तसर का कपड़ा पहना माथे पर भभूत का लंबा-सा टीका लगाया, हाथ में बेंत की एक छड़ी लेकर बदस्तूर पंडा बनकर हाट और भुवनेश्वर के टोल के सामने जा खड़ा हुआ।

शुक्रवार की हाट बड़ी नहीं होती। सोमवार को खूब लगती है।

सोमवार को चार दिन की यानी सोम, मंगल बुध बृहस्पत की हाट पड़ती है, शुक्रवार को तीन दिन की—शुक्र शनि रवि। इनमें भी सोमवार पूजा का अच्छा दिन है। लेकिन हां, शुक्रवार को लोग ढेला बांधने के लिए बाबाधान आते हैं। भुवनेश्वर धाम के उस पार जो बाबा की मूर्तियां फौज का बरगद बस समझ सिहाड़ का जिसा था वहां के कई पुराने बरगद आज भी हैं उनसे लगकर जटाएं निकलकर झूलती हैं। लोग आते हैं भुवन सरोवर में नहाते हैं और अपने मन की कामना बाबा को बताकर भीगे वस्त्र आदि कपड़े से पत्थर ढेला या ईंट का टुकड़ा उस जटा में बांध जाते हैं। इससे क्या तो मनोकामना जरूर पूरी होती है। जब पूरी हो जाती है तो लोग फिर आते हैं, बाबा को प्रणामी चढ़ाते हैं और ढेले को खोल देते हैं। किसी किसी का ढेला अपने आप खुलकर गिर जाता है। कोई कोई थोड़ा-सा चूना गाछ में लगा जाते हैं। चूना लगाने का जो मतलब होता है वह समझने में कठिन नहीं होता—लोग समझ लेते हैं, किसीसे आक्रोश है इसीलिए चूना लगाया है। इससे यह होगा कि जिसपर आक्रोश है उसके बदन में ऐसा ही श्वेत रोग फूट निकलेगा। शुक्रवार को चूना बेचनेवाले आते हैं—बाबाधान के बिलकुल पास ही बटते हैं।

किसीको ढेला बांधते या चूना पोतते देखते ही पंडे पास आ खड़े होते हैं। कहते हैं कोई संकल्प करके बांधना पड़ता है भया। संकल्प करो। कहो अद्य पौष मास कृष्णपक्ष द्वितीया तिथि में—कहो अपना नाम लो उसके बाद मन ही मन अपना संकल्प कहो—जो भी हो—गरीबी मिटाना चाहते हो, वही कहो—मुकद्दमे में जीत चाहिए वही कहो—किसीको प्यार करते हो वही कहो—कहो फलां को—ब्राह्मण हो तो देवी कहो शूद्र हो तो दासी—तस्य मन प्राप्ति हेतु अहमहं लोष्ठ बंधनम करिष्ये। बाबा भुवनेश्वर अगर सत्य हैं तो मुराद पूरी होगी। मगर अपने मन को ठीक बजाकर देख लो भया कामना तुम्हारी सत्य है या नहीं। हां बांधो ठीक से बांधो। अब इधर आओ

बाबा का चरणोदक पियो, फूल ले जाओ, जतन से रख देना। दक्षिणा दो पैसा, पाच पैसा जो जी म आवे दो। एक पैसे की दक्षिणा नही होती। काचनमूल्य है न। बाबा को एक पैसे की प्रणामी चढा सकते हो। भुवनेश्वर की हाट, माता गंधेश्वरी का दरबार—यहा दुख देकर सुख मिलता है रोग देकर आरोग्य मिलता है सोने के हिरन-सा भागा हुआ मन जाल म फसता है। स्वय बाबा का वरदान है यह।

और अंत म बोल उठना—हर हर बम, हर हर बम। बम भुवनेश्वर विश्वनाथ।

हाट तीसरे पहर लगती है। सौदा पाती बेचनेवाले ज्यादातर बारह से दो बजे तक के बीच आते हैं। माल गाडी से आता है, बहगी से आता है माथे पर टोकरी मे आता है। जिसकी जो जगह बधी बधाई है वहीं बडी-बडी चटाई डालकर चीजो को सजाते हैं। सर्दियो मे सब्जियो का मौसम होता है। तरह-तरह की तरकारी किस्म किस्म की सब्जी। बैगन, मूली, नया आलू कोंहडा, हरी मिर्च, नया प्याज—यहा तक कि गोभी और मटर की छीमिया भी आती हैं। फूलगोभी कम आती है—बदगोभी जरा देर से आती है, मगर आती है बेशुमार और आकार मे होती भी बहुत बडी बडी है। भुवनपुर की जिस झील म श्रीमत मछलिया मारा करता, उसीके किनारे की जमीन म और मयूराक्षी नदी के चौर पर गोभी की खेती बडे जोर की होती है। गोभिया क्या, अब तो दो चार बतखें और मुर्गिया भी बिकने को आने लगी हैं। मछलिया खास नहीं आतीं, मछेरिनें टोले टोले घूमकर बेच जाती हैं। हा कभी कोई बहुत बडी मछली फस गई तो उसे लेकर हाट म भी बैठती हैं। बराबर जो मछली यहा आती है वह है काठ मछली। कवै, मगुरी, नटा। करो हाडी का यही पेशा है। वह झील से, डाबर से, गड्ढो से यही मछलिया पकडा करता है। पकड पकडकर घर म पानी भरे घड म उन्हे जिंदा रखता है। हाट के दिन उसकी बीवी उन्हे बेचने लाती है। ठीक वहीं पर बेचती है, जहा पर कुम्हारों

के वतन बिक्ते हैं। उसके पास ही बिकती है ताड़ और खजूर के पत्ता की चटाई, उसके बगल में मोन्ना टोकरिया सूप और खावावाल। फूल की साजिया भी दो चार होती हैं। मजूर के पत्त का काम बीर-वशी लोग करते हैं। उनके बगल में दूनो गाव के रन्दाता की दा स्त्रिया बतख और बतख के अड लिए बठती हैं। महीन गले से कहती है बतख लोगे जी बतख ! अडे ! लोगे अडे बतख !

आवाज़ लगाने का तरीका खूब है। पहले जरा नम गले से कहता है बतख लोग जी ! उसके बाद जोर से पुकार पडती हैं—ब-त ख ! फिर उसी ऊचाई से कहती है—अडे लोगे अड ! फिर आवाज उतारने लगती है—अ ड ! ब-त ख ! बीच बीच में बतख के कलेज या पजरे को उगली से दबा देती हैं वह भी पॅक पक कर उठता है।

एक ओर रस्सी में खसी बकरी बाध उसमान मिया खडा-खडा हाक लगाता है खसी लो खसी। बकरी। गाय जितना दूध ! उसीके बगल में पर बधी कुछ मुर्गिया होती हैं। उसमान मिया के ग्राहक सब बधे हुए हैं। दे बाबू के परिवार के छोकरे सब रजिस्ट्रार। दारोगा। दो-एक स्कूल-मास्टर भी हैं। हाट के हो हल्ले का छिपाते हुए जसे ही उसमान मिया की आवाज़ उठती है वे लोग खसी का दर-दाम करने आ जाते हैं, मुरगी खरीदकर थली मे भरकर ले जाते हैं। उसमान के बगल में बठती है हमीदन चाची। वह चिल्लाती है मुरगी के अड मुरगी के !

ये सब लोग हाट के पीछे एक तरफ बठते हैं। सामने बठते हैं फल-वाले। फल भी क्या ! गरमी के दिनों आम जामुन कटहल आते हैं। मयूराक्षी के किनारे तरबूजे होते हैं। वहा तरबूज। जाड़ में सकरकदी सुगिया बेर। कुछ दिनों से सतरे आने लगे हैं। उनमें कम आते हैं। आते हैं थोड़े बहुत। और बगाल से बाहर के साहनी लोग बारहो महीने कागज में खजूर सूख बिदाने, बक्सवन्दी दागी अगूर किसमिस और थोडा-बहुत बादाम पिस्ता लाते हैं।

ये सब बाबायान के ठीक सामने बैठते हैं। उसीके पास धरनीदास की छतरी है। कपडा, मसहरी, गमछा। उसीके आधे हिस्से में श्रीमत की मनिहारी और मछली मारने का साज-सरंजाम। उसके बगल में गोविंद बनिया की दुकान सिले सिलाए कपडों की। दोनों तरफ दूर तक छज्जा की कतार चली गई है। मिठाई की दुकान। पकौडी की दुकान। कपडे की कुछ और दुकानें। मनिहारी की। इनके सिवाय बाबायान की सीढ़ी के आस-पास चटाई पर बहुत-सी दुकानें बिछी होती हैं। उनमें से कुम्हारी के माटी के घोडे की दुकान बडी पुरानी है। माटी के घोडे बाबायान में चढाए जाते हैं।

प्रवाद है, विश्वेश्वर के यहां सांड बंधा है। भुवनेश्वर इसीलिए घोडे पर चढते हैं। लेकिन घोडे का एक पांव छोटा होता है। यानी लंगडा।

लटपट दाया पांव और
बाया है लंगडा घोडा—
बाबा भुवनेश्वर का घोडा।

कहते हैं, उसी घोडे पर चढकर रात को बाबा मधेश्वरी स्थान तक जाते हैं।

टिकली की मां यहां तब आई थी, जब वह भरपूर जवान थी। वह आई थी गंगाराम के साथ। अब तो टिकली ही लगभग जवान हो गई है। टिकली की मां कहती है, उसने घोडे की टाप सुनी है।

चुनरिया का बाप भी बूढा है। वह भी कहता है कि मैंने भी सुनी है।

जमादार यहां तीन पुश्त से झाड़ूदार हैं। वे कहते हैं, हमने अपने बाप-दादे के मुंह से सुनी है।

इन सबके अलावे दो एक दुकानें किताबों की हैं। सत्यनारायण कथा विष्णु सहस्रनाम। हरिश्चन्द्र नाटक। सचित्र प्रेमपत्र। वशीकरण विद्या कामरूपतन्त्र। और फिर पहाडा और वर्ण-परिचय।

इस हलचल और हो हल्ला में रह रहकर पंडा की वही हांक सुनाई

पडती—हर-हर बम। ब म भुवनेश्वर।

जाडा का यह दिन बड मज का दिन था। पिछली रात करारी सरदी पडी। लेकिन दूसरे दिन दिन ध दा बजत-बजते ताजी धूप निकली। बडी मीठी लग रही थी कि हठात मीठे किनार पर ठ ■ गोशाठाकुर नोबू ने हाक लगाई—

बाबा भुवनेश्वरी
मनोकामना पूरी करो।
हर हर बम। हर-हर बम। ब म भुवनेश्वर।

धरनीदास ने अचरज स ताककर देखा। कहा—नित्तो ठाकुर का लडका! यह तो स्कूल म पढता था। इसकी फूआ कहा करती थी नोबू हाकिम होगा। सो

मालती हस पडी थी—ही ही ही ही।

श्रीमत से भी नही रहा गया। वह भी हसा। सरदियो मे मछली मारने के सरजाम कम बिकते हैं। इसलिए श्रीमत का मन मिजाज ठीक नही रहता। फिर भी वह हसा।

धरनी ने कहा हस दिए!

श्रीमत बोला यह ठाकुर भी खूब ठाकुर है! कल

मालती फिर खिलखिलाकर हस पडी।

श्रीमत ने आदि से अत तक कल साझवाली घटना कह सुनाई। धरनीदास भी खूब हसा। बोला यह लडका गुठली है जी। बो दो तो पेड उग आए! ऐं!

—गुठली भी जो-सो नही। जादू की गुठली। गगाराम के जादू की गुठली की याद है?

एक आवारा किस्म का जादूगर कुछ दिनो के लिए इस हाट के बरगद तले आ रहा था। गगाराम। वह साप पकडता था। साप का जहर निचोडकर गाजे के साथ पीता था। वह इस टिक्ली की मा के साथ यहा आया था। उस समय टिक्ली की मा जवान थी। वही गगा

राम गुठली का जादू दिखाता था। एक सूखी गुठली को जमीन में गाड़ देता। फिर उसपर पानी डालकर उसे टोकरी से ढक देता। जरा देर में टोकरी को उठा लेता। लोग देखते कि पेड़ उग आया है।

धरनीदास ने कहा, ठीक ही कहा तुमने। वही गुठली है। यास का डंडा उठाकर मास्टर का। कहते-कहते कोक करके वह जोरों से हंस पड़ा।

धरनी को याद है, ऐन इसी समय बाबुल के नेतिहर हरिदास के बगल की बिसात के पास एक शोरगुल-सा मचा।

मार मार! पकड़!

—क्या हो गया?—धरनी ने गरदन उठाई।

—और क्या होगा? चोरी!—श्रीमन ने कहा।

मालती देखने के लिए दौड़ पड़ी। हां, चोरी ही थी। दर माल करते-करते मरी वाउरिन ने जाने कब एक बगन अपने अंचरे में छिपा लिया था। हरिदास की नजर नहीं पड़ी थी। दर में पटरी नहीं बैठी और मरी उठने लगी कि नजर उसके अंचरे पर गई। और लप से उसने उसका हाथ पकड़ लिया। कसकर हाथ पकड़ना था कि बगन छप से माटी पर गिर गया। और, बगन का इधर गिरना, उधर मरी की पीठ पर हरिदास का गमागम मुक्का। सिर्फ हरिदास के ही नहीं, औरों के भी मुक्के पड़ने लगे। मरी की पीठ पर और भी मुक्के पड़ते लेकिन दोनों हाथों से भीड़ को चीरते हुए खोकाठाकुर वहां आ पहुंचा और धमकाकर सब रोक रोक दिया। लड़का था, जोर जो कितना था उसे, परंतु हटो-हटो की वह चीख मचाई और उस चीख में ऐसा एक तेज था कि सबने हटकर उसे आने की जगह बना दी। खोकाठाकुर ने दोनों हाथ उठाकर कहा, रुको। हट जाओ।

कपाल पर भभूत का टीका, गले में जनेऊ दमकता रंग, खूबसूरत चेहरा—खोकाठाकुर ने जैसे जादू चला दिया। उस एक आदमी को वे सब टाल नहीं सके। था तो वह लड़का लेकिन उसके अंदर से मानो

दूसरा एक आदमी निकल आया। और उसने फसला भी किया। मरी के बाल बिखर गए थे, बहुत से टूट भी गए थे, बदन का कपडा भी खुल गया था फट भी गया था—सारे बदन म धूल लग गई थी, लेकिन अभी तक वह रोई नहीं थी सिफ चीख रही थी। हर थप्पड और मक्के के साथ वह चीख उठती थी—बाप रे, अरे बाप रे! अब मत मारो। बाप रे! अब जब थप्पड मुक्के की बौछार थम गई तो अपने बचानेवाले खाका ठाकुर के पाव पकडकर वह फुक्का फाडकर रो उठी—ओ ठाकुर, बाप मेरे मर गई मैं तो। तुम्हारे परो पडती हू, मुझे बचा लो बाबा।

लोग आग हो हो करके हस पडे।

ठाकुर ने कहा, रुको रुको।

सभी थम गए। ठाकुर ने पूछा तुमने बगन क्यो चुराया?

—मुझसे कसूर बन पडा बाबा। नाक कान मलती हू। अब कभी ऐसा नहीं करूगी! एक ही लिया था ज्यादा नहीं लिया। उसके लिए अनगिनती मुक्के खा चुकी। अब मत मारो मेरे बाप!

खोकाठाकुर ने कहा जरा कोई चूनावाले के पास तो जाओ। थोडा सा चूना माग लाओ। हरामजादी के चेहरे पर चूना लगा दो!

लोग उमग उठे। समझ गए कि मरी के मुह पर चूना लगाएगे। मरी जी जान से चीखने लगी। अजी ओ ठाकुर एक बगन के लिए मुह मे चूना मत लगाओ बाबा फूल होकर फूट निकलेगा बाबा शिव का थान है।

मगर ठाकुर ने एक नहीं सुनी। मरी के दोनो गालो पर कपाल पर चूना लगाया और कहा जा!

मरी उठी और किसी तरह हाट से भाग गई। कुछ दूर जाने के बाद उसका रूप बदल गया। उसने कपडे को कमर मे कस लिया बिखरे बालो को हाथ से समालते हुए चिल्लाने लगी—सारा कसूर केवल मरी का। इसलिए कि मरी बुढ्ढी है। और वह टिक्ली भर भर मुट्ठी हरी मिच और नीबू उठा उठाकर खोइचे म भरी जा रही है सो—सो? और वह

चुनिरिया ? उसने सतरा उठा लिया। एँ ! और वे बाबू लोग—देखने-परखने में मिच-नीबू जेब में भरते चले जा रहे हैं। जरा ले तो तलाशी उनकी जेब की। ओ, इस चून से मेरा कुछ होना हवाना नहीं। धोते ही चला जाएगा। एक बैंगन के लिए बशुमार मुक्के !

हाट के लोग फिर अपनी बेची-खरीद में मशगूल हो गए थे। हरिदास फिर आवाज लगाने लगा था—यह बगन बाबुल का है। मक्खन है मक्खन। मक्खन को भी इसके लिए फेंक देना पड़ता है।

—नया आलू ! नया आलू !

—चार हाथ की कार। फीता !

धरनीदास भी बोल पड़ा—तात की साड़ी। नक्शेदार कोर। चार खाना, डोरिया। लाल अंगोछा।

दो वय विलासिनी रसिक औरतें उसकी दुकान के सामने से जा रही थीं। रसिकदास ने कहा, आओ।

श्रीमत ने हाँक लगाई—तरल आलता ! खुशबू तेल !

दोनों स्त्रियाँ ठिठक गईं। यह उसकी देह में ठोकर लगाकर इशारे से खड़ी हो गईं। एक ने कहा, सस्ता कि महँगा ?

मालती जाने कब लौटकर अपने बाप के पास आ बैठी थी। उसने कहा, बप्पा खोकाठाकुर।

खोकाठाकुर ही था। उसने उन दोनों स्त्रियों से कहा ऐ, हट जा। सुनती है ?

—अरे बाप रे ! गँहुअन का बच्चा !

हट गईं वे।

नोबू धरनीदास की दुकान पर खड़ा हुआ। गमछा मांगा।—अच्छा बड़ा-सा गमछा है कोई ? तुम्हारा यह लाल गमछा नहीं। सादी जमीन हो। है ?

—क्यों नहीं। क्या कीजिएगा ?

—गमछा लेकर कोई करता क्या है ?

घरनीदास लेकिन इससे अप्रतिभ नहीं हुआ। बोला, गमछा तो बदन पोछते हैं। आपलोग बदन पर रखकर घूमते भी तो हैं!

मालती बोल उठी थी पढ़े गमछे की पूजा भी करते हैं। बाम्हन लोग कपड़े पर लपेट कर रसोई भी बनाते हैं परोसते हैं।

—ओ! वही लड़की। बकरी के लिए पुलिस का खबर देने की धमकी देती थी। बड़ी बक्की है।

—और तुम जो घास उठाकर मास्टर को मारने दौड़ते हो।

—उस कमबख्त ने मेरे गुरु के नाम को क्या पकड़े?

बड़ा-सा एक गमछा निकालकर बगलते हुए धरनी ने कहा यह है। न जचे तो तौलिया जैसा साढ़े तीन हाथ का एक गमछा चला है सथिया के बाज़ार से सोमवार को ला दूंगा।

—ला दोगे? मैं वैसा ही खोज रहा हूं।

—मैं न भी जाऊं तो श्रीमत तो जाएगा ही। वह ला देगा।

—क्यों श्रीमत?

—जी हां। मैं ला दूंगा।

—हां! समझ लो, नहीं लाया तो अबकी तुम्हारी बकरी को हरगिज नहीं छोड़ूंगा।

—हमलोग उसे बांधकर रखेंगे। अब जाएगी ही नहीं। छूटते ही मालती कह उठी।

—मैं मन्तर के जोर से बकरी को ले आऊंगा।

मालती का चेहरा उड़ गया था।

श्रीमत ने कहा मैं ठीक ला दूंगा। देख लीजिएगा आप।

जाते-जाते नाबू रुक गया। बोला तुम हर हाट के दिन सथिया जाते हो?

—नहीं। हर हाट पर नहीं जाता। रविवार की हाट बड़ी होती है। रविवार को ही जाता हूं।

—मेरा एक और काम कर दोगे?

—कौन-सा काम ? कहिए !

—मेरे पिताजी का बाया-तबला और पखावज टूटा फूटा पड़ा है। मैंने सुना है, सैंथिया की हाट में बजनिए आते हैं। बनवाकर ला दोगे ?

—जी हां ! हमारे कीर्तन दल का मृदंग वही लोग मढ़ते हैं। जान-पहचान है उनसे। दे दीजिएगा। मुसीबत ले आना, ले जाना की है।

—एक मजूर की मजूरी मैं दे दूंगा।

—और मेरे बाबूजी को ?

—तू होती तो ठिठुआ देता। श्रीमत को आशीर्वाद दूंगा।

—उहूं। एक दिन मेरे घर आकर गाना सुनाना होगा।

—सो सुना दूंगा मैं।

नाबू ठाकुर चला गया। धरनीदास अवाक, मालती उसकी राह की तरफ ताकते रह गए। हाट ढलने में जम गई थी। चार सवा चार बज रहे थे। भीड़ गमगम कर रही थी। मरदिया के दिन। धान की फसल कट चुकी थी। लोगों की टेंट में पैसे हैं। और फिर गरमी नहीं है। बुरी बात में एक ही थी कि धूल था। उधर गन्धेश्वरी धाम की गद्दियों में धान लदी गाड़ियां खड़ी। गंगा के उस पार से आलू, शकर-कंदी, मिर्च, मसूर, चना आया है। खरीद बिक्री खूब। उस भीड़ में छोटा-सा ठाकुर खो गया। धरनीदास बोला, यह ठाकुर पक्का पड़ा होगा।

—क्या भई कहां है तुम्हारी हारिया साड़ी और गमछा ? दिखाओ। और तुम्हारा तरल आलता हो कहां है ?

वे दोनों औरतें फिर से आ गई। धरनी ने कहा, आओ ! ठीक से बैठ जाओ। खड़े खड़े भी देखना दिखाना होता है।

श्रीमत ने कहा, माला, आ तो। ठाकुर से कह दे आज ही बाया तबला और पखावज भेज दें।

जानकर ही श्रीमत ने माला को हटाया वहां से। ये दोनों औरतें

रसिक से और कुछ ज्यादा लगा। उनसे कुछ मौज मजे की डगमग बात होगी।

माला की भीड़ में ठाकुर मिला नहीं। वह बाबाथान के पडतले खडी हो गई। लोग वहां ढेला बांध रहे थे। उसने भी एक ढेला बांधने की सोची—जिसमें उस ठाकुर जैसा दूल्हा मिले! खूब एकांत में जाकर बांधेगी। लेकिन आखिर तक नहीं बांधा। छि! और फिर ठाकुर तो बाम्हन है!

बात आखिर आज की तो है नहीं, बहुत दिनों की है।

धरनीदास की छपरी में बैठकर मालती ने मन ही मन लेखा लगाकर देखा यह लगभग सौ साल पहले की बात है। उस रोज भी वह बप्पा की मिठाई दुकान के पास यहीं पर बांस की खूंटी से टिकी बैठी थी। यही खूंटी थी शायद।

मालती ने पूछा, चाचा, ये वही खूंटिया हैं, है न? रंग करवाया है।

धरनी ने कहा, नहीं बिटिया। नई खूंटिया है। हाट की तरक्की नहीं देख रही हो। अब भला पुरानी से गुजारा है! जैसा काल, वैसी चाल। हाट जम गई। गुड़ ने पक्के का मकान उठाया। श्रीमती की मिठाई की दुकान के सामने पक्के का बरामदा बन गया। सत्य ने भी ऐसा ही किया। वह दासो सरकार के लड़के ने लकड़ी का कारोबार शुरू कर दिया। चेयर-टेबिल बनवा रहा है। उधर पश्चिम की तरफ देखो ईंटें पड़ी हैं। पास का जो फलवाला है, वह छपरी को पक्का बनाएगा। सबलोक 'इलेट्रिक' लेंगे। मैं मसहरी बेचता हूं मोटे कपड़े बेचता हूं। मैं पक्का कहां से बनवाऊं? मैंने भागलपुर से बांस मंगवाए। देख नहीं रही हो, कैसे सीधे और मोटे हैं! रंग लगवाया। और क्या करता?

ख़ाहिश थी खमे पर टिन की छौनी करा दू। अभी भी ख़ाहिश है। मगर तुमलोग हिस्सा न छोडो तो कसे बनवाऊ? तुम्हारे बाप ने मुझे दो सौ रुपये देकर छपरी का आधा हिस्सा खरीदा था। चाहता तो बिना जताए जोर-जबरदस्ती कब का पक्का बना लेता मगर कसे म धरम को क्या जवाब दूगा?

मालती चुप रही। वह सोच रही थी।

धरती ने कहा, मैंने तुम्हारे बाप से कहा था बिटिया। कहा था श्रीमत आदमी सब कुछ बेचकर खाता है भया धरम बेचकर नही खाता। तूने बराम्हन के बेटे की वह जायदाद—जायदाद भी क्या पोखरे का हिस्सा और पाच बीघा ऊसर परती—यह लेकर तूने अच्छा नही किया।

वह जरा रुक गया। मालती भी चुप ही रही। दोनो के आगे अब हाट का गुलगपाडा स्पष्ट हो उठा। मानो हाट पीछे की तरफ से घूमकर आखो के सामने आ खडी हुई। उफ कितने आदमी! पहले भी लोग होते थे बहुत, मगर इतने अधिक नही। जरा नजर उठाओ कि सिर ही सिर नजर आते हैं। माथे का घूघट तक दिखाई नहीं पडता। जरा आख झुकाकर दखो तो कुरती की छीट और खाली बदन। औरतो की कुरती के अनेक प्रकार के रग। हो हल्ला! कितने भले लोग! कुछ नए फशन की औरतें आखो मे ऐनक, परो म जूते? वह वहा सामने उस तरफ एक कोई बडे से एक सफद मुरगे को डना पकडकर ऊपर उठाए हुए है—मुरगा कें-कें कर उठा है। कोई पीडा हो रही है। उस समय लोग खूब छिप छिपाकर मुरगी खरीदते थे। आज मुरगी को ऊपर उठाकर चीख रहा है—विलायती मुरगी! विलायती मुरगी!

दो खरीदार आए। मसहरी है? बढिया मसहरी?

—है क्या नही! आओ बठो! कं हाथ की?

—खासी बडी चाहिए। बाल बच्चा के साथ सोना है। पांच छे जने

के लायक ।

—चार-पांच हाथ का दू ?

—दो ।

धरनीदास ने मसहरी निकालकर सामने फेंक दी ! देखो ! जरा बुनाई पर गौर करो । सूता देख लो । खोलो—नापकर देखो । चीज लेनी है, देख-सुनकर लो । देखो—

यह उठ खड़ा हुआ । यह रहा, अठारह इंचवाला गज । तुम्हारा हाथ बड़ा है । एक इंच बड़ा । नापो ।

मालती की माला के सामने से हाट फिर छूट जाने लगी । हाट हटने लगी कि उसकी दृष्टि । दृष्टि मन के अंदर की ओर हटने लगी ।—हां, तोबूठाकुर, खोकाठाकुर को उसके बाप ने ठग लिया था । ठगा नहीं था फुसला लिया था । बाया-तबला मढ़वाकर ला देने के बाद से ही खोकाठाकुर से जान-पहचान शुरू हुई । मढ़ाई का दाम भी दिया था, एक मजूरे की मजूरी भी दी थी ।

याद है उसे, मौसी ने कहा था और मेरी मजूरी ठाकुर ? खोका-ठाकुर ने कहा ज्यादा पैसे तो मैं लाया नहीं । श्रीमत ने कहा तो नहीं था ।

—मेरा नसीब ! तुमने माला को कहा है दूंगा ।

माला बोल उठी गीत सुनाने को कहती है ।

—ओ ! मगर गीत क्या जब-तब गाया जाता है ?

श्रीमत ने कहा, अजी जब तब जैसा-तैसा तो गाया जाता है । गा दीजिए न !

खोकाठाकुर पालथी मारकर बैठ गया । गुनगुनाकर सुर ठीक किया । श्रीमत बोला, रुक जाइए जरा मैं मृदंग उठा लाऊं । मृदंग लाकर उसने दाएं हाथ से थाप लगाई बाएं से गुब गुब निकाला । कहा हां अब शुरू होइए ।

खोकाठाकुर ने कहा, मृदंग रख दो । सुर में बंधा नहीं है । ढब ढब

कर रहा है। दोनों हाथ कपाल तक ले जाकर कहा इससे संगीत का अपमान होता है। और उसने गाना शुरू किया। गीत की कुछ कड़ियां आज भी याद हैं—

ढूंढे ही मिल सकता है वह फूल।
किस वन फूल। किस मन फल।
किस छन फूला फूल।

और याद नहीं पड़ता। बड़ी अच्छी धुन थी। बहुत ही अच्छी। चंपा ने उसे दुबारा गवाया था। उसके बाद भी जब-तब कहा करती, वही गीत जरा फिर से सुना दो ठाकुर! तारीफ करती थी आप जैसे साला ठाकुर बना ही गीत भी सुनहला!

घर में जब चंपा और मालती ही होतीं तो मौसी वही गीत गाया करती। नाचती। कहती अरे तुम भी गाओ मौसी! आओ हम दोनों नाचें! नाच का गीत है। अकेले नहीं होता!

वह भी गाती। वह भी नाचती। चंपा कहती यह फूल मिलता तो माला गूंथकर गले में डालती और जमना में कूद पड़ती! जानती हो!

पहले पहल वह स्वर्ग का पारिजात सोचती। एक दिन आली थी पामागी कहा? सरग का परिजात है।

चंपा ने हाथ मुंह नचाकर कहा था अरी नहीं मौसी नहीं। यह फूल धरती पर ही फूलता है। मालती के कान के पास मुंह ले जाकर कहा प्रेम का फूल रे पगली प्रेम का फूल!

प्रेम का फूल! मालती को लाज लगी थी। प्रेम क्या है उस समय वह ठीक-ठीक जानती नहीं थी लेकिन लाज लिपटी भीनी भीनी महक मिलने लगी थी। और यह भी जाना था कि प्रेम स्त्री-पुरुष में होता है। ब्याह के उपरान्त। प्रेम होने से ब्याह होता है ब्याह होने से प्रेम होता है। चंपा की बात से शर्माकर वह बोली—धुर—

चंपा ने कहा हाओ! ममलागी कहीं! यह कहती हो गई इस

फूल को चुनने के लिए जाने कितनी रातें आखों म बितानी पड़ती हैं। अरी छोरी, प्रेम की बातो मे रात प्रात हो जाती है। तुम्हारा भी फूलेगा यह फूल ! सबके तो नहीं फूलता है न। ब्याह शादी होने पर भी नहीं फलता। फूलने से राधा जसी पागल होना पडता है।

जाने कितनी बातें याद आती हैं।

उसके बाप से बड़ी भारी भूल हुई थी। उसी दिन उसे गाजा पिला दिया। किसी बुरी नीयत से नही। उस समय तक उसमे कोई बदनीयत नहीं थी। वष्णव था। वष्णव धर्म का इतना ही निभाता था कि मास नहीं खाता। चुटिया रखनी थी। गले मे कठी। और गाजा पीता था। गाजा तो बरनी चाचा भी पीता था। अब भी पीता ही होगा। उस रोज जब लाकाठाकुर इधर गीत गा रहा था वह उधर गाजा मल रहा था। गीत खत्म हो गया तो लाकाठाकुर उठ खडा हुआ। श्रीमत की गाजा की तयारी देखी। बोल उठा, वाह तुम्हारी तो खासी व्यवस्था है देखता हू। चदन की खुशबू आ रही है।

—बगर व्यवस्था के पीने म मजा नहीं आता।

श्रीमत उस समय छुरी से चदन की खुरच रहा था। चदन का बही चूरा गाजे म मिलाएगा।

लाकाठाकुर ने कहा बेशक ! ऐसा न हो तो शिव भला गाजा क्यो पीने लगे ? क्या ?

श्रीमत ने कहा तुम पियो न ठाकुर ! तुम तो शिव के पडे हो !

उहू। मेरा गला खराब हो जाएगा।

—गला खराब होगा ! किसने कहा ? उतना बडा उस्ताद है वह धरन मुखर्जी हू, गान का दम लगाए बिना गला ही नही खुलता। कहता है एकाग्रता कैसे आएगी ? ध्यान बिना गान नहीं होता।

—ठीक कहा। ध्यान बिना गान नहीं होता।

—पीकर देखो न !

—उहू। सिर चकराएगा। भग पीता हू। भग म ही ऐसा

नशा है कि !

—भग का नशा बडा पाजी नशा होता है। बित्ती सार म विष जसा। भग मत पिया करो।

—सच कहते हो शरत उस्ताद पीता है ?

—गाजे की चिलम छूकर कहता हू। बाबा भुवनेश्वर की कसम !

—एक दिन ले चलोगे मुझे शरत् उस्ताद के पास ?

—उसके पास जाने की क्या पडी है ? तुम कहो न, मैं उसे तुम्हारे यहा ले आता हू। पहले एक रुपये और गाजा देना। अच्छी तरह से खिलाना पिलाना। मुखर्जी उसीसे बाग-बाग हो जाएगा।

—महीने म दो दिन तीन तीरा करू तो क्या लेंगे ?

—पूछ देखूगा। मगर तुम्हारे जसा चेला मिल ता दौडकर सिखा एगे ! तुम्हारे पिता से अच्छी पटती थी। दोना न गाजा शराब खूब पी मौज किया। पूछू उनस ?

—पूछो।

—पूछूगा। कल ही पूछगा। सथिया की तरफ उनके बहुत-स चेले हैं न ! अक्सर मुलाकात होती है। मरे हाथ का गाजा उन्ह बडा पसद है। कहते हैं, ऐसा तार और किसी के मलन म नही होता है श्रीमन।

इतन म श्रीमत ने चिलम पर सुलगकर सुख हुइ टिकिया को रक्खा। चढाकर बढाते हुए कहा लो प्रसाद बना दो। मन ही मन बाबा भुवनेश्वर को याद करक कहो पियो बाबा। उसके बाद चिलम मुझे दो। मैं कायदे से पकडू। तुम अभी ठीक पकड नही पाओगे। पहल धीरे धीरे फुस फुस करके खींचो उडा दो। हा धीरे धीरे। अब जोर से उडाओ। अब एक दम खीचकर धुए को घोंटो ! धुए को निकलन मत दो। दबाए रहो। खर, थोडा छट गया तो गया। पहला दिन है। नशा कम होगा !

कम नहीं, उतने से ही उसे काफी नशा हो गया था। मालती का

पिता जब दम लगा रहा था, तो रोज़ ठाकुर वहां बैठा ही था। बुत बना बैठा था। एक शब्द नहीं बोला। याद है मालती को, वह दूर बैठी घबराई हुई देख रही थी। इतना सा लड़का! देखते ही देखते उसका मुंह कैसा सूखा-सा हुआ जा रहा था। आंखें लाल हो आई थीं। कैसा टुकुर टुकुर ताक रहा था।

श्रीमत ने आखिरी दम खींचा। चिलम को ठाकुर की तरफ बढ़ाकर वह धुआं घोट बैठा था। बात करने की गुंजाइश नहीं थी—बात की नहीं कि रोका हुआ धुआं निकल पड़ेगा। लेकिन ठाकुर को उधर का कोई होश ही नहीं था। माला के दाएं ने बाएं हाथ से उसे ज़रा ठेला। ठाकुर ने तब कहीं ऊं किया।

श्रीमत ने हुस से धुएं को ऊपर छोड़ा और कहा लो, और एकदम लगाओ।

ठाकुर ने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में कहा—नहीं। और फिर न कोई बात न चीत। हाथ पांव फैलाकर वह वहीं ओसारे पर पड़ गया।

—लो। लेट गए जो!

ठाकुर क्या तो कहना चाह रहा था। बोल नहीं पाया। कौंक कर करके हिचकियां लेने लगा। ज़रा देर में बोला—पानी!

चंपा फौरन ग्लास में पानी ले आई। ठाकुर ने पूरा का पूरा गिलास ढकाढक पी लिया। श्रीमत ने लोटे में पानी लाकर थपथप करके उसके सिर पर थोपा। आंख मुंह धो दिया।

चंपा बोली, अरे कर क्या रहे हो? जाड़े के दिन हैं—

हंसकर श्रीमत ने कहा, कुछ भी नहीं होने का। ठाकुर अभी डुबकी लगाकर भुवन-सरोवर पार हो जाएगा!

और सचमुच ही ठाकुर ने कहा, थोड़ा-सा पानी और डालो।

उस रोज़ श्रीमत उसे अपने साथ ले जाकर घर पहुंचा आया। लेकिन गजब दूसरे दिन ठाकुर आप ही उसके घर आया।

—श्रीमत!

चपा हस पडी थी। उसकी खिलखिलाहट थम नहीं रही थी। मालती ने पूछा हस क्या रही हो ? उसे गुस्सा भी रहा था। चपा बोली मौसी मछली यह कतला है !

—मछली !

—हा। यह ठाकुर। चारा चुगन आया है। ताजा ताजा !

ठाकुर अदर आया श्रीमत कहा है ?

चपा की हसी न और जोर पकडा। मालती बोली वाबा शायद गए हैं।

—ओ ! लौटा नही है ?

—न लौटे। आप बठिए। मैं आपको पिलाती हू।—

चपा अदर गई। वहा से एक पुडिया ले आई। ठाकुर क हाथ म देकर बोली इसे चूरकर बीडी के अदर डालकर पीजिए। हा, आग दीजिए बीडी को। हा।

ठाकुर ने वह बीडी पी। कहा यह अच्छा है। कोइ झमेला नही। और भग की तरह सर भी नहा घूम रहा है। न न जरा जरा घूम रहा है।

इसके बाद ठाकुर चुप हो गया। उधर चपा खिलखिल हसती ही जा रही थी। जरा देर म ठाकुर न भी हसना शुरू किया। उनके साथ मालती भी हसने लगी। कुछ देर के बाद मौसी ने उसे खान को बताना और पीने को पानी दिया। देकर गीत गाने को कहा। ठाकुर ने गाया भी। एक नही तीन चार गीत। मौसी ने पहले ही दरवाजा बद कर दिया था। नही तो गीत इतना सुदर गीत सुनकर अडोस पडोस के लोग आए बिना हरगिज न मानेंगे।

मालती के पिता ने इसके बाद उस्ताद भरत मुखर्जी को जुटा दिया था। ठाकुर का गला सुनकर भरत मुखर्जी बड़ा खुश हुआ। बोला तुम बहुत बड़े उस्ताद होगे।

भरत मुखर्जी का डेरा नाथूठाकुर के हा यहा हुआ। महीने म दो

यार आते, हर बार तीन चार दिन रह जाते। खोकाठाकुर के यहां छोटी-मोटी दावत ही हुआ करती। फूआ चीखती चिल्लाती। लेकिन ठाकुर कहता, अगर चीख पुकार मचानी हो, तो जहां चाहो, चली जाओ। यहां मत चिल्लाओ। ये मेरे गुरु हैं।

फूआ कहती, अरे, इतना जुटेगा कहां से रे हरामजादा! पूंजी कहने को तो बस पांच बीघा जमीन और देह-पोखरे का बारह आना हिस्सा है। बाबाधाम में माल में सोलह दिन की पार्टी!

ठाकुर कहता, आसमान से टपकेगा, जमीन फोड़कर आएगा। तुम्हें इसकी फिक्र नहीं करनी है।

और जुटता भी जाता। नोबू उधार लाता। उधार श्रीमत दिया करता।

उधार के वही रुपये दुकान में, मालती दो-तीन दिन फूआ भतीजे का झगड़ा देख आई थी। उन दिनों ठाकुर सुबह शाम, रात दिन में तीन चार बार उसके यहां गांजा पिया करता था। तीसरे पहर का जम घट इमोके यहां जमा करता। उस्तादजी आते, खोकाठाकुर आता, उस्तादजी के दो-तीन चेले चांटी आते। गांजा चला करता।

उस्तादजी ने श्रीमत से माला को स्कूल में भर्ती कराने की बात कही थी। कहा, अरे भई श्रीमत बिटिया की उमर क्या हुई होगी?

—आठ साल होगी मुखर्जी बाबू।

—बचपन में ही इसका ब्याह करा दोगे क्या?

—जी नहीं। वह समय अब रहा भला!

—तो? स्कूल क्या नहीं भेजना है? एँ! औरतें अब हाकिम हो रही हैं। चुनाव में खड़ी होती हैं। पैरों में जूते पहनती हैं। मुल्क अब आजाद है। इस स्कूल भेजो। या फिर गला अच्छा हो तो संगीत सिखाओ। रेडियो में ग्रामोफोन में गाएगी।

श्रीमत ने कहा गला-वला तो नहीं है। आपने ठीक ही कहा। स्कूल ही भेजूंगा।

—हां, भेज। दीदियां ही तो पढाती होगी ? है न ?

—हां। तीन शिक्षिकाएं है।

—फिर क्या है ? कर दे दाखिल। पहले खुद तू पहली दूसरी किताब में जरा सहारा दे देना। उसके बाद वह ठीक ही पढेगी। यहां पास कर ले तो सैंथिया भेज देना। यह भी स्कूल की दीदी बन जाएगी। तेरा बाप अवधूत था। भीख मांगता था। तूने खानसामागिरी शुरू की थी अब दुकानदार बना है। तेरी बेटी तो तिलक लगाकर जूडा बांधे मजीरा बजा बजाकर गाती हुई नही फिरेगी। वह मास्टरनी होगी। मेरे लडके को देख न स्कूल मे दाखिल करा दिया है। कह दिया है गीत सीखना हो तो रेडियो ग्रामोफोन का गीत सीख। सो सीखा है उसने। और पढ भी रहा है। और फिर हिंदू महासभा भी करता है। गीत गाना आता है न। ओपनिंग सांग गाता है।

श्रीमत ने कहा, लडका आपका बडा चतुर चालाक है।

—हां जी। नही तो लीडर कैसे हो सकता है ? पढता भी बेजा नही है। तेरी बिटिया भी तो बडी तेज है। आख मुह भी खूब अच्छा है रंग भी साफ सुंदर। बाल भी घने लबे हैं—खासी दीदीजी होगी यह। मगर हां स्कूल की ये दीदियां देखने म कैसी है ?

—है तो काली काली ही, मगर बन ठनकर रहती हैं न। ले ले बना गाजा। ओ, नोबू बना रहे हो ?

—देर हुई जा रही है। *जल्दी करो। सूरज डूब चला। —और आ आ करके तान भाजना शुरू कर दिया।*

माला इसके बाद से ही स्कूल जाने लगी थी। पहली पोथी पढ चुकी थी किंतु पहली पोथीवाले दर्जे से ही शुरू किया। सवेर उस मगो- गमा को खोज लाकर बाध देती और बगल मे बस्ता दबाए स्कूल चली जाती।

स्कूल उसका नोबूठाकुर के घर के सामने था। एक तालाब के इस पार उस पार। नोबूठाकुर सवेरे ही से तानपूरे पर आ आ करता

रहता। आ आ आ। आ आ आ। आ आ आ आ आ आ आ। क्रम से ऊपर को चढ़ता जाना। फिर उतारना—आ आ आ आ आ।

और तालाब के उधरवाले घाट पर बैठी फूआ कभी अपनी किस्मत को गाली देती, कभी दिवगत भाई के बाप के लिए रोया करती। ठाकुर ने उसे अलग कर दिया था। फूआ दे बाबू के यहा रसोईदारिन का काम करती थी।

लड़कियां नोबू को मुंह चिढ़ातीं—ए ए-ए। दे बाबू के घर भी कुछ किया तो म म में कहती। बकरी का मिमियाना। घंटी बजती कि लड़कियां स्कूल के अंदर चली आतीं। माला के दरजे में एक ही साथ आठ-दस लड़कियां कमेय-क्षय, क्षमेय-क्षय शुरू कर देतीं। दूसरे दर्जे में एक ही साथ कई लड़कियां पढ़ने लगतीं—हुगली जिले में मुहम्मद मुहसिन नाम के एक महात्मा मुसलमान थे। हुगली जिले में—

किसी दरजे में दीदीजी कहती—एक लाख पांच हजार तीन सौ पचीस। लिखो, एक लाख पांच हजार

इस समय नोबूठाकुर का गला कभी-कभी सुनाई पड़ता, कभी-कभी नहीं सुनाई पड़ता। टिफिन की घंटी बजती कि सारी लड़कियां तालाब के घाट पर आ जातीं। साफ कपड़े में किसीके मूढ़ी होती, किसीके और कुछ। पानी में भिगोकर बरामदे में बैठकर खाएंगे। उस समय तालाब के उस पार विपिन मछेरा बेटे के साथ बैठा तंबाकू पीता होता और पानी में फेंकने के लिए हाथ पर जाल सजाता होता। नोबूठाकुर खड़ा रहता मछली के इंतजार में। उस्तादजी हैं, उनके चेले चांटे हैं। मछली चाहिए। बड़ी मछलियां तो कब की खत्म हो चुकी हैं—अब पोठिया जैसी छोटी मछलियां ही हैं। तालाब ठाकुर का ही है। मछेरों को बंटाया दिया गया है। विपिन को। मछली पकड़वाकर ठाकुर उसी तालाब में नहाता। समय बंधा हुआ था। लड़कियों की छुट्टी होती दस बजे। घंटी बजती और शोरगुल करती हुई लड़कियां बाहर निकल पड़तीं। नोबूठाकुर उस समय गले भर पानी में खड़ा तान छेड़ता

होता—ग्रा-ग्रा ग्रा।

लडकिया हसते हसते बेहाल हो जाती। गले भर पानी म खडा नोवू-ठाकुर भी हसता !

मालती को माया होती। खूब तो ग्रपने ग्राप गा रहे हो ठाकुर। कितनी सुदर ग्रावाज। कितना ग्रच्छा गाना ! ढूढे ही मिल सकता है यह फूल ! ऐसे ऐसे गीतो को छोड जान सुनकर गले को मोटा करके क्या जो ग्रा-ग्रा कर रहे हो ! शरतमुखर्जी उस्ताद है कि खाक ! कहने का भी उपाय नही। माला का बाप श्रीमत इस उमर मे मुखर्जी से बजाना सीख रहा है।

बहुत दिना स कह-कह कहते हुए भी मालती कह नही सकी। ठाकुर नहाकर तालाब से निकल जाता। भुवनेश्वर थान जाता है। गहागिरी है। सिंदूर का टीका लगा लेगा। ग्राजकल तो बाबा के रुद्राक्ष की माला भी गल म डाल ली है।

कितने ही दिन हाथ-मुह धोने का बहाना करके वह तालाब के इस पार घाट म उतरी। हाथ पाव से पानी को हिलाती रही। लेकिन ठाकुर ग्रपनी उसी लगन से ग्र ग्रा करता रहता या नहाकर जय शिवनाकर जय भुवनेश्वर हर-हर बम करता हुग्रा उठकर चला जाता।

यही तालाब है।

धरनी बाबा न इसीके बारे म कहा है। मालती के बाप ने ठाकुर से इसीका लिया था। इसी तालाब से।

प्रधानन हाट के सारे शोरगुल को दबाते हुए एक बडी ऊची हसी ने सबका भाटा पकडकर खींचा—कहा—

पलट कर दखा।

क्या हो गया ?

एक जगह स डर के मार लोग भाग रहे हो जसे। ग्रौरतें चीख रही है ग्ररे बाप र ! ऐ मरी मा ! ई ई ई

पुरुप डाट रह हैं—ऐ ऐ !

कुछ सयाल स्त्रिया ताली बजाकर ही-ही हस रही हैं। दूर खडे मर्द लोग ठहाका मार रहे है।

क्या हुआ ?

कि उस भीड म से काला मुहवाला एक हनुमान उछलकर एक आदमी की गरदन पर सवार हो गया। और तुरन्त हुप् करके फिर छलाग लगा बैठा। अबकी माटी पर। उसके एक हाथ म एक कददू था। वहा से फिर उछला। हाट पार करके चला गया सरकार के लकडी के कारखाने के छप्पर पर, वहा से बगल के बरगद पर।

कोई एक आदमी चिल्ला उठा—जय राम!

२

धरनीदास ने कहा—बडा उत्पात मचा रहे हैं कबख्त! पलटन बगान म एक टोली ही उनकी आ जमी है। पलटन बगान माने बड-पीपल-वन का वह जगल, जहा शिवजी की भूत सेना रहती थी। सेटलमेट मे कहा गया है यही रास्ता मुर्शिदाबाद स नवाबी सडक था। इस रास्ते से फौज जाती थी। बर्गिया के हगामे के समय यहा छावनी पडी थी। ये पेड उसी समय के हैं। फौजियो ने लगाए थ।

मालती बोली बहुत बडा हनूमान!

—नर हैं सब। कहा तो कि सयासी हैं। उस दिन किसीन खेदा तो एक न मेरे यहा घुसकर सब तहस-नहस कर दिया।

एक खरीदार था। तात की साडी खरीद रहा था। जो लोग मसहरी खरीदने आए थ व कब चल गए, मालती को उसकी खबर ही नही! वह पुरानी बातो में ही खोई थी। खरीदार ने कहा, कुछ कम कर दीजिए और।

—और कम हो सकता है भला! बनाई का भी खर्च नहीं निकलेगा।

दस ही रुपये लगेंगे। ग्राने पैसे छोड़ दिए। जाइए। बाज़ार में कहीं साढ़े
बारह से कम में मिले तो मेरे पास ग्राइएगा, मैं यों ही दे दूगा। कह रहे
हैं, लड़की को देनी है। ले जाइए। ग्राखिर हम भी लड़की के बाप हैं।

—दीजिए।

खरीदार रुपये देकर चला गया। हाट की हंसी थम गई—मीठी
चीज पर जैसे चींटियां जुट जाती हैं, वैसे ही फिर जम गए लोग। मधु
मक्खी के छत्ते पर मक्खियां जैसा। भन भन भन भन ग्रावाज़। एक-दूसरे
के बदन से लगती हुई चल रही हैं मक्खियां। बीच बीच में एकाध जैसे
पवन की ग्रावाज करती हुई उड़ती है, वैसे ही चीख रहा है—घट गया
ग्रालू का दाम घट गया! कोई घंटा बजा देता है। एक फेरीवाला मुंह में
चोगा लगाकर चिल्ला रहा है। कोई बात सी कोई चीज फूंक रहा है।

सरकस जैसे डम बजाकर कौन तो ग्रा रहा है—टैराराम, टैराराम, टैरे
टैरे-टैरे! एक बांस के डंडे की नोक पर चौकोर बोर्ड पर रंगीन तसवीर।
एक के पहनावे में पाजामा छींट की कमीज—रूखे बिखरे बाल। मुंह में
चोगा लगाकर वह बोलने लगा—भुवनपुर टाकी। नई फिल्म। बिलकुल
नई फिल्म। मुहब्बत का चिराग। मुहब्बत का चिराग। मुख्य भूमिका में
सुनैना वरुण। बस और दो दिन। एक ग्रादमी परचा बांटने लगा।

खरीदार के दिए नोट को टेंट में खोसते हुए धरनी ने कहा—व्यवसाय
का ग्रब हो गया बेटी! यह ग्रब नहीं चलन का। समझी? गाहक का गला
काटे बिना गिरहकटी किए बिना घाटा ही घाटा है। चालीस रुपये से
ज्यादा बेच तो लिया मगर चार रुपया भी नहीं बचेगा। तात लिए बैठा हूं
सूते का पता नहीं। सूता नहीं है सो नहीं। कनक का दाम देना होगा
और इधर बाज़ार में ग्राग लग गई है। गुरमिंट ठूठ हुई बैठी है। कर भी
बहुत कुछ रही है—रास्ता घाट ग्रस्पताल स्कूल—

धरनी की बात में बाधा देकर मालती ने पूछा ग्राजकल पंडो की
चलती कैसी है चाचा?

—उनका ग्रच्छा है बिटिया। ग्रच्छा चल रहा है। इन दो-तीन साल में

अदर ही तो कई ने छप्पर पर टिन चढ़ा लिया। लोगों को पैसे बहुत आ-जा रहे हैं न! मजौनी, ढेला बावना—यह सब बढ़ रहा है। गई थी बाबा थान ?

—नहीं।

—जाते ही देख पाओगी। द बाबुओं ने बाबा का चौतरा बनवाया था पक्के का—उसके चारों तरफ नाम लिख लिखकर संगमरमर का पत्थर लगा दिया है। सुना है मिलवाले उस मारवाड़ी ने इस बार बड़ा मुनाफा किया है। यहां उसने मन्नत मानी थी। वह बाबाथान के चारों तरफ गोल खंभ खड़ा कराके उसपर गुंबज बनवा देगा। ढेला बांधने की तो पूछो ही मत। ढेरों! अपनी आंखों देख ही आओ न।

मालती को याद आया उसका बांधा हुआ भी एक ढेला है। उसने भी बांधा था। खूब छोटी थी जब एक दिन बांधने गई थी। नाम से नहीं बांध सकी। बाद में बांध दिया था। बांधा भी था दूल्हे की कामना से। लेकिन खोकाठाकुर नहीं। खोकाठाकुर तो उस समय गांव घर छोड़कर कहां चला गया था जाने। ढेला उसने बसंत के लिए बांधा था—शरत उस्ताद का लड़का। माला की उम्र उस समय ग्यारह की थी। बसंत की पंद्रह सोलह की। उस बार बसंत चुनाव के समय मुरनपुर में मादिचटर्जी को वोट दिलाने का प्रचार करता फिरता था। मादिचटर्जी हिन्दू महासभा का उम्मीदवार था। बसंत गाता था—

द्रुपदसुता रोती दु:शासन खींचे उसका चीर
जागो नर नारायण, देखत पांडव जैसे वीर।

गाने के बाद भाषण। कहता जुए का दांव लगाकर कांग्रेस आज हाथ-पांव बंधी दासी बन गई है। पाकिस्तान में औरतों की अस्मत लुट रही है—चीख चीखकर रो रही हैं वे। दासों से कुछ बोलते नहीं बनता। बोलने की ताकत नहीं है। दास क्लीव। अब मनुष्य को जगकर खड़ा होना है। नर के हृदय में नारायण का निवास है। सो रहे हैं वे। वे जागें।

सुन सुनकर बदन के रोंगटे खड़े हो जाते।

बसंत भुवनपुर में ही रहता था। खोकाठाकुर के घर में डेरा डाला था। गांव के कुछ छोकरों को जुटा लिया था। शरत उस्ताद के प्राय सभी चेले उसकी बात पर चलते थे। उस्ताद ने खुद सबको कह दिया था। बसंत को प्रादिचटर्जी से तनखा मिलती थी। शरत उस्ताद मकान का किराया लेता था। खोकाठाकुर के मकान पर उस समय उस्तादजी का कब्ज़ा था। कहा करते थे—नोबू मुझे दे गया है।

खोकाठाकुर की फूआ साल भर पहले ही मर चुकी थी। नोबू केंदुली का मेला गया था। वहां से फिर लौटा ही नहीं। नोबू के साथ शरत उस्ताद श्रीमंत धरनीदास—ये लोग भी गए थे। ये लोग लौट आए। वहां नोबू बाऊलों के साथ चला गया। जाते समय कर्ज के बदले श्रीमंत के हाथों अपना पोखर और जमीन बेच गया। घर शरत उस्ताद को दे गया। और भुवनपुर की पंडागिरी अपने फरीकों को छोड़ गया। पंडागिरी का दान या बिक्री केवल पंडा से ही चलती है। वह बाऊल हो गया इस लिए उसकी जात भी गई। वह चाहता भी तो बिक्री या दान नहीं कर सकता।

खोकाठाकुर के लिए कोई नहीं रोया। कोई था ही नहीं। जात बिरादर वालों को खुशी ही हुई। पंडई का एक हिस्सेदार गया। शरत उस्ताद भी नहीं रोया। बोला उसीके घर में बोला, उसके नसीब में यही था समझा श्रीमंत। शुरू में जब उसने मुझसे गंडा बंधवाया मेरा शिष्य बना तो उसका गला और दो एक गीत सुनकर मुझे लगा, यह खाटी माल होगा। लेकिन जैसे जैसे दिन बीतने लगे समझ में आता गया भूसा है भूसा। तीन चार साल में उससे सरगम ही नहीं हो सका। कभी नहीं होगा।

चपा मौसी को केवल दुख हुआ था। उसकी आंखों से आंसू बहते उसने देखा था। दुख उसे भी हुआ था। लेकिन चपा मौसी जितना नहीं। खोकाठाकुर पर धरम धरम की ऐसी धुन सवार हो गई थी और गांजा पीते-पीते ऐसा बाना बाना और चुहाड सा चेहरा हो गया था कि

उसे कसा तो बुरा लगता।

चपा मौसी ने उस दिन उस्ताद स कहा था—ऐसा न कहिए उस्ताद—गीन वह अच्छा गाता था। आपने उसे सिखाया नहीं। वही आपको ले आया, आपकी सेवा-टहल की और आपने अपन यहा के धनी शिष्य को पाकर उसे नही देखा, उसे तुच्छ बनाया, टाला।

भरत उस्ताद ने कहा—लो, लो, देखो। यह औरत कह क्या रही है? अरे ओ श्रीमत, सुनो, तुम्हारी बीवी क्या कहती है? एँ? तेरी बेटी स्कूल म पढ़ती है। वह फेल क्या हुई? एँ? सीखने की भी जुरत होनी चाहिए। है कि नहो? रुई की बाती तेल खींचती है दीया जलता है। कपास की काठी या छाल की बाती बनाओ तो सुलगगी कि जलेगी? दिमाग नहीं है। जो था वह

चपा मौसी ने आगे कहने न दिया—वह तो न कहिए उस्ताद! दिमाग नहीं था, यह मत कहिए। वह मुझसे कहा करता था। कहता था, वरागी बहू, उस्ताद मुझको सिखाता नहीं है। मन ही मन मुझे तुच्छ समझता है। गरीब हू, इसलिए टालता है। मूरख कहता है बवकूफ कहता है। अब धनी शिष्य जुट गया है न! आप उसे तू-ताम करते थे, कडवी सुनाते थे, बात बात म कहते थे तू गधा है। और बाबुओ के बेटे को कहते, आप बाबू हैं। वह हजार भूल करता मगर आप कितना मीठा बोलकर उसे बार-बार बताते थे

—लो लो, यह औरत कहती क्या है? अरे, बाबू का लडका और नित्यगोपाल का गजेडी बेटा नोबू क्या समान है? एँ

—आप गुरु हैं। शिष्य तो सभी समान हैं

—नहो। इस औरत ने यहा से उठाया मुझे।

श्रीमत उस समय वहा नही था। घर के अदर चला गया था उठकर। गाजे मे मिलाने के लिए केंदुली मेले से इत्र ले आया था, अन्दर से वही लाने गया था। वह निकला और चपा को डाट बताई—एक थप्पड लगा दूगा। उठ। उठ जा यहा से।

अपनी आदत के मुताबिक मौसी हसी थी। लेकिन उस दिन खिलखिलाकर नही हसी। कसी तो भीगी भीगी सी हसी हसकर बोली—सो मार लो। मार खाने के लिए ही तो विधाता ने मेरी यह पीठ बनाई थी। और सह भी सकती हू मैं। मगर कहूगी वाजिब। तुमने ठगकर उसका पोखरा और जमीन ले ली

श्रीमत ने और जोर से डाटा ठगकर लिया है ?

—नहीं लिया है ? कलेजे पर हाथ रखकर कहा।

अबकी श्रीमत ने उसका झोटा पकड लिया—बार बार उस रुपया नहीं दिया ? पाच-दस बीस। कुल जोडकर वह कागज लिख गया है। तुझे तो बडा प्यारा है उसका ! उस्ताद ने कहा अरे ए श्रीमत ! छोड दे, छोड दे। औरतो का बाल नही पकडना चाहिए। छाउ दे। कहती है कहने दे उसे। तू इतना बिगड क्यो रहा है ? तेरे पास तो लिखा पढी है। उसने तो लिख दिया है।

उस दिन मालती ओसारे की एक खूटी पकडे ही हरदम खडी रही।

श्रीमत ने चपा का झोटा छोड दिया।

चपा लेकिन तो भी चुप नही हुई। उसने कहा उसने कागज लिख दिया है तुम्हारे पास कागज है—उसकी बात मैं नही कहती। मैंने हिसाब के बारे म कहा। हिसाब तो उसने रक्खा नही था।

—फिर ?

चपा ने तो भी कहा उस्ताद गुरु ब्राह्मण। गुरु के लिए अपने बेटे और शिष्य म कोई भेद नही। आपके बेटे ने आकर उसीके घर म उसे किस बुरी तरह पीटा ? गाल पर पाचो उगलिया उग आइ। आपने कुछ कहा नही।

—लो। अरे क्या कहना ? उसम मैं क्या कहता ? वसत स्कूल मे सेकड क्लास म पढता है। अच्छा लडका है। उसके साथ मूल पड के बेटे न तक शुरू कर दिया। उस रोज रात को भूकप हुआ था। वसत ने सवेरे अादि बढई को बताया कि भूकप होता कसे है। मूरख का अडा, घोर

मूरख वह गाजा बना रहा था। पंडित जैसा सर हिलाकर बोल उठा, तुम कुछ नहीं जानते हो। भूकप वासुकी नाग के सिर हिलाने से होता है। वासुकी अपने हजारों हजार फन पर धरती को लिए है न, सो बीच बीच में जब वह धरती को इस फन से उस फन में लेता है तो भूकप होता है। और वासुकी तब सिर हिलाता है जब पाप ज्यादा होता है। तभी घर द्वार गिरते हैं। लोग मरते हैं। यहाँ तक लगा दिया। गजेडी है न। बसत ने कह दिया, गनेडी को अकल भी कितनी हो सकती है। इसपर कबल कहता क्या है—तुम्हारे बाप भी तो— यानी मैं—अरे बेटा मैं तेरा गुरु हूं कहता क्या है कि तुम्हारा बाप भी तो गाजा पीता है। बस बसत ने लगा दी चपत नहीं लगाए भला!

चंपा मौसी ने कहा, बात आपने सच नहीं कही उस्ताद आपके बेटे ने उसे सिर्फ गजेडी ही नहीं कहा था, कहा था—गनेडी का बेटा गजेडी तुम्हें अकल ही क्या। इसपर उसने कहा था कि गाजा तो तुम्हारा बाप भी पीता है। सो ढेला मारने से तो पत्थर तो खाना ही पडेगा। पडेगा? खाना ही पडेगा? अरे बसत का बाप तेरा गुरु है तेरा बाप तो बसत का गुरु नहीं है। बसत कह सकता है। मगर वह कैसे कहता है?

विपिन मछेरा आ गया, इसलिए बात उस दिन वहीं दब गई। विपिन के साथ आया था सुरेनसाहा। विपिन ने कहा दासजी मैं आप ही के पास आया हूं। मैंने सुना, कज में ठाकुर आपको पोखरा लिख दे गया है। मगर मैंने बटया पर उसमें मछली जो डाली है।

श्रीमत ने कहा हा। पोखरा मैंने खरीद लिया है विपिन।

—जरा उसका कागज

—हा, हा देखो न। देखो न। मैं गवाह हूं। सही बनाई है। दिखा दे श्रीमत कागज दिखा दे। स्टाप पर है। दिखा। कौन देखेगा? ओ गुरन। आओ। देखो।

श्रीमत ने कागज निकालकर दिखा दिया था।

मालती अबकी अपनी जगह से आगे बढ आई। उभककर उस

कागज को देखा। नोवूठाकुर की सही देखी। उसीकी जसी टेढ़ी मढ़ी लिखावट। मोटा-मोटा हरूफ।

उसके बाप ने दूसरे ही दिन सारी मछलिया पकडवाकर विपिन का बाट दी और पोखर को खास कर लिया।

३

मालती के कपाल पर शिकन पड गए। उसे याद आया थोडी ही देर पहले धरनी चाचा ने कहा है कि उसने उसके बाप से कहा था, आदमी सब कुछ बेचकर खाता है श्रीमत धरम बेचकर नहीं खाता। बराम्हन के लडके का पालर और जमीन लेकर तूने भला नही किया।,

इसी पोखरे से इन सबका सरबनास हुआ इसे खून के जुम मे फसना पडा यह सत्य है। लकिन उसके बाप ने अधरम क्या किया? कागज पर की वह सही तो वह आज भी देख रही है!

भुवनेश्वर के ऊचे टीले पर से नजर फिराकर मालती ने धरनी की तरफ ताका। धरनी चाचा चश्मा पहन बही मे शायद आज का हिसाब लिख रहा था। भुवनेश्वर के थान की ओर नजर गडाए उसे चितामग्न देख उसने कुछ कहा नही। अपना काम कर रहा है। बेला झुक आई। सूरज की किरणें भुवनश्वर के पश्चिम तरफ बड पीपल बेल के ऊपर आ गइ। इसी बीच हाट म जाने कब तो धपाधप धुले कपडेवाले बाबुओ की आमदनी हो गई। किशोरिया का एक दल—सभी शहर की औरता जसी झकाझक—घूम रही थी। मिल से सथाल स्त्रिया आइ। अब य पहले जसी सथालिन नही रह गई है। सबने ब्लाउज पहना है रगीन साडी पहनी है। आखो की निगाह से समझ म आता है थोडी दर पहले की हाट घडी घडी बदलकर बहुत ही बदल गइ। लेकिन शोरगुल वही! जगली मधुमक्खी के बडे छत्त पर जसी भन भन होती है वही आवाज।

स्कूल, दफ्तर सब बंद हो चुके हैं। चार बज चुके हैं। आधा घंटा ज्यादा हो चुका है शायद। स्कूल के लड़के, लड़कियां, मास्टर, दफ्तर के बाबू हाट आए हैं। हाट की शक्ल बदल गई है।

मुरगीवालों ने हांक तेज कर दी, मुरगी का अंडा, बतख का अंडा! मुरगी, अच्छी अच्छी मुरगी।

स्कूल की लड़कियां को देख कार फीतावाला उत्साहित हो उठा। वह भी सुर में बोलने लगा, चार हाथ बार चार हाथ फीता लंबा लंबा, मजबूत! बाल बांधो तो खुलेगा नहीं मन बांधो तो फिसलेगा नहीं!

—अरे ओ शंभू, रागनी में तेल डाल। चिमनी को ठीक से पोंछ दे।—धरनीदास ने शंभू को पुकारकर कहा। शंभू धरनी की गांठ लाता-ले जाता है। धरनी अपनी पीठ पर भी एक गांठ बांध लेता है। आज-कल हाट सांझ से भी कुछ ज्यादा देर तक चलती है। रोशनी जलानी पड़ जाती है। तरकारीवाले कोई कुप्पी जलाते हैं, कोई लालटेन। विनोदिनी और गुड़ की दुकान में हेजक जलती है।

मालती घूमकर आई। पूछ बैठी अच्छा चाचा, तुमने उस पोखरे के बारे में कहा न!

—यही तो मनरथ की जड़ है बिटिया। बोली, है या नहीं? उसीके लिए तो तुम्हें सजा हुई। क्या करते क्या हो गया!

—सो तो हो गया! लेकिन बप्पा ने दान कर तो नहीं दिया है। तुमने कहा अधरम है। कहने हो कि बप्पा से तुमने कहा था। मगर मैंने तो उसका कागज देखा।

सर नवाकर चरम की फांक से धरनीदास ने उसके मुंह की ओर ताका। जरा देर में बोला बिटिया लिखा पढ़ी के समय मैं मौजूद था। मैं भी कंदुली गया था। और, उसने रुपया कितना लिया था, मुझे मालूम था। रुपया तो श्रीमंत ने सब अपना नहीं दिया था। मुझसे

लेकर दिया था। सब उस उस्ताद के लिए। तुमने तो देखा था उस्ताद आता था। किसी बार दो ता किसी बार तीन चेला साथ आता था। फिर यहा के दो-तीन आदमी। दिन मे न सही, रात को तो सब खाते ही थे। उस्ताद पूरिया खाता था। चूंकि गाजा पीता था, इसलिए खूब गाढा दूध पीता था। और फिर तीसरे पहर मिठाई। पूछा मत। छोका-ठाकुर तो अधपगला सा था। शुरू शुरू ता बडे उत्साह से सारा कुछ सभाला। आखिर तीन चार सौ की जो नकद पूजी थी वह चुक गई। फूफा गालिया देने लगी। फूफा को उसने अलग कर दिया। पहले लोटा कटोरा गिरवी रखना शुरू हुआ। तुम्हारा बाप ही ला देता था। उसने खुद भी बहुत बतन लिया। मुझे भी दिया। उसके यहा बहुत बडा एक हडा था बडी बडी कडाहिया थी। वह सब गधवणिको ने लिया। उसके बाद शुरू हुआ उधार। कभी पाच कभी सात। कभी दस। इस तरह से तीनेक सौ हुआ। मैंने श्रीमत स कहा था, दे तो रहे हो जी लोगे कस ? उस अभागे लडके का भी तो कोई कसूर नही है। उसे धमकाकर भी क्या करोगे ? श्रीमत ने कहा बिटिया कपडे की दुकान मे बठकर कह रहा हू साझ का समय है, झूठ कहू तो भगवान देखेंगे कहा—वह मरेगा तो मैं क्या करू ? वह ता मरे ही गा। मुझे तो भया पोखरा चाहिए। सा केंदुली म जब ठाकुर ने कहा मैं अब घर नही लौटूगा जा रहा हू—कहा तो बिलकुल बाऊल जसा गरुआ पहन कर—तो तेरे बाप न कहा जा तो रहे हो मेरा रुपया कौन देगा ? रुपया भी कुछ कम नही है। पाच छे सौ। ठाकुर ने कहा रुपया तो मेरे पास नहीं है। हा जमीन है। ले लेना। मैंने तुझ द दी। श्रीमत बोला वही परती जमीन तो है। नापी म भी कम। रुपये मेरे पाच छे सौ स ज्यादा होगे। उनने स वसूल कस होगा ? पोखरा समत दना होगा। ठाकुर न कहा वही स लो। अभी साथ म और दस-पाच रुपये हा ता दे दो। भीख मागना सीखने म ता समय लगेगा न ! श्रीमत न कहा दस रुपये दूगा। अखिर स्नान खरीद लाऊ लिए देना होगा। कहा

ले आओ। कर दी दस्तखत। उस्ताद ने कहा, और अपना घर क्या करेगा? मुझे क्या नहीं दे देना? बोला ले लीजिए रहिए इसमें। उस्ताद ने पूछा कीमत क्या लोगे? बोला, आप मेरे गुरु हैं गाली गलौज चाहे जो भी करें, गुरु हैं आप। कीमत मैं आपसे नहीं लूंगा। उस्ताद ने कहा, तो लिख दे। वह भी लिख दिया।

लालटेन जलाकर शंभु ने छज्जे से झूलती डोरी से लटका दी। धरनीदास ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और टिटिया गुनगुनाने बैठ गया। उसी पर धूप जलाएगा।

टिटिया गुनगुनाते गुनगुनाते बोला इसमें तुम्हारे बाप का कितना दोष रहा है बिटिया। जितना दोष जितनी ज़िम्मेदारी—सब मानता उस्ताद की है। उनके सेवा-जतन में तो ठाकुर ने कोई कोर-कसर नहीं रखी, लेकिन अंत में उस्ताद उसके साथ इस तरह से पेश आता था कि सबको शर्म आती थी। बस क्या अहमक, कमअक्ल—यह सब [illegible] नाम-सा पड़ गया था

मालती बोली मालूम है। क्या मौसी से ठाकुर की बड़ी पटती थी। ठाकुर ने मौसी से कहा था।

—हाँ बिटिया। ठाकुर का झुकाव ध्रुपद धमार आदि बड़ी ताला के गीत की तरफ नहीं था। उस्ताद उसके पीछे पड़ा था। सिखाकर ही रहेगा। ठाकुर की लगन दूसरी तरफ थी। और बहुत लड़कों को जैसे हिमाकत में वैसा दिमाग नहीं रहता, वैसे ही उसका दिमाग भी नहीं था। जिसपर गाना सीख पाने जैसा तो हो गया था। समझी? चुप बना रहता था। असली बात यह थी कि मन ही मन दुखी रहता था। सबसे बड़ा दुख इस बात का था कि उस्ताद बाबुओं के लड़कों को गाना सिखाने के लिए उनके घर जाता था और उसे नौकर जैसा सटाता, जो-सो कहता, जोकि ठाकुर बाबुओं के गुरुवंश का था। बड़ी चोट पहुंची थी। उस्ताद का बेटा बसंत—वह तो चपत लगा देता था। केंदुली में एक घटना घट गई। हम लोगों ने डेरा डाला। मेला देखने लगे। ठाकुर खो गया वहीं। खोजो

खोजो कहा गया ? अंत मे मिला। एक पेड तले बाऊला का दल बैठा था, एक बाऊल गीत गा रहा था। ठाकुर तन्मय होकर सुन रहा था। यह खबर शरत उस्ताद के चेले ऋषि बढई ने दी। ठाकुर के बिना रसोई ठप पडी थी। उसीको पकाना चुकाना था। आखिर उस्ताद गया। पकड लाया उसे। बडा भला बुरा कहा। जो मुह मे आया वही। ठाकुर ने कुछ कहा नही। रसोई कर दी सबको दे दिया दिया और हाथ पाव धोकर निकल पडा। रात भर नहीं आया। दूसरे दिन दस ग्यारह बजे तक नही। अंत मे श्रीमंत उसे अजय के घाट से पकडकर ले आया। उसने गरुआ कपडा पहन लिया था, पिछुआ नही खोसा था। कहा, मैं बाऊल बन गया हू। अब मैं घर नही लौटूगा। तुमलोग वापस जाओ। मैं उस बूढे बाऊल के साथ जाऊगा। उसीसे गाना सीखूगा साधन करूगा। बस। उसी वक्त श्रीमंत ने लिखा लिया।

ढन ढन करके भुवनेश्वर की आरती होने लगी। शख घडियाल बज उठा। हाट के सारे दुकानदार एक बार खडे हो गए। हाथ जोडकर प्रणाम कर लिया।

कोई खरीदार आया। अच्छी मसहरी है ?

—है। धरनीदास ने मसहरी निकाली।

—यह नही। यह तो तात की है। नेट की, अच्छी—

—जी नही। वह तो नही है। वह चाहिए तो गुड के यहा देखिए।

—नही है। बताया गधेश्वरी तला जाइए।

—तो फिर वही देखिए। लेकिन उससे इसमे हवा आपको ज्यादा लगती। आखिर असली नेट तो मिलेगा नही।

भला आदमी था। यानी धोती कुरता चश्मावाला बाबू जरा ठिठका। सोचकर कहा अपनी मसहरी भूल आया। दूसरे की मसहरी मे सो नहीं पाता। खैर वही दीजिए। जरा बडा। अब गधेश्वरी तला कौन जाए ? दीजिए।

—अपनी पसद से चुन लीजिए।

—आप ही दीजिए। इसमें फिर पसंद क्या ! दस का एक नोट फेंक कर कहा, जो दाम हो काटकर बाकी पैसे लौटा दीजिए। और बिना गिने ही रुपये को जेब में डालकर चलता बना।

धरनीदास ने कहा, अच्छा गाहक है। बाबू। एजेंट-फेजेंट होगा। मालती ने इस बात का जवाब नहीं दिया। बोली, अच्छा चाचा ठाकुर ने जब लिख ही लिया तो फिर बासुदेव तंबाखूवाले ने पोखर के लिए मामला कैसे खड़ा किया ? ठाकुर ने क्या उसके हाथ भी बेचा था।

—नहीं-नहीं ? ऐसा आदमी ही नहीं है ठाकुर ! वैसी नीयत भी नहीं थी उसमें। पोखरा बाबुओं के छै आने के हिस्सेदारी का था। छै आने का हिस्सावाला बूढ़ा मालिक—उसीने ठाकुर के बाप को दान दिया था। बाबुओं के यहां एक बहुत बड़ा उस्ताद आया था। उसके साथ गाने-बजाने वाला यहां कोई नहीं था। नित्यठाकुर ने हिम्मत की। आगे बढ़ा और गाया। गाने की पत रक्खी। बूढ़े दे बाबू ने खुश होकर पूछा क्या चाहिए, कहो ! नित्यठाकुर के बूढ़े बाप ने कहा, मालिक आपको बहुत से पोखरे हैं। पोखरा ही उसे दीजिए। मालिक ने तथास्तु किया। वह एक समय ही था बिटिया ! तब ऐसा ही होता था। फिर जमींदारी उठने के बाद सेटलमेंट आया। उस समय दे बाबुओं ने खतियान देखा। देखा, पचीस छब्बीस साल के सेटलमेंट में पोखरा उन लोगों का हुआ-हवाया है। उन लोगों ने श्रीमन से रुपये मांगे—दे कुछ। गवार श्रीमन ने दिया नहीं। इतने में तंबाखूवाला बासदेव आया। बोला, मुझे दीजिए बाबू। मैं लूंगा। दे बाबुओं ने दे दिया। बासदेव ने फौजदारी की। मुकदमा हुआ। अदालत से रोक लगी।।मछली मारना बंद हो गया। तुम्हारे बाप ने बड़ी बड़ी मछलियां रक्खी थीं। दस सेर की बारह सेर की। उससे यह बरदाश्त नहीं हुआ। वह रात को चुराकर मछली मारने गया।

५

—तो मालती गाय उसने पकड़ी थी। कहते हैं बहुत अच्छी थी।
तुम तो उसके साथ थी, है न?

मालती ? बड़ा हो। मालती वर्ष दिन से पहले रही थी। पर ने
सब पैदा इसलिए बड़ा मालती साथ दिया था। मैं साथ थी उसके
साथ रहती थी। उस बार डोरा भी भी न आई थी। उसके न जैसे ही
मालती उसी पर का गिरी कि मैं उस बार देखी। पर न रही।

मालती का साथ है। उस समय वह काली बड़ी थी। अब न
तीन वर्षों में और थोड़ी ऊंची हुई है। जवान हुई। दवाखाने के
समय डाक्टर ने उसकी उमर पन्द्रह साल की बताई थी। डाक्टर ने उसकी
की जांच की थी। मालती मोटी-ताजी थी। अब और थोड़ा भर आई है।
याद है सवेरे गया को गोरा मनभावना रूप उसका उस समय भी था।
पहले वाली गाय नहीं थी दूसरी थी। उसका स्वभाव उस जैसा नहीं
था। लेकिन उसके साथ न आने से ही क्या, सबने उसका स्वभाव वैसा ही
कर दिया था। शाम को गृहस्थी घर से बाहर कुछ दूर तक घूम लिया
करता था। शुरू-शुरू कुछ दिन तक वह घर के ही आस-पास चक्कर
काटा करती थी हुआ हुआ करती थी। अब तक थोड़ी देर बाद से
स्वाद का समझ गई। फिर वह भी उसी गाय की तरह दिन भर यहां
वहां चरकर पेट को खाव जमा फुलाकर किसी माड़ तले बैठी पागुर करती
रहती। सवेरा होते ही मालती एक हाथ में डोरी एक हाथ में डंडा लिए
घर से निकलती। गांव में छोटे छोकरे लोगों की तरह उसकी तरफ ताना
करते। अब तो वह काफी खूबसूरत हो गई है, लेकिन उस समय भी सुन्दर
थी। और सुंदर बनने के कुछ नियम उसने सीखे थे। सिखाया था उस्ताद
के बेटे बसंत ने। बालों में तेल वह कम डालती थी। बसंत ने उसे बताया
था कि रूखे बाल फूले फूल से और तेल वाले जूड़े से सुंदर दीखते हैं।
ब्लाउज पहनना उसे बसंत ने ही सिखाया था। गांव में भले घर की

औरता मे ब्लाउज का चलन हो चुका था। फिर भी श्रीमत कहता, क्या री ? यह किसलिए ? समीज से ही तो चल जाता है ! मगर मालती अकेले उसीकी बात पर तो नही चलती। उसीके सबक पर नहीं निभर करती। उसकी शिक्षा तीन जने से हुई—श्रीमत, चपा मौसी वसत।

वही जो चुनाव के समय वसत झडा उडाकर जागो नारायण वाला गीत गाता चलता था भाषण करता था, वह तभी से उसपर लट्टू है। क्या भाषण करता है वह ! खून खोल उठता।

वसत ने उसे वह सब गीत सिखाए थे। कहा करता अरी यह युग क्या वह पुराना युग है कि घर म बद बैठी रहगी ? कि तिलक काढकर, चूडा बाधकर मजीरा बजाते हुए गा-गाकर भीख मागती फिरेगी ? तू जा है द बाबू के यहा की लडकिया भी वही हैं।

उस समय तक वह स्कूल मे पन्ती थी। अपर प्राइमरी के फस्ट क्लास म। एक-एक क्लास म दो-दो साल रहकर यहा तक आई थी।

उसी बार स लटकिया के बडे स्कूल के खुलन की बात थी। वसत ने श्रीमत स कहा था श्रीमत स्कूल खुलन पर मालती को भर्ती कर देना होगा। यही तो एक लडकी है तुम्हें !

श्रीमत उस समय वसन का चेला बन गया था। दे परिवार के लोग तब तक अगरेजो के वफादार थ, अब काग्रेस म आने की ताक मे थ। सदा का बेकार आवारागर्द जेल फिरता गोरीनाथ—काग्रेसी पक्ष के रूप मे इलाके का मातब्बर बन बठा था। श्रीमत ने कभी भी किसीका नहीं लगाया। मगर दे बाबुओ को बडा आदमी मानता था। इसलिए भी कि कभी उनके यहां काम किया था। लकिन गोरीनाथ को क्या लगान लगा ? वही किस बात म कम है ? वसन से उसकी अच्छी पटी। वसत बडी अच्छी बात कहता है। बहादुर जवान है ! और फिर भरत उस्ताद श्रीमत का गुरु ठहरा। वसत का कहा सुनकर श्रीमत ने कहा था, सर स्कूल म कर दूगा भर्ती।

चपा के सदा के विछा म से उसके मन मे पनपी पटी थी।

यह उसके बाप के भी थी। चंपा मौसी तिलक भी काढ़ती थी। कंठी गले में वह पहनती खूब थी। आईने में उसने परखा था, गनों जैसा तो सवाँ और सालों-सालों लगता है ! कंठी से अच्छा लगता।

सवेर जब वह गाय खोजने जाती तो देबाबू के यहां के कुछ छोकरे, कनाल आफिस के कुछ मनचले बाबू उसे देखने के लिए रास्ते पर खड़े रहते थे। उस समय तक इलाके में नहर आ गई थी। कोई दतुवन करने के बहाने कोई अनमना-सा सिगरेट पीने के बहाने, कोई चायचाटी के बहाने। वह सिर झुकाए मुसकराकर चली जाती। कभी आंख उठाकर देखती तो देखती कि लोग उसकी तरफ ताक रहे हैं।

मालती मानो अपने आप उस गाय को डांटती मिल तो जाए जरा ! बज्जात की पीठ की छाल छुड़ा दूंगी। हूं इस तरह से टुक टुक देखती रहती है गोया कितनी भली है। आंख फोड़ दूंगी। शैतान गाय !

मुंह से कहती जरूर, मगर मन ही मन कौतुक ही नहीं, जरा खुशी सी अनुभव करती। चंपा मौसी से उसने यह सब बहुत सीखा था। चंपा की उमर उससे बहुत ज्यादा नहीं थी, सोलह सत्रह साल ज्यादा। वह भरी पूरी युवती सी लगती। नाच गाकर मौज-मजे में दिन काटा करती। पहले तो गंगा नहाने को भाग जाती थी कभी नवद्वीप चल देती, लौटकर श्रीमंत के हाथों पिटती। लेकिन धीरे धीरे भागना छोड़ दिया था। घर में ही यह सब करके दिन बिताया करती। दोनों में सखी जैसा भाव। श्रीमंत के कहीं जाने पर, खास करके गर्मियों में दोनों जने घर में सोई-सोई बड़े मजे करती। कृष्ण की पूरी कहानी प्रेम की उसने चंपा मौसी से अच्छी तरह सीख ली थी।

गाय को खोजकर लौटने पर कभी कभी वह आप भी उन छोकरों की बात बताया करती। कहती, मैंने क्या कहा जानती हो ? और सब सुना जाती।

चंपा कहती मन में पीड़ा होती है पीड़ा ? मन के अंदर ?

—क्या पीड़ा कैसी ?

हँसकर चंपा कहती, फिर तो कोई डर नहीं। बेफिक्र। पीड़ा पीड़ा लगे तो मुसीबत है। समझी ?

—काहे की मुसीबत ?

—काहे की ? हाय राम ! मुसीबत नहीं ? पीड़ा हो तो समझो कि वह पीड़ा नहीं, प्रेम है। कृष्ण को कदंब तले देखकर श्रीमती को कैसी पीड़ा हुई। कुछ अच्छा नहीं लगता, कलेजे में ऐंठ सा। ऐसे में वृंदे ने कहा, राधा के हुई क्या मन में पीड़ा ! वृन्दा पूछती। किस तरह की पीड़ा री श्रीमती ? श्रीमती राधा कहती, कैसी-कैसी तो रे वृंदे। किसी बात में जी नहीं लगता। घर में नहीं, किसी काम में नहीं, कलेजे के भीतर रुलाई सी उठती है। रो पाने से बड़ा आराम मिलता है, बड़ा अच्छा लगता है। इस पर वृंदा कहती, ना तो यह और कुछ नहीं है, प्रेम है, प्रेम।

मालती खिलखिलाकर हँसती ! बड़ा मजा आता। लेकिन किसी के सामने कहने से अच्छा नहीं लगता। सामने भी किसके बाप के सामने मौसी उसे कुछ नहीं कहती—जो कहती सो बाप को ही कहती। किसीके सामने उसे कहने में बसंत और दे बाबू के यहाँ की गोपा यही दो थे। गोपा उसकी सखी भी थी। बसंत की मीटिंग-वीटिंग में जाया करती। वह उसे किताब देने आया करती थी। नावेल ! दोनों नावेल पढ़ा करती। बसंत पुस्तकालय से ला दिया करता।

मौसी कहती, कैसी-कैसी किताबें पढ़ती हो मौसी। नाक लगती है मुझे तो। मां, लिखना पढ़ना सीखा नहीं। सीखा होता तो गीत भजन की किताबें पढ़ता। उसमें जो रस है मत पूछो।

मालती कहती, तुम्हारा सर !

—हाय-हाय पिए बिना ही कह रही हो, मेरा सर !

गोपा धीरे धीरे मुसकराती बसंत के सामने बात होती तो वह कहता, खैर। मैं पढ़ता सुनो। तुम भी तो बिना पिए ही शराब कह रही हो ! सुनो। बसंत ने उसे शरत् बाबू की किताब पढ़कर सुनाई।

सुनी तो चंपा मौसी रोई। बोली, वाह ! बसंत माणिक ही तो भला

है। बड़ा अच्छा लगा।

बसंत उस समय खोकाठाकुर ने उसके बाप को जो मकान दिया था उसीमें रहता था। उस्ताद ने यहां एक स्थायी अड्डा गाड़ा था। बस्ती बढ़ रही थी। परंतु खुद कहता भुवनेश्वर या भुवनपुर देवी मधेश्वरी है यहां—कलजुग में अन्नपूर्णा की चलती गई देखते रहो भुवनेश्वर काशी से बढ़ जाएगा।

खोकाठाकुर वाले मकान में संगीत का एक स्कूल खोला था। हफ्ते में दो दिन सिखाया जाता। लड़कियों के लिए तीसरे पहर दो घंटा और उसके बाद शाम से लड़कों के लिए दो घंटा। लड़कों में लड़कियां ही ज्यादा सीखती थीं। सभी लोग अब शादी के लिए लड़कियों को पढ़ाते लिखाते हैं गाना-बजाना सिखाते हैं। अब पढ़ा देने भर से ही लड़कियों की शादी नहीं होती। वर-पक्ष के लोग पूछा करते हैं लड़की गाना जानती है या नहीं? श्रीमंत ने मालती को भी उस संगीत-स्कूल में दाखिल कर दिया था। उसे पैसा नहीं देना पड़ता था।

बसंत वहीं रहता था। तीन दिन बाप के साथ खाता पीता था तीन दिन खुद रसोई बनाकर खाता। चुनाव का चक्कर खत्म हो चुका था। हिंदू महासभा के आदिचटर्जी हार गए थे। बसंत से उसकी लड़ाई भी हो गई थी। बसंत उसे गाली देता था कि उसने उसका वेतन नहीं दिया। चटर्जी ने हिंदू महासभा में यह नालिश की कि बसंत ने एक हजार रुपये का कोई हिसाब ही नहीं दिया। बसंत हिंदू महासभा से अलग हो गया। कांग्रेस का सदस्य बन गया। लेकिन कांग्रेस के लीडर गौरीनाथमुखर्जी से उसकी लड़ाई थी। उसने अपनी पार्टी बनाई थी। थाने के दारोगा शिवरामसिंह से दोस्ती थी। झगड़ा फौजदारी में जो उसके पास जाता था उसको वह मदद करता था। मीटिंगें करता। गांधी जन्म दिवस स्वाधीनता दिवस गणतंत्र दिवस। जुलूस निकालता या हाट में सभा करता था।

बसंत भाषण देता। मालती को बड़ा अच्छा लगता। मालती को ही

क्या, सबको अच्छा लगता। मीटिंग के आरम्भ मे ही मालती और गोदा गीत गाया करतीं। उस्ताद ने उन्हें दो गीत अच्छी तरह से सिखा दिया था। एक—

हो धरम म वीर, हो करम म वीर
होओ उनत सिर, हागो जय !

दूसरा—जनगनमन अधिनायक जय हे।

बसत के सर पर लब-लबे बाल थे, तेग जसी नाक, बडी बडी आखें कमी म एक ही थी कि रग काला था और दुबला था वह। ढीला ढाला पाजामा और कुरता पहनकर जब वह जमींदारों, बडे लोगों और व्यवसाइयों को गालिया सुनाता तो लगता आखों से चिंगारिया छूट रही हैं। कहता, वह दिन अब आ गया है, जब इन्हें अपनी करतूतों की कैफियत देनी होगी। इन गरीबों पर जो जोर जुल्म इन्होंने हजारों हजार बरस से किया है उसका जवाब देना पडेगा। लोगों को इन्होंने पावों तले रौंदा है। गुलाम बनाकर रक्खा है। इनके मुह का कौर छीनकर खाया है, दुशासन की तरह इनकी औरतों पर अत्याचार किया है। इनके घर की स्त्रिया बनारसी मुर्शिदाबादी, विलायती महीन साडिया पहनती रहीं, य बचारी फट चिट कपडा स किसी तरह लाज बचाती रहीं। ब्राह्मण लोगो न इनको अछूत बनाकर रक्खा। आदमी और अछत ! किसने कहा ? सभी आदमी एक ही भगवान के बनाए हुए हैं सबके दो हाथ पाव सभी अपनी मा की गोदी मे पैदा हुए—भगवान की धरती भगवान के बनाए सूरज की रोशनी भगवान की दी हुई हवा म सास लेते हैं—वे छोटे-बडे कैसे हुए ? आदमी आदमी है। सर्वोपरि सत्य आदमी है, उसके ऊपर नहीं। एक जाति। कोई भेद नहीं। यही गाधीजी की वाणी है, यही भारत के कवि की वाणी है—यही नये भारत का नया विधान है।

यह भाषण बसत ने बहुत-बहुत बार दिया। लेकिन मालती ने जब पहली बार सुना था, तो उसकी आखों म आसू आ गया था।

सभा के बाद अक्सर बसत उसके यहा आता था। श्रीमत उसका

सामान वामान उठाकर ले आता। बसत उसके यहा से चाय पीकर जाता और अगर बसत का बाप, उस्तादजी नहीं होता, तो वह वहीं खाता। बसत ने यह भाषण जिस दिन पहली बार दिया था, उस दिन ,सब धर आकर बोला श्रीमत, आज रात म तुम्हारे ही यहा खाऊगा।

श्रीमत न चपा स पूछा, घी घर म है कि खत्म हो गया?

बसत ने कहा घी का क्या होगा?

श्रीमत बोला आखिर पूरिया कसे बनाएगी?

—पूरी म नहीं खाता। पूरी बडे लोग खाते है। मैं भात खाऊगा। तुम्हारी रसोई म ही बनेगा।

—यह भी होना है भला!

—होता है क्या होगा। मीटिंग मे मैंने क्या कहा, सुना नहा? जात पात मैं नही मानता।

श्रीमत न कहा ठीक है। जात पात अब कौन मानता है? अब सब सबक हाथ का खाते है। फिर भी ढिढोरा पीटकर नही खाना है भाई।

—मैं ढिढोरा पीटकर खाऊगा।

रात म उसके खाने क समय श्रीमत नहीं था। रात के पहल पहर म

—जात-कुल मैं मानता नहीं, गवाळ क्या ?

—अजी जनाब, वही बात ! अब मालती से ब्याह क्यों नहीं कर लेते ? तुम्हारे पीछे-पीछे डोलती चलती है।

—ब्याह ! मालती !! ! क्या रे मालती ?

मालती जैसी मालती, वह भी कुछ नहीं बोल सकी। वमत हँस उठा था। हँसकर बोला, बरागी बड़ भी खूब है ! ब्याह कर लो वह देन से ही ब्याह होता है भला !

—कैसे होता है फिर ? रुपया-पैसा ?

—उहूँ ! प्यार से। प्यार हो तो ब्याह होगा।

रात म चपा मौसी बोली, ओ मौसी, तो प्रेम करो ! मालती बोली, मौसी की बात ! यह सब मत बोना। लेकिन सवेरे उठी, तो गैया को खोजने के लिए निकलने के पहले बासी कपडे बदलकर वह पहले बाबाथान गई।

सवेर हाट सूनी पडी रहती है। खा-खा करती रहती है। दुकानें खाली-खाली—गुड़ की दुकान बहुत पहले से पक्के की है। उसका एक मुँह पूरब के ओसारे मे हाट की तरफ है, दूसरा दक्खिन म सदर रास्ते की ओर। हाट के दिन पूरब के ओसारे का दरवाजा खोलकर दुकान लगाती है। विनोदिनी सत्य, सुरेश की मिठाई की दुकानें भी ऐसी ही हैं। दो रुखी। लेकिन सवेरे उनकी भी दुकानें नहीं खुली थी। उसके बाद रास्ता हाट पार करके दूर तक चला गया है। उसके दोनों ओर दूर तक बाजार। हरेक किस्म की दुकान। मिठाई मनिहारी, दर्जी पान-सिगरट, मोदीखाना कुछ धान के गोले। एक होटल। दवा की दुकान। भूषणपाल के आखिरी छोर पर रहता है करो हाडी—वह काठ मछली बेचता है—हाडी वहा कई घर हैं। बास की सूप टोकरी बनाते हैं। उसके बाद है अस्पताल। पहले खराती दवाखाना था फिर चार बेड का अस्पताल बना। बाबुओ ने बनवा दिया था। लेकिन आज तो अब बीस बेड का अस्पताल बन गया है। पहले मुसलमानों का कब्रिस्तान था।

उसके पच्छिम म था बाबा भुवनेश्वर के बरगद बेल का जगल। पहले रात मे कोई इस तरफ नही आता था। कहते थे, बाबा के भूत प्रत और कब्र के भूतो म दगा होता है।

उतना सवेरे रास्ते मे भी आदमी नही था। हाट म भी नही। धूल और पत्ते ही भरे पडे थे। यहा वहा दो चार कुत्ते। पेडो तल कुछ बकरिया चरती फिर रही थी। कई बलगाडिया। रात म धान-चावल लेकर आई हैं। चटाई बिछाकर गाडीवान लोग सो रहे थे।

और वे लोग थे, जो हाट म ही रहते है। टिकली। टिकली की मा। चुनरिया। चुनरिया का बूढा, लगडा और काना बाप। टिकली मालती स कुछ बडी है। चुनरिया हमउम्र है। ये लोग बास की टट्टी और ताड के पत्ते की छोनेवाले घर म सदा से रहती आई हैं। टिकली की मा तब आई थी जब वह जवान थी। लोग कहते हैं, भले घर की थी। गगाराम जादूगर उडा लाया था। साप का उस्ताद कामरूप कामच्छा का मतर जानता था वही उसे ले आकर यहा भोपडी म बस गया था। गगाराम आखिर हाडियो के टोल की एक औरत क साथ भाग गया। टिकली की मा रह गई। भीख मागकर खाती। उसके बाद हुई टिकली। टिकली अब बनती-सवरती है। घरनी चाचा की दुकान से खरीदी हुई डोरिया साडी पहनती है। वह भी ब्लाउज पहनती है। साझ होते ही बन ठनकर बस्ती के अदर से होती हुई गधश्वरी तला तक घूम आती है। चुनरिया भी जाती है। उसका साज सिगार कम होता है। उसके बाद वे दोनो भुवनेश्वर थान के पश्चिम उत्तर बरगद बल पीपल के जगल मे दिखाई पडती हैं। पडो की आड म छिप जाती है। अधरी रात म तो पता नहीं ही चलता है चादनी रात होने से पेडो की फाक से कभी कभी दिख जाती हैं कभी कभी गायब। आवाज सुनाई पडती है। सीटी बजती है। यह बजाता है वह बजाता है। फिस फिस बातें। कभी चीत्कार। चौककर भाग जाती हैं। कभी कभी सवेर तक गाछ के नीचे ही पडी रहती हैं। धूप लगने पर आखें खुलती तो घर

लौटती हैं। थककर फिर सो जाती हैं।

टिकली की मां गाली बका करती। अरी जलमुंही, मरेगी। कभी या तो सांप काट खाएगा, या कि किसी हरामजादे के हाथ! जान जाएगी। टेंटुआ दबाकर मार डालेगा। या धड़ अलग, गरदन अलग।

टिकली बुदबुदाती।

चुनरिया को उसका बाप पीटता।—खानगी कसबी कहीं की—हरामजादी।

चुनरिया पिटती और कहती, आज मैं चली जाऊंगी। तू ही रह बुड्ढे। भीख मांगकर सतपथ पर रहना। भगवान धरम तेरी सेवा करे। तुझे गांजे का दाम चाहिए। शाम को शराब भी मिलनी चाहिए। यह सब कहां से आता है, देखती हूं मैं।

बाप कहता, किसीसे शादी कर ले, मेहनत-मजदूरी कर, कमा खा। मां नहीं। हं राम! रात ही को लौट आती तो या तो बुड्ढे को पता नहीं होता या जानकर भी कुछ नहीं कहता। सवेरे लौटती तो गुलाबो जमादार की बुढ़िया उसे दिन भर सुनाती रहती। कहती, राम, मेरे भी कोई बेटी होती। कितना अच्छा होता! हाय हाय, मिठाई भी खाती, शराब पीती। हाय-हाय।

जमादार गुलाबो के तीन बेटे। तीन घर। वह सब बुढ़िया को खाना नहीं देते। बुढ़िया ने भी झोंपड़ी बानी है। लड़कों का घर वहीं उस हाड़ा के पास अस्पताल के करीब है। हाट की बारी है उनकी। जिस दिन जिसकी बारी होती है सवेरे आकर हाट बुहारता है। हाट से उसे कुछ मिलता है। हाट में गोबर, पत्ता, कुचरा—जो भी मिलता है उसे एक गड्ढे में डालता है। काफी रुपयों की खाद बिक जाती है। रुपये में एक गाड़ी। साल में दो-ढाई सौ गाड़ी खाद होती है। वह दो बाबुओं को मिलती है। इनका हिस्सा कुछ होता है। वे बड़े तड़के ही हाट बुहारने आते हैं। धूल में, पैसा, अधन्ने भी पड़े मिल जाते हैं। रेजगारियां ज्यादा मिलती हैं। जिसकी बारी होती है, वे दो

तीन जने आते ह। बुहारते बुहारते जो मिल जाता है मिल जाता है। उसके बाद जमा की हुई धूल को घोटते है। जसे धान पसारते हैं, सारी हाट की धूल को वसे ही परो से देखते हैं।

उस दिन भगीरथ जमादार की पारी थी। वह बठा बीडी फूक रहा था। उसकी बीवी और बटी झाड़ू लगा रही थी। दो छोटे बच्चे दौडते फिर रहे थे और कभी कभी पाव चलाकर, हाथ से खोजकर चिल्ला उठते थे—मिल गया र बप्पा ! चवन्नी !

कभी-कभी सोने की नाक की कील कान की रिंग भी मिलती। मल ठेले मे धक्कमधुक्की से गिर पडती ह। भगीरथ के सामने चार पाच फटे जूते पडे थे। बिलकुल फटे। पहनकर आए होगे, पावा दब-दबा कर टूट गए—फेंक दिया। भगीरथ उन्हे जूता सीनेवालो को बच देगा।

भुवन-सरोवर के पास लगडे कान मिखमगे रहते हैं। अकेले अकेले हैं वे। उनके झोपडी भी नही। घाट के किनारे पडे रहते है। पानी वाली पडता है तो पडा तल जा छिपत है। सरदियो म भी यही करत हैं।

भगीरथ न पूछा मालती बेटी, इतना सवरे कहा जाएगी ? ऐं ? मालती स झूठ नहा कहते बना। कहा बाबाथान जाऊगी। बाबा को प्रणाम करुगी।

भगीरथ क उन बच्चा ने चिढानवाला लटका शुरू कर दिया था जिम वह बगाली औरत देखते ही सुनात हैं।

ओ बगालिन बनी ठनी है,

पावडर पाते मेम बनी है।

भगीरथ ने डाट बताई अबे अबे ए ! शतान !

मालती हसी। तालाव क घाट स उतराकर चली। बाबाथान घाट के पूरब है। वहा प्रणाम किया। फिर आमतल होकर उत्तर को चली। आम तल इटें बिछाकर चौकिया-सी बनाई गई हैं। उनपर कट वालों की डरो। यहा हज्जाम बटते हैं। मन्नत मानत हैं इसके लिए भी बाल बनात हैं हाट क लोग या भी बनात हैं। उसके आग

तालाब के उत्तर किनारे बरगद-पीपल का जाल। उसके अंदर से चल कर वह एक जगह कांटों की झाड़ियों के पास खड़ी हो गई। यहां जो बरगद है, वह भी बहुत बड़ा है। उसमें से असंख्य जटाएं लटक आई हैं। इतनी दूर आकर जटा में ढेला बांधने के लिए कम ही लोग आते हैं। उसने वहीं ढेला बांधने की ठानी थी। लेकिन सोचकर भी वहां नहीं बांधा। बगल में पेड़ में लिपटी एक कूच की लतर नजर आई। कूच में भी बेशुमार कांटे थे। रह काटा। वहीं एक डोरी निकालकर उसमें ढेला बांधा।

बांधकर कामना की, वसंत से ही मेरा ब्याह हो। बराम्हन है तो क्या हुआ! यही जिसमें उसका दूल्हा हो।

लौटते समय फिर बाबा को प्रणाम किया। गांव को पार करके खेतों से होती हुई वह उस सेमल के नीचे पहुंची। लेकिन गैया नहीं मिली। नहीं थी वहां। और भी कई जगह देखा। नहीं मिली। मन ही मन बड़ा गुस्सा आया। डर लगा। बप्पा गांजा पीने के लिए सवेरे घर पर ही रहेगा। क्या कहेगा?

उसने मन ही मन भुवनेश्वर का सुमरन किया हे बाबा, दइमारी गया जिसमें भड़गड़ा गई हो घर नहीं पहुंची हो।

बाबा ने उसकी पुकार सुनी थी। गया भड़गड़ा ही गई थी। सेमल-तले बैठी थी मुहभौंसी। जब देखा कि मालती उसे लिवाने नहीं पहुंची, तो बदन झाड़कर वह उठी। घर की तरफ चली। दूध दे नहीं रही थी। बच्चे के लिए घर का खिंचाव नहीं था। वह रास्ते में तलियों के खलिहानों में घुसी कि उन लोगों ने पकड़कर भड़गड़ा भेज दिया।

५

आधाधान में ढेला बांधने का बड़ा विश्राम हुआ पर उसे। और

कुछ दिनों में उसका यह विश्वास और भी दृढ़ हुआ था। उस दिन बसंत बड़ा उमगकर उसके यहां आया श्रीमंत इनक़लाब ज़िंदाबाद!

श्रीमंत घर पर नहीं था। हाट गया था। बसंत को यह भी ख्याल नहीं रहा कि हाट का दिन है। चंपा मौसी ने कहा, अजी इनकलाब क्या हुआ? वह तो हाट गया है।

—मालती कहां है?

—वह शायद सो रही है।

—जगा दो उसे। जगा दो। मालती! मालती!

मालती सच ही सो रही थी। पुकार सुनकर उठ आई। बसंत ने कहा, इनकलाब ज़िंदाबाद। कांग्रेस की जय। ज़मींदारी खत्म करने का बिल पास हो गया। कल ही जुलूस निकालना होगा।

जेल जाकर मालती ने बहुत कुछ सीखा था। लेकिन उस रोज़ उसे लगा कि ज़मींदारी बसंत के भाषण से खत्म हुई। वह उसकी ओर अवाक होकर ताकने लगी। वसी चंपा मौसी उसने भी उस दिन हंसी मज़ाक नहीं करके उसकी तारीफ की। कहा वाह रे मेरे माणिक, हो तुम शेर! खूब किया।

दूसरे दिन जुलूस निकला था। जुलूस के लिए कांग्रेस के पक्ष गोपीनाथ [illegible] बसंत की झड़प हुई थी। वे बाबू वे यहां के लोग ज़मींदार हैं। छत्ताग करोड़ मजुमदी की तरह बहुत ठाट-बाट से होने के बाद जुड़े वे अपना रोब जमाने की कोशिश करते। त्याग करके जो छोटे छोटे भागीदार हैं। सूरज गजनी शराबी फरीद लोग बहुत शोरगुल मचाते। उन्हें कुछ न लगाए चाहे भाटे जिम्मेदारी और जो वणिज व्यापार करते थे उनकी पूछ करनी भी पड़ती। इस उम्र बहाने मामला मुकम्मल करके उन्होंने लोगों का दया रखा था। हर बात में वही प्रधान थे। यूनियन बोर्ड में लेकर हर चुनाव में वे सब होते थे। इस बात पर बसंत में बड़ा झगड़ा हो गया है। बसंत खास भाषण दे, चुनाव में वे लोग बसंत को हरा देते थे। दो-एक बार पहले यूनियन

वोट मे बसत को ऐसी शिकस्त दी थी कि मालती को भी शर्म हो आई थी। बसत को सिर्फ चौदह वोट मिले थे, जबकि शिवचद्र द को अस्सी मिला था। जुलूस का नेतृत्व करते हुए बसत न दे बाबुओ के घर के सामने खूब नारा लगाया था। इनकिलाब जिंदाबाद से लेकर जमींदार का नाश हो तक। अगरेजो के कुत्ते जहनुम म जाए। भारत माता की जय। ऐसे और भी नारे।

उस रोज द बाबुओ के घर का दरवाजा बद था। कोई बाहर नही निकला। जुलूस मे भी ज्यादा लोग नही जुटे थे। काग्रेस के लीडर गौरीनाथ न मनाही कर दी थी कि जुलूस नही निकलना चाहिए। मत निकालो।

बसत न उनकी सुनी नहीं। मगर जुलूस म आदमी ज्यादा नहीं आए। द बाबुओ के डर स हो चाहे गौरीनाथ की मनाही से, बीस-पच्चीस स ज्यादा आदमी नहीं हुए जुलूस में। जुलूस मे मालती और गोपा झडा लिए लिए आगे आगे चलती थी। गोपा नही आई।

दे बाबूओं के टोले म जब नारेबाजी चल रही थी, तो गौरीनाथ न आकर कहा था, यह सब क्या हो रहा है ? इनके दरवाजे के सामने क्यो ? छि छि।

बसत ने मुख्तसर म जवाब दिया, आपका हुक्म मानने को मैं मजबूर नही हू।

मालती का बाप भी जुलूस म था। बसत के पीछे था। उसन कहा, बडी तो हमदर्दी है देखता हू। हमारी काग्रेस बडे आदमियो की काग्रेस नही है। तुम लोगो म कोई वास्ता नही। गरदनिया देकर यहा से निकाल दूगा।

बसत न ही रोक दिया था। लेकिन जुलूस को उसने नहीं तोडा। लेकिन ज्यादा देर तक रहा भी नहीं। हाट तक पहुचकर सभा किए बिना ही खत्म कर दिया।

हाट म उस रोज बाजीगरो की एक टोली कसरत दिखा रही थी।

एक ने कपाल पर बांस की एक लम्बी लाठी की थी और उसके ऊपर नौ-दस साल की एक लड़की तमाशा दिखा रही थी।

जुलूस के सारे लोग उसीके चारों ओर बटुरकर थम-दम रह थ। मालती बसंत के पास थी। बांस की फुनगी पर से उस आदमी ने उस लड़की को उछाल दिया था। लड़की घूमती हुई नाच या रही थी। लोगों के होश उड़ गए—गिर पड़ेगी। मिट्टी पर गिरकर मर जाएगी। मालती बसंत से सट गई थी और उसका हाथ कसकर पकड़ लिया था। बसंत ने भी उसके हाथ को दबा लिया था। कहा देखता रहो। बसंत का कहा सच निकला। उस आदमी ने लड़की को लोककर जमीन पर खड़ा कर दिया। खेल खत्म होने के बाद भी वह बसंत का हाथ पकड़कर ही घर आई थी। सदर रास्ते से नहीं बस्ती के बाहर खेतों की तरफ से घूमकर। बसंत ने ही कहा चलो, जरा घूमते हुए चलें। वह भी बोली, चलो-

एक दूसरे का हाथ पकड़कर चुपचाप चल रहे थ। बैलगाड़ी का कच्चा रास्ता। आकाश म चाद था। चादनी थी। बड़ा अच्छा लग रहा था। बसंत जैसे आदमी ने भी वह सब बात नहीं कहकर आसमान की तरफ ताकते हुए कहा था, वाह बड़ी अच्छी चादनी है!

उसने भी आकाश की ओर ताका था। बीच आकाश म चाद था और एकबारगी एक किनारे एक नीला चमकता हुआ तारा। उसे खोकाठाकुर के गीत की वह कड़ी याद आ गई थी—उज्ज्वल नीला तारा!

कि बसंत बोल उठा हा री मालती?

—ऐं?

—वैरागी बहू—तेरी चंपा मौसी—एक दिन तुमसे ब्याह करने की बात कह रही थी।

मालती का कलेजा धक धक कर उठा था। गला सूख गया था। बसंत ने कहा तू प्यार करती है मुझको?

मालती की हथेली पसीज उठी थी। वह कुछ बोल नहीं सकी। कि कि

गाव का और कोई होता, तो मालती कहती—नहीं, मुह से कुछ नहीं कहती—एक तमाशा जमा देती फिर कहती यह रहा जवाब ! आज लेकिन हा भी न निकली ।

बसत न कहा करती है ? बता न ?

अबकी वह धीमे से बोली उस दिन भुवनेश्वर थान म

—हा हा । क्या ?

—नहीं । वह मैं नहीं कह सकूगी ।

—नही कह सकोगी ? क्यो ?

—नही ।

—क्या ? आकाशवाणी हुई ? कोइ सपना ?

—तुम बडे वो हो। कुछ भी नहीं मानत तुम ।

—कुछ भी नही । राजा, जमीदार भगवान—कुछ भी नहा । परन्तु भुवनेश्वर थान म क्या हुआ, सो तो कहो।

मालती चुप रही । हथेली मगर पसीजने लगी । कहना चाह रही थी, कह नहीं पा रही थी । बसन्त ने कहा खैर । मत बता । मगर यह ता कह, प्यार करती है या नहीं ? उस दिन स तुम्हारे लिए मेरा मन बडा चचल हो हो उठता है । लगता है

—क्या लगता है ?

—बडा अच्छा लगता है तुझे ।

इस बार किसी तरह से उसने कहा, बसत-दा !

—बता । अच्छा लगता हू मैं तुझे । प्यार करती है ?

जी जान से चाहते हुए भी मालती नही कह सकी कि हा, करती हू । उस रोज भुवनेश्वर थान मे ढेला बाध आई हू । उसका गला सूख गया था । शब्द अटक गए थे । किसी तरह से कहा वह मैं कागज म लिखकर बताऊगी ।

बसत ठिठका । दोनो हाथों से उसके दोनो कधे पकडकर कहा तो तू प्यार करती है ! और झट खींचकर उसे छाती से लगा लिया ।

थर थर कापती हुई मालती बोली बसत-दा!

बसत ने एक न सुनी। उसके बाला को, कपाल को चूम लिया।

—नहीं-नहीं। —मालती बोली। मगर वह नहीं बनी कमजोर था वह गला बड़ा क्षीण था। चाद की रानी म उस खुली बहार म बसत की छाती में सिर रखकर उसन अपने को खो दिया था।

अचानक पीछे म साइकिल की घंटी बजी। चौंककर बसत ने उसे छोड़ दिया। वह हाफ रहा था। सो भी डरते हुए उसन देखा था। एक साइकिल आ रहा थी मगर दूर म थी करीब म नहीं। सामने कुछ था। सादा-सा दिख रहा था। गाय थी। साइकिल वाले को उतरना पड़ा था। गाय रास्ते से हटी नहीं। और फिर कच्ची सड़क। गाय से कतराकर पार हो करके वह आदमी साइकिल पर सवार हुआ। बसत ने वहा खड़ी मत रह चल।

चलते चलते उसने धीमे से पूछा देख लिया न?

—शायद नहीं। और तुरत वह जोर-जोर से बोलने लगा जमी दारी पाप है। एक घिनौनी प्रथा है। उठ गई आजादी का यही असली काम हुआ! अब लोगों को कुछ बड़े लोगों को राजा कहकर सलाम नहीं बजाना पड़ेगा। बाबू साहब हुजूर नहीं कहना होगा। अब बड़े बड़े जोतदार आएग।

साइकिलवाला उन लोगों को पार कर गया।

मालती ने पूछा कौन था?

—सरकारी आदमी। आजकल तो हरदम ही आता है।

—हमलोगों को देखा नहीं न?

—नहीं। और देखा ही तो क्या। मैं जात धरम तो मानता नहीं। ब्राह्मण-वष्णव, हिन्दू मुसलमान—यह सब भी नहीं। मैं तुमसे शादी करूगा। ब्याह भी नहीं मानता। लेकिन चूकि नियम है एक इसलिए करूगा। वह भी रजिस्ट्री से।

—रजिस्ट्री स?

—हां। बिना उसके शादी जायज कैसे होगी ?

मालती ने रजिस्ट्री से शादी की सुनी है। ठीक से नहीं जाने चाहे, जानती है। फिर भी जी में कैसा तो लगा। लेकिन कुछ पूछ नहीं सकी।

इतने में वे बस्ती के पास आ निकले।

बसंत ने कहा, पिताजी की वजह से नहीं कर पा रहा हूं समझी ? वह तो कट्टर ब्राह्मण हैं न। नहीं तो

उसके बाद एकाएक बोल उठा, मेरे साथ चली चलेगी ?

उसकी छाती धड़क उठी—चली चलूं ?

—हां। रात में उठकर चुपचाप—

—कहां ?

—कलकत्ता। या और कहीं।

वह चुप रह गई। जवाब नहीं दे सकी। अंदर से रह रहकर उसका मन कह उठता था, जाऊंगी। हां जाऊंगी। लेकिन मुंह से नहीं कह सकी। जितनी बार कहना चाहा गले में अटक गया।

घर पहुंची तो देखा, अजीब ही एक कांड। बाप ने रुद्र रूप धारण किया है और बकझक कर रहा है। जो भी मुंह में आता है, वही गाली बक रहा है।

चना मौसी ने बताया, दे बाबुआ से उसकी लड़ाई हो गई है। हाट से वह पहले ही चला आया था। गांजे की दुकान को जाना था। गांजा नहीं था। पक्का अस्त हो जाने के बाद वह दुकान बंद हो जाती है। दे बाबुआ का एक गुमाश्ता अफीम खाता है। वह अफीम खरीदने आया था। वहां गुमाश्ते ने इनके जुलूस और नारों की चर्चा की। कहा, समझे भाई साहब भगवान के राज्य में यदि ऐसा कानून हो कि मच्छर हाथी के समान हों, तो क्या हो। मेंडर ने हंसकर कहा, आप ही कहिए, क्या हो ?

—मेंढक टर-टर करता है और पेट फुलाता है। फुलाते फुलाते फटाक्! समझा।

धीमत से अपने को जब्त करते नहीं बना। वह बोला, छछूंदर का

बेटा चमगादड़, चुप रहो। हाथी नहीं बे, छुछूदर, छुछूदर।

इसीसे बात बहुत बढ़ गई। श्रीमत ने धक्का देकर गुमाश्ता को गिरा दिया। गुमाश्ता दे बाबू के पास गया। चपरासी आया था। श्रीमत ने उसे फटकार दिया, अबे जा ना। मैं किसीका रयत नहीं गुलाम नहीं—*मैं किसीके हुक्म पर नहीं जाता।*

बसत ने श्रीमत का हाथ पकड़ा, मेरे साथ चलो देखें।

बसत का वह क्रोधित रूप देखकर मालती का मन गौरव से भर उठा था। उनके साथ वह भी गई थी। उसके बाद जो कुछ हुआ मालती सोच नहीं सकी थी।

बसत ने दे बाबू से बराबर बहस की।

बसत से तर्क में दे बाबू नहीं टिक सके। आंखों से उसकी आग सी निकल रही थी। वह बोला आप सब जुल्मी की जात हैं—अंग्रेजों के हुक्म के बदले—आदमी का खून चूसकर बड़प्पन दिखाया किया है उसकी कैफियत आपको आज देनी पड़ रही है। आज आपकी सुख आखों की कोई परवा नहीं करता। और भी वक्त आ रहा है। आ रहा है। यह घर इसकी ईंटें *लकड़िया—सब जाएगी—*

दे बाबू ने चपरासी से कहा दे तो निकाल दे यहां से—

चपरासी ने बसत को ढकेला। हाथापाई हुई। वहीं पर एक रूल पड़ा था। बसत ने उसे उठाया और चपरासी के माथे पर दे मारा। खून बह निकला।

मालती को चीख पड़ने की इच्छा हुई—हाय यह क्या किया? गले से लेकिन आवाज ही नहीं निकली। बसत ने आकर उसका हाथ पकड़ा—चल। श्रीमत से कहा चलो श्रीमत।

लौट आए। लौटते ही बसत ने कहा मैं चलता हू श्रीमत?

श्रीमत ने कहा, कहां?

—अभी तो सथिया जा रहा हू। जरूरत हुई तो बाद में और कहीं

जाऊंगा। तुम भी बल्कि दो-एक दिन गांव से बाहर ही रहो ।

श्रीमंत मां चला गया था। वह गया, तुम लोगों को कोई डर नहीं। हां, वे लोग बुलाए तो जाना मत। मैं पास-पास ही रहूंगा। कभी कुछ हुआ तो मां पहुंचूंगा।

उन सब पर किसी तरह का जोर-जुल्म नहीं हुआ। हां, मामला हुआ। बाबुओं के उकसाए पुलिस ने उनपर दंगा और डकैती का इलजाम लगाना चाहा था। अदालत में वह नहीं टिका। लेकिन श्रीमंत और बसंत बेदाग भी नहीं छूटे। दोनों को कम से तीन और छे महीने की सजा हुई। लोगों ने मालती को भी समेटा था। मगर वह बेकसूर छूटी।

पुलिस ने बसंत को कम्युनिस्ट बताया। लेकिन हाकिम ने हंसकर वकील से पूछा, धनी और जमींदार से लड़ने से ही कोई कम्युनिस्ट होता है क्या? फिर तो कांग्रेस भी जमींदारी उन्मूलन का समर्थन करती है। कांग्रेस वाले भी कम्युनिस्ट हो गए? यह छोकरा तो उस रोज कांग्रेसी झंडा लेकर जुलूस निकाल रहा था।

इससे लेकिन बसंत बचा जरूर नहीं।

जेल जाते वक्त बोला, मैंने कांग्रेस को छोड़ दिया। मालती, खबरदार उन लोगों के बुलाए मत जाना।

मालती ठीक ही नहीं गई। गौरी बाबू ने एकाध बार बुलवा भेजा था। मालती ने मना कर दिया।

श्रीमंत की दुकान को मालती ही चलाने लगी थी। बाप के साथ दुकान में बैठा तो करती ही थी। खरीद बिक्री देखती थी। श्रीमंत न होता तो वही बेचा भी करती थी। बाप को सजा हो गई, तो वही धरती चाचा की दुकान के आधे हिस्से में दुकान किया करती थी।

धरती भी कहता बड़ा अच्छा किया बिटिया, वह सब में नहीं पड़ी। वह सब गौरी बाबू वगैरह के लिए ही ठीक है। यूनियन बोर्ड का परसीडेंट, चुनाव, सभा-समिति, यह सब उन्हीं लोगों के लिए ठीक है। मैंने

श्रीमत से कितनी बार कहा तू यह सब मत किया कर। और उस्ताद के बेटे की तो बात ही छोड़ो। महिरावण का बेटा अहिरावण धरती पर गिरने के बाद भी लड़ता है यह तो उससे भी एक-कदम आगे है। उस्ताद का बेटा लाट साहब। ऐसा मुंहफोड़ उस समय नहीं था। आज ही कल हुआ है। दो पन्ना अंगरेजी पढ़ी और वंदेमातरम का नारा—समझ गई इसी में अंडा फाड़कर साप के बच्चे-सा उनका जनम हो गया। सच पूछो तो यह सब गांधी ही कर गया बिटिया!

मालती मन ही मन हंसती। हंसी के बहुत से कारण थे। उनियन बोर्ड परसीडेंट—उसके बाद यह खौफ—इससे उसे हंसी आती। फिर कहता तुम लोगों का समय अभी खराब है बिटिया।

चंपा मौसी भी कहती मौसी दिन काल खराब पड़ा है। होशियारी से चलना।

लेकिन चंपा धरनी चाचा जैसी नहीं है। बसंत के बारे में कहती लड़का अब लीडर हो गया। जेल हो आया। अबकी जरूर चुनाव में खड़ा होगा। देख लेना। लेकिन हां, हिम्मत है। कलेजा है। अबकी उसकी पूछ नहीं पकड़ सकोगी। देख लेना।

मन ही मन मालती कहती तुम देखना!

कि इसी बीच और एक घटना घट गई। खोकाठाकुर से जो पोखर खरीदा था उसे गंधेश्वरी थान के तंबाकूवाले बासदेव दुबे ने जबरदस्ती दखल कर लिया।

चंपा मालती को लेकर दौड़ी दौड़ी गई थी।

मालती ने चिल्लाकर कहा क्या दुबेजी पोखरा हमलोगों का है। आप जोर-जबरदस्ती मछली क्यों मरवा रहे हैं? यह क्या अंधेर नगरी है! जिसकी लाठी उसकी भैंस।

बासदेव बोला इसे मैंने बाबुओं से खरीद लिया।

—पोखर दे बाबुओं का नहीं हमारा है। हमलोगों ने खोकाठाकुर से खरीदा है!

—दे बाबुओं ने पोखर खोकाठाकुर के बाप को या ही भोग करने के लिए दिया था, बेचा नहीं था। दान भी नहीं दिया था। जबानी कह दिया था, पोखरे में मछली की खेती करो खाओ। दान करने या वचन का हक उसे नहीं दिया था। कोई कागज-पत्तर हो तो दिखाओ। कचहरी की शरण लो।

मालती घरणी चाचा के पास गई थी। वह बोला, यही तो र बिटिया, यह तो बड़ा उलझा हुआ मामला लगता है। दे बाबू न कुछ लिखकर तो नहीं दिया था। उस जमाने के आदमी, उनके मुह की बात की ही कीमत थी। सो मैं कुछ कह नहीं पा रहा हू। बल्कि चलो, जरा मूती सरकार के पास चलें। वह कायदा-कानून जानता है। इस हलके के जमीन जिरात व हक-हकूक का उसे पता है। वह बताएगा।

मूती सरकार ने कहा, मामला पेचीदा है। उलझन वाला है। पिछले सेट्लमेंट के परचे में पोखर दे बाबू के नाम से है। लाखराज। उसके बाद बाबू ने जबानी दान कर दिया। कुछ लिखा-पढ़ी नहीं की। लाखराज का सेस देना पड़ता है। ठाकुर ने वह सेस भी कभी नहीं दिया। वह भी दे बाबू ही देते आए। और पाच का जस देते थ, देत रहे। एक ही सबूत था दखल। वह भी बासदेव ने बेदखल कर दिया। श्रीमत जेल म है। उसकी गैर हाजिरी [illegible] बेदखल किया, अब स्वल जमाना आसान नहीं है। मुश्किल है भया। असल बात यह है, श्रीमत ने बाबुओ से लड़ाई कर ली। उस छोकरे बसत के साथ उछल-कूद की। बाबू लोग बिगड़ गए। मौका ढूढ रहे थे पाव मिल गई। लिखा-पढ़ी नहीं है। सेस बाबू लोग ही देते हैं। परचा बाबुओं के ही नाम है। श्रीमत रहा नहीं, बाबुओं न बासदेव को बुलाकर दा सौ रुपय म द दिया। बासदेव दुबे का पेशा ही यही है। वह फौजदारी मुकदमा खरीदा करता है। मुश्किल है भया। खैर, थान म डायरी तो लिखा दो। फौजदारी करे तो तुम लोग रोक नहीं सकोगे। लाख हा औरतें ही तो हो।

सुनकर मालती ने कहा, मैं जाऊंगी।

उस बसंत का उदाहरण याद आता। उसका एक दिन स्कूल के लड़कों को स्कूल जाने से रोका था। जुनून जिसका मना था। इसके लिए कुछ लड़का था स्कूल जाने से रोकने के लिए रास्ते पर लेट गया था। मालती वहीं करेगी। वह पोखरे के घाट पर लेट जाएगी। जब लोग जाल निकालेंगे राह रोककर के लेट जाएगी।

किया भी वही। मगर कोई नतीजा नहीं निकला। लोगों को गवाह रखकर वासदेव ने उसे उठवाकर दूसरी जगह लिटा दिया था। मालती आखिर वासदेव को गाली गलौज करती हुई नाकामयाब होकर लौट आई।

श्रीमत तीन महीने के बाद लौटा। जो श्रीमत लौटा, वह और भी खूंखार श्रीमत था। वह फौजदारी के लिए आमादा हुआ। लेकिन वासदेव ने थाने में खबर भेजी और अदालत से श्रीमत पर नोटिस कराई कि वह दंगा करने के लिए पोखर पर न आए।

श्रीमत भी थाने गया। उसने भी वासदेव पर नोटिस कराई। लेकिन बीच ही में चरम दुर्घटना घट गई।

ओ उसकी याद आने से देह सिहर उठती है। अंधेरी रात थी—

हाट की ओर जो उजाला था उसके नीचे भी वैसा ही अंधेरा थम थम कर रहा था। हाट टूट रही थी। धरनी अपना सामान समेट रहा था। धरनी का माटिया सब बांध रहा था। धरनी चाचा हिसाब मिला रहा था। आलू-प्याज वाले अनबिके आलू-प्याज को बोरे में भर रहे थे। बगनवाले अभी भी चीख रहे थे—बहुत सस्ता लगा दिया—बहुत सस्ता बगन!

कुछ बच्चे गिरे हुए आलू प्याज बीन रहे थे।

खिलखिलाकर हंस कौन रही है? चुनरिया? टिकली? नहीं। वे नहीं। और कोई है। हाट में चुनरिया टिकली बहुत हैं! क्या कह रही

है ? बात सुनाई पडी—हाय मेरी मा । मेरे लिए सोच रहे हो ? किसके साथ जाऊगी ? मेरा मरा खसम भूत बन गया है। मेरे साथ साथ डोलता है।

मालती समझ गई । कोई विधवा युवती बोल रही है। साहम खूब है!

घरनी वाला—आ गई बिटिया—अपनी टोकरी भी नहीं खोली—बैठी ही रहो। अब तो हाट टूट रही है। घर जाऊगा। तुम भी घर जाओ।

—हा बाबा, जाती हू। आज बिसात नही बिछाई। ब्याहिन ही नहीं हुई। बैठी-बैठी देखती और सोचती रही। कल से ही कितनी बातें याद आ रही हैं।

—बात तो याद आएगी ही। लेकिन तुमने क्या दुकान करने की सोची है ?

मालती ने कहा, कुछ तो करना ही पडेगा। पेट तो पोसना है। मौसी भीख मागती है। मैं तो माग नहीं सकूगी।

—हा। चपा भीख मागती है। मैंने उससे कहा था बिटिया चपा वह कुछ काम-काज करके तो खा सकती हो। लोगो का कुछ भून भान दे सकती हो, पानी भर दे सकती हो। काफी घर हो गए हैं। हर कोई तो दाई-नौकर नही रख सकता है। ठीके पर पानी भरवाता है। पाच-सात घर का पानी भर दो तो पैंतीस चालीस रुपये हो जाए। वह बोली वह भी करूगी। लेकिन वैष्णव की बेटी हू गौर के नाम से भीख मागकर धरम बचाऊ। दिन म तो गौर का हरि का नाम लिया नही जा सकता है जेठजी ! देख लो तुम्हारा भाइ वैष्णव होकर भी नाम नहीं लेता था। कमाकर खाने के गव से जायदाद के ताप से सब भूल गया था। कभी लोभ, कभी ईर्ष्या, बात हुई कि कोई मछली नहीं मारेगा, अदालत का फसला होने तक कोई पोखर दखल नहीं करेगा। मगर इतना भी धीरज नहीं रहा। चोरी करके मछली मारने गया !

श्रीमत ने बडे जतन से बडी बडी मछलिया तयार की थी। दस सेर बारह सेर, कोई-कोई पद्रह-सोलह सेर की भी। बडी मछलिया रोहू या भिरका थी। पाच-सात सेर वाली तो बहुत ही थी। लोगा के क्रिया-कम म कभी-कभी बेचा करता था श्रीमत। अस्सी, नब्बे सौ रुपया मन।

वसी मछलिया बासदेव ने सभी पकडवा ली। पहले दिन तो गाव मे बाट दी।

बासदेव पछाही ब्राह्मण था। खुद मछली नही खाता। बाल-बच्चे खाते। उसने पोखर मछली के लिए नही खरीदा था। पोखर को पोखर के लिए ही खरीदा था जायदाद के लिए। सस्ते म खरीदा। ऐसा ही खरीदता है वह। झगडा झमटवाली सपत्ति सस्ते दाम म खरीदा करता। मामला-मुकदमा भी वह समझता है जानता है।

श्रीमत के अफसोस की सीमा नही थी। जिद का भी अत नही था। मामले के लिए उसने उस्ताद को पकडा। उस्ताद के साथ शहर जाता। मामले की चाल घोघे से भी कम थी। उसी चाल से चल रहा था मामला। रहते रहते श्रीमत का धीरज टूट गया। क्वार का महीना। भरा हुआ पासरा। घूप तेज होने से मछलिया पानी से ऊपर उमका करती। जब बारिश का पानी उतरता तो किनारे आकर सेंवारो को हिलाया करती। बडी-बडी मछलिया।

एक दिन गहरी रात म वह चारा काटी गाड आया। मछलिया को इसी तरह पकड-पकडकर खा जाएगा। किसी भी दिन वह एक ही समय में नहीं निकलता। कभी आधी रात म तो कभी रात के अतिम पहर म। कभी-कभी लोग-बाग के शौच ही वह चारा डाल आता। चारा काटी की फुनगी को इस चालाकी स रखता था कि उसके सिवाय और कोई नही पकड सकता था। मालसा को अपन साथ स जाया करता। वह पहरा दिया करती और वह चारा डालता। चुपके से पानी म उतर-

कर चारा की पोटली बांध देता। सात दिन के बाद पहली बार उसने मछली पकडी। मालती के हाथ में एक मुगरी दे रखी थी। मछली जमीन पर आई नहीं कि उसने मारा और ले आकर उसे एक गड्ढे में गाड दिया। पकाने से बू होती और लोग जान जाते।

पांचवें दिन की बात।

उस दिन एक रोहू फंसी। बारह सेर की। बाप-बेटी मिलकर मछली को घर ले आए। दोनों हांफ रहे थे। चपा दरवाजा बंद किए खडी थी। उस रोज श्रीमत ने उसे माटी में नहीं गाडा। कहा, रोहू है! काटो इसे। इसका माथा और पेटी खाएंगे। बाकी सब गाड देंगे। काटो।

मालती बचपन से ही मछली काटा करती थी। चपा कहती, बाप रे, वह लहू मुझसे नहीं देखा जाएगा!

मालती हंसती।

वह मछली कूटने लगी। हंसिया बडी धारवाली थी। श्रीमत ने फरमाइश देकर बनवाई थी। वह मछली का पेट काटकर साफ कर रही थी, श्रीमत हसरत भरी निगाह से बैठा देख रहा था और जुबान से मारे रह-रह उठता था—साला!

बार-बार कह रहा था। एक-दो बार कहने से संतोष नहीं हो रहा था। ठीक इसी वक्त चपा ओसारे पर से एक भयभीत चित्कार कर उठी—मा

क्या हुआ, यह समझने से पहले ही दीवार से अंदर कूद आया था बासदेव दुबे।

—साला। चोट्टा! हरामी कहीं का!

श्रीमत बलवान आदमी था। बासदेव उससे भी बलवान था। इसके सिवा वह औचक कूद पडा था। सो श्रीमत को नीचे दबाकर उसका गला दबोच दिया था।—साला, चोट्टा!

श्रीमत को अपने बचाव का कोई मौका नहीं मिला—सिर्फ एक शब्द एक घर्राहट-सी उसके गले से निकल पडी।

मालती हक्की बक्की-सी हँसिए के सामने बैठी थी। चपा ने दौड़कर पीछे से वासदेव को खींचा।—हाय राम, मर गया, मर गया! मजी आ!

वासदेव ने उसे हाथ से झटक दिया। वह झटका ऐसे जोर का था कि चपा पछाड़ खाकर गिर पड़ी थी। फिर भी वह चिल्लाई, मालती!

मालती के सिर पर खून सवार हो गया। गुस्से के मारे उसे ज्ञान नहीं रहा। उसने हँसिया उठाई और जोर से वासदेव की गर्दन पर दे मारा। बाईं ओर गले में हँसिया लगभग आधी धस गई।

वासदेव के मुँह से एक चीख निकली। जानवर जैसी। मा उसके साथ ही चपा चीख उठी—मालती! यह क्या किया?

उधर सदर दरवाजा तोड़कर वासदेव के आदमी घुस आए। मालती की आँखों के सामने और कुछ नहीं, केवल अँधेरे में मानो गाढ़ी काली-सी बहुत कुछ थी। लेकिन गम। उफ कितनी गम!

श्रीमत नहीं मरा। मरा वासदेव। अस्पताल दोनों को ले जाया गया था। श्रीमत भी बेहोश था। वासदेव भी कुछ ही क्षण में बेहोश हो गया था, परन्तु बेहोश होने से पहले उसने इतना कहा था उस उस औरत मालती ने मेरी गरदन पर हँसिए का वार किया।

मरने से पहले अस्पताल में भी उसे एक बार होश आया था—उस समय भी उसने पुलिस के सामने, एक हाकिम के सामने यह बात कही थी।

मालती ने भी इनकार नहीं किया। अजीब बदहवास-सी हो गई थी। उसी हालत में उसने हा कह दिया था। कहा बाबूजी केवल से घरों रह ये मौसी छुड़ाने गई—वासदेव ने झटके से उसे गिरा दिया मैं हँसिए से मछली कूट रही थी—उसी से मैंने वार कर दिया।

रात भर वह हाजत में औंधी पड़ी रही। नींद आती थी पर आतंक

के मारे टूट टूट जाती थी। अर्धनिद्राए हाल म वह डर के मारे रो पडी थी। मानविता राना।

मा । रात कसी थी वह !

सवेरे उसमे उठकर खडे होने का दम नहीं था। दारोगा का उमपर माया हो आई थी। तेरह चौदह साल की लडकी ! उसने उसे नहलाकर भोजन कराया। उसके बाद सदर को चालान किया।

मालती ने झूठ बयान नहीं दिया। छोटी अदालत म भी नहीं, और म भी नहीं। उस्ताद के साथ आकर चपा ने सदर म उससे मुलाकात की थी। श्रीमन उस समय तब भी अस्पताल म था। उसे भी कम चोट नहीं आई थी। गला उसका बठ गया था। दौरा अदालत म जब सुनवाई चल रही थी, तब वह आया था। कमा हट्टा-कट्टा, मजबूत शरीर, वह माना कैसा हो गया था। हड्डिया ही हड्डिया। जबडा उभर आया था। बँहुली की हडडी निकल आई थी। आखें धस गई थी। गाल पिचक गए थे। खसता था। हाफता था। गला बठ गया था।

रोता था। अदालत म ही दीवाल के सहारे खडा रहता और आखो से अविराम आसू की धारा बहती होती।

पहले वह खुद भी विह्वल-सी हो गई थी। जेलखाने व ऊची दीवारो के घेरे के अदर दूसरी एक छोटी-सी घिरी हुई जगह। स्त्रिया की जेल। नारी कदी पहरा दती। एक लब स बड कमर म नारी-कदी रहती थीं। उस समय आठ जन थी। तीन मुसलमान। पाच हिन्दू। एक कम उमर की विधवा ब्राह्मणी थी। विधवा होने क बाद उस सतति हुई थी। उस बच्चे का उसने गला घोटकर मार डाला था। तीन ने अपने अपने पति का मारा था। बाकी तीन चार थी। एक अधेड थी। बडी साफ-सुथरी। बहुत बोलती। अच्छी अच्छी बात। गीत अच्छा गाती थी। कहती थी, मैंने कुछ नहीं किया। लेकिन दूसरी स्त्रिया कहती कि लडकिया को घर से भगाकर बेच देना उसका काम था। वेश्यागिरी भी करती थी। इसके लिए उसे सजा हुई।

मालती को उस समय की सारी बातें ठीक-ठीक याद नहीं आती। कैसी तो हो गई थी वह। उसे एक बड़ा भारी खौफ था—खून करने से फांसी होती है। उसने खून किया है।

जुबेदा अधेड़ थी। बूढ़े मुख्तार की बीवी। उस मुख्तार के मुहर्रिर से आशनाई थी। उससे मिलकर साज़िश करके उसने पति को जहर दे दिया था। बच्चा नहीं हुआ था, इसलिए बूढ़ा मुख्तार फिर से शादी करने जा रहा था। उसे दस साल की कैद हुई। और उस मुहर्रिर को पांच साल की।

जुबेदा ने उससे कहा, अरी लड़की सोच मत। फांसी तुझे नहीं होगी। मुझे कानून मालूम है। तेरी उम्र कम है। और फिर वह तुम्हारे बाप का खून कर रहा था, उसे बचाने के लिए तुमने हंसिया चला दी। खून करने के लिए हंसिया नहीं चलाई।

अधेड़ सुशीला ने कहा, छोटी तू चिंता मत कर। बेकसूर छूट जाएगी तू। कोमल मुखड़ा है ढल ढल चेहरा। अदालत में टुकुर-टुकुर ताका करना। अच्छी लड़की बनी रहना। समझ गई तेरा यह चेहरा देखकर ही सब भूल जाएगा। वकील फकील सब। अभी जिस तरह से हमारी तरफ ताक रही है ऐसा ही ताकने से काम चल जाएगा।

और सचमुच ही वह सूधी-सी ताकती रहती। वह ऊंची दीवार इतना लंबा कमरा, ऊंची छत। एक सिर्फ आकाश की धूप-हवा के सिवा वहां बाहर का कुछ भी नहीं आता। शब्द भी नहीं। कभी कभी अचानक ही शायद हो कि कोई शोरगुल आ पहुंचे। जुबेदा वगैरह को कौतूहल होता क्या हुआ?

स्त्री मेट से पूछती आज बाहर क्या हुआ है जानती हो? कभी खबर मिलती कभी नहीं मिलती। कौतूहल भी उनका खत्म हो जाता। उसे पहल-पहल ऐसी आवाज सुनकर भी कोई कौतूहल कोई प्रश्न नहीं जगता था। धूप और हवा से सिर्फ इतना ही लगता कि वह इसी दुनिया में है। इस दीवार के बाहर वही धरती है, जहां भुवनपुर की हाट

लगती है। रास्ते से लारी जाती है, गाडी जाती है। जहां चंपा मौसी है। बप्पा है।

रात को बसंत की याद आती। रात को जेलखाना ही पूरी पृथ्वी बन जाती। लगता, इससे बाहर कुछ नहीं है। तब लगता, बसंत तो यहीं है। शुरू के दो दिन उस बसंत की याद नहीं आई। तीसरे दिन अचानक ही याद आ गई। बसंत जेल में है। और इसी जेल में है। रात को लेटे लेटे सोचती। अपने आप से पूछती, कहां है बसंत ? कैसे उसे खबर भेजे।

जुबेदा वगैरह के नाच की महफिल जमती उस समय। वह प्रौढा गाती। जुबेदा बैठकर सुनती। हमीदा और कमला नाचती। विधवा ब्राह्मणी पीठ फेरकर सोई रहती। कैसी तो थी वह। वह शायद पढ़ी लिखी थी।

सुशीला अश्लील गाना गाती। वह सब भी भद्दी अदाएं दिखाकर नाचती।

मालती सोचती, बसंत कहां है ? कैसे भेंट होगी उससे ?

धीरे धीरे वह सहज हो आई। सब सह गया। खिड़की के पास बैठी रहती और उन सबकी बातें सुना करती। बड़ा अच्छा लगता। रात को नाच गाना भी देखती-सुनती।

इसी बीच मामले की सुनवाई शुरू हुई। क दिन एक वकील आया। उसे बहुत कुछ बताया। कुछ याद नहीं रहा। एक बात याद है—कहा था, तुम एक ही बात कहना। मैं बेकसूर हूं।

पहली बार जिस दिन वह जेल के बाहर जाल घिरी गाडी से अदालत आई थी, उस दिन वह तमाम रास्ता जाल से मुंह सटाकर देखती हुई आई थी।

ओह, कितने लोग ! रास्ते पर कितने लोग कैसे चल रहे हैं ! कितनी रागनी कितना शोर। भुवनपुर की हाट याद आ गई।

अदालत में अपने बाप को देखा। पहली नजर में उसे पहचान नहीं सकी। दुस्सी धंसी आंखें—यह मानो उसके बलवान बाप का प्रेत हो !

कगाल। यह रोई थी। उसका बाप भी रोया था।

अदालत म खड़े होने के बाद वह फिर विद्रूप-सी हो गई। जज जूरी वकील चपरासी सिपाही—बहुत से लोगो को देखकर छाती उसकी धड़कने लगी गला सूखकर काठ हो गया। लगा जुबान न उसे झूठा दिलासा दिया और सिराज न उसस मजाक किया है। य सब लोग किस तरह स उसको घूर ताक रहे हैं। सबकी निगाहा म उसे तिरस्कार नजर आया। बसी तो हो गई वह!

एक न उसस पूछा तुम दोषी हो कि निर्दोष?

वह बदहवास-सी बोली, ए!

—अपने गाव के बासदेव दुबे का तुमने हसिया से खून कर दिया है। पुलिस कहती है—

आगे उसन नही कहने दिया—बीच ही म बोलना शुरू कर दिया, हा, म हसिया स मछली कूट रही थी। बासदेव दीवाल फादकर आया। मेरे बाप की छाती पर बठकर उसका गला दबोचने लगा। चपा मौसी चीख उठी हाय हाय, मर गया। बासदेव ने हाथ के झटके से उसे गिरा दिया—मैंने पीछे से उसकी गरदन पर हसिया चला दी।

उसका वकील कुछ कहने जा रहा था। उसने कहने नहीं दिया। जज साहब ने मना कर दिया। फिर पूछा तुमने उसे मारा था, इसलिए कि वह तुम्हारे बाप को मार रहा था या उसपर तुम्हे गुस्सा भी था?

वह बोली, गुस्सा भी था। उसन जबदस्ती हमारा पोखर छीन लिया था। जबरदस्ती मछली मरवा रहा था। मैं सत्याग्रह करके घाट पर लेट गई थी—मुझे कीचड लिपटाकर जबरदस्ती उठाकर ऊपर फेंक दिया था।

आज उसने समझा उस समय वह बात नही कहनी चाहिए थी।

चपा मौसी ने थोडा सा झूठ कहा था। कहा बासदेव न उसे ऐसा झटका दिया कि वह बेहोश हो गई थी। जब होश आया तो देखा घर मे भीड लगी है। बासदेव दुबे लहू म नहा गया है। पड़ा हुआ है। गरदन

पर गहरा घाव।

तीन साल की सजा हुई उसे।

तीन साल बद नहीं रहना पड़ा। दो महीने से ज्यादा घट गई सजा। छूट कर कल घर आई है।

जेल म वह बहुत बडी हो गई। उमर बढी। रूप तो गजब का हो गया। उज्वल सावला रग गोरा हो गया। यही नही चपा मौसी न कहा, तुमम कहू क्या मौसा, देखन से लगता है, कोई राजकुमारी खडी है। हाय रे, बलिहारी जाऊ।

अपने बाप की याद करते-करते वह स्टेशन पर उतरी और एक रिक्शा करके घर आई। स्टेशन पर रिक्शा था देखकर जरा अवाक हुई। यहा रिक्शा? कोलतार की सडक। उसके बाद एक जगह बहुत-सी लारिया खडी देखीं। रिक्शावाले ने बताया, यह लारी का पडाव है। स्टेशन से माल लेकर भुवनपुर जाती है। मिल से चावल लाकर यहा पहुचाती है। उसके बाद ऊचे-ऊचे खभो पर तार नजर आया। सुना था उसने कि बिजली आ गई है। उसका बाप श्रीमन, दो साल हुए, मर गया। जेल में ही खबर मिली थी। उस समय वह बरहमपुर जल मे थी। पहले बडा शोक हुआ। कई दिनो तक खूब रोती रही। फिर जैसे कद सह गई थी, वह भी सह गई। कदी सुषमा ने उसे बताया था। वेश्या थी वह। बहुत बडे डकैत की माशूका थी। उस डकैत का ही उसने खून कर दिया था। क्योकि उसे दूसरी औरत से मुहब्बत हो गई थी। सुषमा के घर से डकैती का माल भी मिला था। बारह साल की सजा हुई है। उमर म वह काफी बडी है। फिर भी मालती को मानती है। उसी ने कहा, रो मत मालती। रोना नही चाहिए। यह जेलखाना को है गमखाना है। गुम हाकर रह। रो मत। रो कर होगा भी क्या?

मगर वह रोई थी। बिना रोए रहा नहीं गया। सुषमा ने कहा, खर, रो तो पा रही है तू? रुलाई है? हमारी तो रुलाई रही नहीं। आखों का पानी शायद सूख गया है।

कई दिनों में इसका भी मूल्य लगा था। बगीचे भर आम भरा उसमें मिला गई थी। बसंत ने कहा था। उस दिन पता गई मालती भरा गई। उसकी नजर बसंत पर टिकी रही।

चलते चलते ही बसंत से बात हुई। बार बार उसका जी भाग-दौड़ कर हटाता था। मैं हुआ दिल्ली चली गई थी।

आज स्टेशन पर उतरते ही पहला उस बार का याद आई। उस मां को ही जी जान से याद करते रहे। बावजूद इसके दूसरे लोग और दूसरी चिंता को उसका मन हटा लिया था। उसकी बात को गिनकर बार-बार बसंत मां याद आता रहा था। लेकिन उसने उस ध्यान नहीं दिया। यहां के अजब परिवर्तन को देखकर आश्चर्य भी उसकी जगह आकर खड़ा होना चाहता था। आंखों के सामने जो बदलाव प्रत्यक्ष थे—लारियां बिजली के खंभे सिनेमा की तरह लगे स्कूल का भवन मिल की चिमनी दस की नई मोटर—इन चीजों का तो हटाया नहीं जा सकता। लेकिन गजब हुआ था इन सारी चीजों को ओट करके उसका बाप सामने आ खड़ा हुआ था। आंखों की दृष्टि उसकी या तो थी ही नहीं या अजीब ढंग से अन्दर को हो गई थी। यह अनोखी अभिज्ञता मालती जेल से ले आई थी। शायद हो कि जलखाने में यह सबको होता हो। नाना लोगों के हो-हल्ला में हठात् आंखों की निगाह अजीब तरह से आंखों में जो नहीं है वही देखती। वह बसंत को देखा करती थी।

चंपा मौसी दरवाजे पर ही खड़ी थी। उसने बसंत की उम्मीद की थी। लेकिन बसंत नहीं था। तो भी उसके लिए जी में कुछ नहीं हुआ। मौका ही नहीं मिला। बाप की ही याद आई। कलेजे के अंदर एक आवेग मानो कुंडली बांधकर घूम रहा था।

चंपा मौसी का परिवर्तन दिखाई देते हुए भी दिखाई नहीं दिया। कपाल पर तिलक। नाक पर रसकली। माथे पर सामने की ओर जूड़ा गले में तुलसी की मोटी माला। चंपा की चिट्ठी से ही पता चला

था, धर्म के नाम चंपा भीख मांगती है। भगवान को भजती है।

मालती की आशा से आमू वह आया था। जोर से बप्पा बप्पा कह कर वह रो नहीं सकी थी। चंपा उसकी ओर ताकती हुई खड़ी थी। अवाक् होकर दब रही थी। अचानक उसका हाथ पकड़कर चंपा बोल उठी थी, तुमसे बहू क्या मौसी, देखकर लगता है, कोई राजकुमारी आकर खड़ी हो गई है। आह बलिहारी जाऊं!

उसकी बातों में अजीब अकृत्रिम मिठास थी। शहद जैसी। कि पल में मन से उसका पाप अदृश्य हो गया। खिली हंसी जैसा भला लगने का एक सुर मन में जग पड़ा था। दाम भी आई थी। जरा हंसकर बोली, कहती क्या हो मौसी!

—कहूं क्या रे! मौसी का नाता भुलाया चाहता है। जी में आता है तुमको राधा बनाऊं, मैं सखी बन बनूं!

मालती अबकी और भी हंसी। कहां मरण तुम्हारा!

दिन में फिर कोई खास बात नहीं हुई। पड़ोसी में से दो-चार जने उसे देखने आए थे। उसे देखकर वे हैरान रह गए थे। उसका रूप और साज सिंगार देखकर दंग रह गए थे।

जो लोग खून के जुर्म में जेल जाते हैं, वे ऐसे सजे-सवरे और ऐसा रूप लिए कैसे लौटते हैं!

एक ने तो पूछ ही लिया यह सब कपड़ा-लत्ता तुझे जेल में मिला है?

मालती ने कहा आजकल जेल में मेहनत की मजूरी मिलती है। वह रुपया जमा रहता है। निकलते वक्त देता है। उसी रकम से मैंने सब खरीदा है।

—कौन सा काम कराता था तुझसे? कोल्हू घुमाने देता था?

मालती हंस उठी कोल्हू? कोल्हू घुमाने क्यों देने लगा? मालती की भाषा भी सुधर गई थी। उसने कहा, औरतों को कोल्हू का काम नहीं देता है। दूसरा काम देता है सिखाता है।

तात का काम सिलाई दरी बुनना भी कोई-कोई सीखती है। खिलौना बनाने का काम है। जिनसे यह सब नहीं होता उन्हें चावल बीनने देता है। किताब पढ़ने को देता है।

—ओह हो, तब तो बड़ा अच्छा है। खाने-पीने की चिन्ता नहीं। कैसी खूबसूरती निखरी है! घर होती तो यह रूप हरगिज नहीं होता।

—जाओ न! रह आओ वहां। तुम्हारा भी रूप निखरेगा।

उसने लेकिन बुरा नहीं माना। बोली जिसके रूप होता है, निखरता है। रूप न हो तो निखरेगा क्या? मैं वहां जाकर क्या करूंगी?

मालती बोली, जैसा रूप तुम्हारा है, उस हिसाब से तो निखरेगा। तुम्हारे पति-देवता की आंखें जुड़ाएंगी।

—अरी, उमर हो गई। अब क्या तेरा जैसा है, वैसा कलेजा है कि खून करके जेल जाऊं!

कोई दूसरी बीच में आ पड़ी, यह सब क्या कह रही हो पाल बूढ़ी। यह भी कुछ कहने की बात है! खून कोई बाहदुर करती है क्या या कि औरतें खून कर सकती हैं? हो जाता है। छोड़ो ये बातें।

—छोड़ना क्या मामी! खून औरतें भी कर सकती हैं, करती हैं। हमारे साथ सौ-सवा सौ औरतें थीं। उनमें से ऐसी भी बहुत थीं, जो खून करके दस-बारह साल की सजा काट रही थीं।

—ऐं! कह क्या रही है!

—हां। और मजे की बात मालूम है ज्यादातर खून अपने पति का किया है या प्रेमी का? ज्यादातर जहर दिया। एक ने अपने पति के सर को पत्थर से चूर दिया था।

—हाय मेरी मैया! चूर कैसे दिया?

—मैंने पूछा था। उसने हंसकर कहा, आखिर करती क्या? देवर से प्रेम हो गया था। वह प्रेम ऐसा हुआ कि पति कांटा बन गया। पति दो कोस दूर एक बाबू के यहां काम करता था। गुवहा या सो रात को अचानक आ धमकता था। एक दिन तो पकड़ ही लिया था लगभग। असह्य हो उठा। उस दिन वह छुट्टी लेकर घर आया था। हम दोनों सो रहे थे। वह तो सो गया मुझे नींद नहीं आई। घर में सिटकनी नहीं थी—आध मन के एक पत्थर से रोक दे दी जाती थी। मैं जगी। अब

दिन में फिर कोई खास बात नहीं हुई। पड़ोसी में से दो चार जने उसे देखने आए थे। उसे देखकर वे हैरान रह गए थे। उसका रूप और साज सिंगार देखकर दंग रह गए थे।

जो लोग खून के जुर्म में जेल जाते हैं, वे ऐसे सजे-सवरे और ऐसा रूप लिए कैसे लौटते हैं!

एक ने तो पूछ ही लिया यह सब कपड़ा लत्ता तुझे जेल में मिला है?

मालती ने कहा आजकल जेल में मेहनत की मजूरी मिलती है। वह रुपया जमा रहता है। निकलते वक्त देता है। उसी रकम से मैंने सब खरीदा है।

—कौन सा काम कराता था तुमसे? कोल्हू घुमाने देता था?

मालती हंस उठी कोल्हू? कोल्हू घुमाने क्यों देने लगा? मालती की भाषा भी सुधर गई थी। उसने कहा, औरतों को कोल्हू का काम नहीं देता है। दूसरा काम देता है सिखाता है।

तांत का काम सिलाई, दरी बुनना भी कोई-कोई सीखती है। खिलौना बनाने का काम है। जिनसे यह सब नहीं होता उन्हें चावल बीनने देता है। किताब पढ़ने को देता है।

—ओह हो, तब तो बडा अच्छा है। खाने-पीने की चिंता नहीं। कसी खूबसूरती निखरी है! घर होती तो यह रूप हरगिज नहीं होता।

—जाओ न! रह आओ वहा। तुम्हारा भी रूप निखरेगा।

उसने लेकिन बुरा नही माना। बोली, जिसके रूप होता है, निखरता है। रूप न हो तो निखरेगा क्या? मैं वहा जाकर क्या करूगी?

मालती बोली, जैसा रूप तुम्हारा है, उस हिसाब से तो निखरेगा। तुम्हारे पति-देवता की आखें जुडाएगी।

—मरी उमर हो गई। अब क्या तेरा जसा है वसा कलेजा है कि खून करके जेल जाऊ!

कोई दूसरी बीच म आ पडी, यह सब क्या कह रही हो पाल बूढी। यह भी कुछ कहन की बात है! खून कोई चाहकर करती है क्या या कि औरतें खून कर सकती है? हो जाना है। छोडो वे बातें।

—छोडना क्या भाभी! खून औरतें भी कर सकती हैं, करती हैं। हमारे साथ सौ-सवा सौ औरतें थी। उनमें से ऐसी भी बहुत थी, जो खून करके दस बारह साल की सजा काट रही थी।

—ऐं! कह क्या रही है!

—हा! और मजे की बात मालूम है ज्यादातर खून अपने पति का किया है या प्रेमी का? ज्यादातर जहर दिया। एक ने अपने पति के सर को पत्थर से चूर किया था।

—हाय मेरी मैया! चूर कसे किया?

—मैंने पूछा था। उसने हसकर कहा, आखिर करती क्या? देवर से प्रेम हो गया था। वह प्रेम ऐसा हुआ कि पति काटा बन गया। पति दो कोस दूर एक बाबू के यहा काम करता था। गुजरता था सो रात को अचानक आ धमकता था। एक दिन तो पकड हो लिया था लगभग। असह्य हो उठा। उस दिन वह छुट्टी लेकर घर आया था। हम दोनो सो रहे थे। वह तो सो गया मुझे नीद नही आई। घर मे छिटकनी नहीं थी—आध मन के एक पत्थर से रोक दे दी जाती थी। मैं जगी। अब

तो सो गया है—देवर के पास चलू। हिली कि बोला—क्या ? दो वार, तीन वार ? और तुरन्त उसकी नाक बजने लगी। उठकर निकलना था। दरवाजा खोलने के लिए उस पत्थर को उठाया। उठाया, तो जी म आया सो तो रहा है इसी वक्त पत्थर से चूर क्यो न दू सर उसका ! चूर ही दिया। एक ही घाव म घायल हो गया। दो एक बार गो गो किया। और भी दो घाव दिया। मगर मालूम है उस हरामजादे देवर ने ही गवाही दी। छूटने दो फिर समझती हू उससे।

—अरे बाप रे !

— किस जात की थी रे मालती ?

—थी तो छोटी ही जात की। लेकिन जिन्हें भली जात की कहती हो, बराम्हन कायथ भी है। मिया मुसलमान भी। लिखी पढी भी।

—लिखी पढी। बराम्हन कायथ ?

—हा। निमला दीदी बराम्हन की बेटी थी। विधवा। युवती। मुझसे बहुत पटती थी। उसने गला घोटकर अपने बच्चे को मारा था। भले घर की बहू भी थी। सधवा—लिखी-पढी। सुरेश्वरी देवी। अपना बाल-बच्चा नही था। सौत का लडका था। उसको जहर देकर मार डाला था। जुबेदा मुख्तार की बीवी थी। बच्चा नही हुआ था। पति ने दूसरी शादी करने की सोची थी। उसने भी पति को जहर दे दिया। जुबेदा बीबी अच्छी औरत थी। कानून जानती थी। हम सब की दरखास्त लिख दिया करती थी। और

रसीली स्मृतियो को याद कर हस उठी। कहा रात को जसी कहा नियां सुनाती थी न ! ओ।

—खूब अच्छी कहानी जानती है ?

—सिर्फ कहानी ? नाच—। नाचा करती थी। एक अधेड वेश्या थी। वह गाया करती थी।

—वहा नाच-गान भी होता है क्या ?

—आधी आधी रात तक। एक कमरे म हम दसेक जना थी।

रोज ही रात को नाच-गान चलता था। वाहर वक-वक करता। जेलर स कहता। जेलर वीच-वीच म कहा करता, यह सब नही। न यह सब नहीं चलेगा। मगर जुवदा वीवी ने ऐसा जवाव दिया न। मालती हम उठी। जेलर के मुह पर ही जुवदा वीवी न कहा, अजी जनाव, आखिर हम लोग भी तो मनुष्य है। और फिर जवान हैं। हमम जवानी की आग है। गा बजाकर दूध की प्यास मठा से मिटाती हैं। इस पर भी आप लोगो को एतराज है!' तमतम चेहरा लिए जेलर चला गया। जुवदा वीवी की छूट काट ली। मगर जुवदा वीवी की बला से!

यह सब सुनकर मालती को देखकर वह सब अवाक हो गइ।

इन बातो म अब जानें मालती की एक नई ही शक्ल निकल आई!

पाल बुढी की हैरानी तो दब गई। रस की प्रबलता से उसने पूछा इनन तो कदी रहत हैं वहा—सभी चोर, डकैत खूनी। इनस शादिया भी तो कर दे सकते हैं! भेंट नहा होती है री? हाय मेरी मा, इन लोगो के बीच रहती कैसे है री! ऐं! पीछे नहीं पड जात हैं?

नइ नवेलिन ने कहा, चाची, तुम खाक कुछ नहीं जानती। औरत-मद एक ही साथ थोड रहते हैं। अलग अलग जेल है जेल म ही औरतो के लिए अलग जगह होती है।

—बरहमपुर में एक जेल है। वह सिफ औरतो के लिए है। अरे, ओ छोर, ऐ

छोकरे डर से भाग गए।

मालती ने हसकर कहा हा। मैं खूनी हू। हसिया अभी भी मौजूद है। नाक काट लूगी। भाग जा। बीच बीच म अभी भी मेरे सिर पर खून सवार हो जाता है।

कहते कहते क्षाभ से वह क्रुद्ध हो उठी। इन छोकरो की भय भरी निगाहो म स क्या तो तीखे काटे-सा चुभ रहा था उसे। चुभ रहा था उन कुतूहलवाली औरतो की बातो स। चुभ तो रहा था बडी देर से

पर उसकी पीडा ग्रभी ग्रभी ग्रसह्य हो उठी। उसके धीरज के बाध को तोड दिया। वह उठ गई। कहा पाल दीदी, ग्रब नही सक रही हू मैं। ग्रब तुम लोग घर जाग्रो।

सब चली गई। मालती ने चपा से कहा मौसी, एक गिलास पानी दो। प्यास लगी है।

एक बिलकुल नई मालती को देखकर चपा के ग्रचरज का ठिकाना नही था। लेकिन उसने कुछ कहा नही। सब सुन रही थी। देख रही थी।

पानी देकर चपा बोली एक बात कहू मौसी ?

—कहो। तुमको भी डर लगता है क्या ?

—नही-नही। तुम तो मुझको जानती हो। डर मुझको नही लगता है। ग्रौर इस दुख-दुर्दिन मे गौरचद को भजने से भय तो रही नही गया है।

—तुम्हारा गौरचद तुम्हारा ही रहे। उसे छोडकर जो कहना हो सो कहो।

—ब्याह करोगी ? मालाचदन ?

—बसत कहा है मौसी ?

—बसत ! हाय रे नसीब ! वह तो ग्रब बहुत बडा ग्रादमी है मौसी ! लीडर हो गया है। जिले भर मे घूमता है। कलकत्ता जाता है। सभा करता है। भाषण देता है। गाव मे मुलुक मे ग्रब उसकी खातिर कितनी है !

—यहा नहीं रहता है ?

—रहता है। दो दिन, चार दिन। माग्राठाकुर का मकान लडकियो के स्कूल को बेच दिया है। वहा लडकिया का होस्टल बना है। हाट के उस पार जगह खरीद कर मकान बनाया है उसने। ग्रखबारों मे यहा की खबरें भेजता है।

—कब आएगा, मालूम है ?

—सो कसे कहू ? लेकिन आएगा—हो सकता है कल आए। कोई काना तो नही।

—हमारे यहा नही आता है ?

—आता है। दो महीने म, तीन महीने मे, कभी एक दिन।

—मेरे बारे मे नही पूछता है ?

—सो पूछता है।

—पूछता है ? तो फिर वही जो एक बार भेंट की फिर नहीं गया। मैंने चिटठी लिखी थी, जवाब भी नदारद।

—मुझसे कहा था। कहा था कि माला ने चिटठी लिखी है। मैं जवाब दूगा। काम और काम। पागल रहता है। जाए तो कब ? अब तुम उसे देखोगी तो पहचान नही सकोगी कि वही बसत है। मैं तो उसे प्रणाम करती हू। ओह, कसी कसी बात कहता है ! मगर उसकी बात इस आग्रह से पूछ रही हो—

—उसने मुझसे वादा किया था मौसी। कहा था कि मेरा बाप मर जाएगा तो मैं तुम्हारे साथ ब्याह करूगा। मैंने बाबाधान मे ढेला बाधा था।

—मालती !

चपा के स्वर म आश्चय और उत्कठा छलक पड़ी।

—क्या बात है मौसी ?

—यह कस कहती हो मौसी। वह बराम्हन है, हम वष्णव—

—वह तो जात-पात नहीं मानता है। फिर मुझसे वादा किया है !

—माला !

—मौसी !

जरा देर चुप रहकर चपा बोली उसे तुम भूल जाओ मौसी !

हसकर मालती बोली, भूलना तो मुश्किल है मौसी ! इस वारदात के पहले उसने मुझे छाती से लगाकर । वह नि सकोच उस दिन की

सारी बातें कह गई। कोई झिझक नहीं हुई। जरा देर के लिए भी ज़बान पर रोक नहीं आई।

बोलते बोलते वे बातें उसे कठस्थ हो गई है। जेलखाने म जानें कितना से कितनी बार कहा। नई कदी आई। उसकी सुनी, अपनी सुनाई। खूनवाली घटना भी कही। लेकिन सब बातो मे यही बात उसकी खास अपनी ओर विशेष प्रिय थी। जो सुनती, उसे भी लगता, यही कुछ बातें प्राणो मे पकडने की हैं। मन म सजोने की हैं।

कितनी ही रात वह बसत को याद करती रही। कभी रोई। जेल से निकलने पर ब्याह की कल्पनाए की।

गया रभा उठी। चपा बोली, ओ बिटिया, सुरभि आ गई। लगता है, साझ हो गई।

चपा उठी। मालती ने कहा, बहो गया है ?

—नही। उसने देह रखवी। यह उसकी बडी बेटी है।

—चलो देख आए। ब्याई है ?

—हा। बछिया है। बडी अच्छी-सी।

—कितना दूध देती है ?

—डेढेक सेर देती है। आज तुम्हारे लिए खीर बना दूगी।

एक बगूना लिए वह निकली।

—दोनो बेला दूध दुहाती हो ?

—हा। गया दूध ज्यादा देती है। ठीक स दुहाओ तो करीबी दो सेर। उसकी बछरू पिए। सो सबरे बगूने म सर भर के करीब होते ही छुडा देती हू। बछिया पीती है। मैं पानी भरने को चली जाती हू। चार पाच घर का काम धधा करके लौटने पर बछिया को बांधकर मा को छोड देती हू। जा चर चरा क आ। मगर दूसरे के घर मत जाना सहमिन। इसकी मा इतनी शतान थी बेटी उतनी नहीं है। किसी क घर नहीं जाती। पहले पहल रस्सी स बाध आया करती थी। इतनी थी खींचकर खूटे को उखाड देने के बाद भी घास के किनार ही चरती रहती

थी। तब से अब खुली ही छोड़ देती हूँ। सुरभि पोखरे के किनारे चरती है, या पेट भर कर समय से लौट आती है। आते ही रभाती है। मैं जाकर दुहा लेती हूँ। सुबह का सेर भर दूध रोजवाल का देती हूँ। इस शाम के दूध को गोराचाद के भोग में लगाती हूँ। प्रसाद पाती हूँ। आज तुम्हारी बदौलत गोराचाद को खीर खिलाऊंगी। उससे कहूंगी, देखो, विष्णुप्रिया मत कर देना कहीं। दुःख न देना।

मालती ने हंसकर कहा दुःख मैं नहीं पाने की मौसी। तुम्हारे गोराचाद की यह मजाल नहीं होगी। मैं सुख अदा कर लूंगी।

—ठाकुर देवता को ऐसा नहीं कहते।

—कहते हैं मौसी। बदखाने में हम सब रोज ही कहा करती थीं॥ जुबैदा बीबी को तीस साल की सजा हुई थी। सतीस अढनीस में छूटेगी। बच्चा नहीं हुआ है। युवती-सी लगती है। कहती थी अबकी निकलूं तो सुख को खोजकर रहूंगी। और कुछ नहीं तो बाईजी बनूंगी।

सिहर उठी चंपा। कहा ऐसा नहीं कहते मौसी। छि।

रात लेटे-लेटे दोनों ने जेलखाने की बातचीत की थी। उस बातचीत से भविष्य पर आई। चंपा बोली तुम फिकर न करो माला मौसी। मैं काम धंधा करती हूँ, भीख मांगती हूँ। घर है। गैया है। मैं तुम्हारा पेट चला लूंगी। फिर तो तुम्हें जिस वजह से सजा हुई थी लोग जानते हैं। तुमने हंसिया क्या चलाई, यह भी सभी जानते हैं। रूपवती हो शादी तुम्हारी होगी।

मालती बोली, तुम उसकी मत सोचो। ध्यान दो उस।

—किसे? बसंत को?

—हां।

—मौसी!

—मौसी?

—क्या कहूं तुमसे मुझे तो भरोसा नहीं होता है।

—सो न हो।

—तो फिर देखो।

सवेर जगकर उसने बाप की मनिहारी दुकान की पड़ी हुई चीज़ों को देखा। कहा, मौसी, मैं बाबूजी की तरह दुकान करूंगी।

—दुकान करोगी? होगा तुमसे?

—ज़रूर होगा। बाबूजी से अच्छा ही करूंगी।

बाबूजी से अच्छा?—चंपा में आश्चर्य और कौतुक दोनों ही दिखाई दिया।

—हां। देख लेना। गाहकों की भीड़ लग जाएगी। अपने हिसाब से भाव बताने के बावजूद अंत में मैं जो कहूंगी उसी दाम पर लेंगे। बाबूजी एक पैसा मुनाफा करते थे मैं चार पैसा करूंगी। नहीं करूंगी?

—मैं कैसे कहूं कहो?

—मोहिनी मंतर सीख आई हूं मैं।

—सच?

—तुम बड़ी बुद्धू हो मौसी। पहले तुम्हें अक्ल थी। गौर को भजकर तुम्हारी अक्ल गुम हो गई। मेरी जैसी खूबसूरत और जवान औरत की दुकान पर भीड़ नहीं लगाएंगे लोग?

चंपा अवाक् होकर उसे देखती रह गई—छोरी कहती क्या है? मालती ने फिर कहा, हंस हंसकर बोलने से जो भी कीमत बताऊंगी, उसी कीमत पर खरीदेंगे लोग।

—माला!

—क्या?

—तुम्हारी बात सुनकर डर लगता है। तुम हो क्या गई हो?

मालती की भवों पर शिकन पड़ गए—यानी? क्या हो गई हूं?

—तुम खुद नहीं समझ सकती हो?

—तुम कहना क्या चाहती हो?

—तुम समझ नहीं रही हो क्या समझाऊं?

मालती बोली मैं तुमसे बक-बक नहीं कर सकती। खैर। जो भी

हो, तुम मेरे लिए न सोचो। सोचना नहीं पड़ेगा। मैं तुमसे वही ज्यादा समझती हूँ। तुम्हारा पाप-पुण्य धरम—वह सब मेरे लिए नहीं है। मेरी तरह रहती जेलखाने में तो समझकर आती। तुम्हारी दाईगिरी और भीख के पैसे से दो मुट्ठी खाकर मेरा पेट भरेगा। लेकिन मन नहीं भरेगा। मुझे भुकाओ मत, जाओ, अपना काम करो।

और तीसरा पहर होता न होते टोकरी में पुराना माल रखकर वह हाट चली गई थी। उसे पता नहीं था कि धरनीदास ने अपनी दुकान की जगह और किसी को दी है या नहीं। दे दी है, तो जबरदस्ती बैठेगी, यही सोचकर आई थी। धरनी ने उसे स्नेह के साथ जो पुकारा, उसका मन नम हो गया। उसके बाद हाट की तरफ ताकते हुए पुरानी बातें याद करके मालती मानो पुरानी मालती हो गई। वह सोचती ही रही। हाट उठ गई।

रात काफी हो आई।

क्या बजे? साढ़े सात आठ तो बज ही गए होंगे।

धरनीदास से वह बोली, आज मैं चलती हूँ चाचा। अगली हाट से लेकिन बप्पा की तरह बैठूंगी मैं। बप्पा जो देता था तुम्हें, वही दूंगी।

धरनी ने कहा तुम्हारे बाप ने पहले मुझे दो सौ रुपया दिया था बिटिया एक तिहाई का हिस्सेदार बना था। तुम्हारे मुकदमे के समय बेच दिया। मैंने दो सौ का तीन सौ दिया। सो—। जरा चुप रहकर बोला देखो मेरी इच्छा है कि फर्श को पक्का बनाकर खंभे खड़ा कर दूं। जरा ठीक से दुकान करूं। इस बीच ।

—कुछ दिन के लिए तो दो। बाद में मैं अलग छपरी डाल लूंगी।

—कितने दिन?

—यही दो-तीन महीने।

—दो-तीन महीने?

—दो तीन महीने से कम में होगा कैसे चाचा!—मालती ने लाड के स्वर में कहा।

घरनी को बड़ा भला लगा। सज़ा काटकर तो यह लड़की बड़ी अच्छी हो गई है। बातें जितनी मीठी हैं उतनी ही सवरी हुई! उसके होंठो पर एक दुबली सी मुसकान खेल गई। वह बोला—अच्छा अच्छा बिटिया। वसा ही होगा। लेकिन जानती हो तो तो बिटिया, मेरा भी वही हाल है। लेकिन जब इस तरह से कह रही हो! खैर।

मालती ने मन ही मन कहा ठहरो भी बच्चू! एक बार बठ तो जाने दो!

घरनी ने कहा, तो अभी चली?

—हा। रात काफी हो गई।

—हा। सदर रास्ते से जाना। बिजली हो गई है। भुवनपुर अब वह भुवनपुर नहीं है बिटिया। इन्हीं दो बरसों में फूलकर ढोल हो गया है। किस्म किस्म के लोग। सुंदरी युवती।

मालती की ज़बान तक आया अच्छा बुड्ढे रसिया तो खूब हो। याद आया जेलखाने में गोपिनी नाम की एक औरत थी! उसके बुरे स्वभाव का लाभ उठाकर उसके काका ने उसका भोग किया था। वह खूब हसती थी। हसकर ही कहती अजी सब देखा! बाप के सहोदर काका बाल सफेद—मैं विधवा मैं घर के नौकर से फस गई। काका ने उसके बाद

गोपिनी ये बातें बड रस के साथ कहा करती। कहती—आखिर बदला चुकाया। एक दिन सब कुछ चुराकर नौकर के साथ निकल भागी। नसीब मेरा! शहर में जाकर हरामजादे ने शराब की लत लगा ली। उसके बाद चोर बन गया। एक दिन चोरी करके गहना ले आया। पहनने का शौक हो आया। रख लिया। एक दिन वह पकड़ा गया। घर की तलाशी हुई। गहना निकल आया। गहना ही नहीं कुछ कपड भी मिले। सज़ा हो गई। फिर तो घूम घूमकर यह तीसरी बार है।

अरे बुड्ढा! बोली—सदर रास्ते से ही जाऊगी चाचा।

रास्ते पर उतरी तो ख्याल हो आया बाबा को प्रणाम न कर लू।

तुरत लगा, वाबा नही, खाक ! वह गवेश्वरी बाजार होकर चल पडी ।

बिजली की बत्ती । दुकानें भी बहुत हो गई हैं । वह दुकान किसकी है ? चद की । बत्ती जल रही है । ओ ! दुतल्ला मकान बन गया है । इधर मुस्लिम बोर्डिंग । उसके बगल मे रेडीमड कपड़े की दुकान मे मशीन चल रही है । उसके आगे भगत की दुकान । उसके बाद जरा दूर अधेरा । रास्ते की रोशनी के अलावे दुकानो म यहा लालटेनें ह । उसके बाद थाना । इधर होटल । यहा भी भूलनी किरासन बत्ती । भीड धीरे धीरे बढ रही है । साइकिल । घटी । बाबुओ के मुह म सिगरेट । हाय भरी मा चाय की दुकान खुल गई है । यहा भी बत्ती । इधर बिजली है । यही बिजली सप्लाई का दफ्तर है । उसके बाद हलवाई की दुकान । उसके आगे रोशनी स जगर-मगर गवेश्वरी बाजार । यहा औरतें ही ज्यादा हैं । अरे, यह किसकी दुकान ? इतनी मनिहारी, ऐसी भकभक रोशनी ! हाय राम, कपडे भी हैं।

—ऐ ! ए र सूअर ! सूअर का बच्चा !

फास करके मालती पलटकर खडी हो गई ।—ऐ इस तरह से औरतो के बदन से सटकर चलता है । ऐ !

उसने पीछा करने की कोशिश की । नही कर सकी । उसकी बात पर चारों तरफ के लोग ठिठक गए । जाने का रास्ता नही था ।

एक ने पूछा क्या हुआ ? क्या माजरा है ?

—वह देखो, चला गया । सूअर का बच्चा । वह बकरा मेरे बदन से सटकर निकल गया । हरामजादा—

कौन है रे कौन ? पकड पकड ।

शोरगुल मच गया । लेकिन वह पकडा नहीं जा सका । निकल गया। आन किस गली म गुम गया । एक ने पूछा तुम कहा जाओगी ?

—गाव म । मैं इसी गाव की हू । आप मुझे पहचान नही रहे हैं कुडू बाबू ? मैं मालती हू—श्रीमत दास की बेटी ।

बुड्ढा आखें फाडकर कुछ देर तक देखता रहा उसे । फिर कहा, हा

हां। सुना जरूर था कि तू लौट आई है। देखने म बडी सुन्दर हो गई है!
लेकिन इतनी सुन्दर यह नही सोचा था। खर। रात म गई कहां थी?

—और कहा? हाट गई थी। दुकान का सामान पडा था। वही से गई थी।

—दुकान! दुकान करेगी?

—यही सोचा है। आखिर करना तो कुछ पडगा?

—हा हा। जो बात हो गई उससे औरो की तरह घर होना तो मुश्किल है। मानो शादी-ब्याह तो । हा उससे दुकान करना अच्छा है। सामान वामान की जरूरत हो तो लेना। अब तो मैंने बहुत बडी दुकान कर ली है। तेरा बाप मुझसे ही लेता था। तू भी लेना। एक लेना एक देना।

रात को अचानक मन्नाडे की चीखकर गीत गूज उठा। कहीं लाउड-स्पीकर से गाना बजने लगा।

कहा ठिकाना मन को राधा कहा भुवन मे कौन भवन म?
कह सकती है कौन सजनिया कौन स्वजन रे!

कुडू बोल उठा, सिनेमा टूटा रे। रोक्स मिला। क बज रहे हैं?

—आठ।

—ठीक है। लो।

मालती ने पूछा सिनेमा इस तरफ हुआ है न?

—हा। वही उस जगह, जहा गणेश्वरी विसजन के समय आतिश-बाजी होती है।

मालती वही से मुडी। अब उसके टोले का रास्ता आया। टोल के अदर से भी कुछ कम दूर नही जाना पडता है। यह रास्ता कुछ अंधेरा है। फिर भी इस रास्ते पर भी रोशनी है।

गीत बजता ही जा रहा था—

किस नगरी म, किस बस्ती म
किस जगल मे, कहा विजन म?
कह सकती है कौन सजनिया कौन स्वजन रे!

अच्छा गा रहा है। जसी मीठी आवाज है, वैसा ही अच्छा है गीत।

कहा ठिकाना मन की राधा कहा भुवन मे कौन भवन मे ?

अपने घर आई। आवाज दी, मौसी!

चपा ने जवाब दिया, आओ! मैं ठाकुर को शयन करा रही हू। बैठो।

उसने टोकरी उतार धरी। खूटे से टिककर बैठ गई। वह गीत बज ही रहा था—

देश देश से घूम घूमकर
आखिर पहुचा हाय यहा पर
पता नहीं राधा का पाया, पूछा मैंने जन-जन से!
कह सकती है कौन सजनिया कौन स्वजन रे!

चपा बाहर निकली। कहा हाय, ऐसे बठ गई मौसी! जरा फीकी-सी हसी हसकर वह बोली, गीत सुन रही हू।

—बडा अच्छा गाना है, है न!

—हा। गला भी मीठा है।

—चाय पियोगी? बनाऊ?

—बनाओ।—और उसने एक लबी उसास ली।

बडा अच्छा गीत है। सुर, शब्द और स्वर ने मन को कसा तो गीला-गीला सा कर दिया।

हाय न उसको पाऊगा क्या
खोज भुवन म इस जीवन म
रो रो मरा चकोर हिए का
चाद उगा है कहा गगन म
मन की इन बाता की थाती
लिख लिख कर रक्खू मैं पाती
हाय न लिया डाकघर ने ही
वापस लाया डाक पियन ने!

ऐसा तो हो गया जी। वक्त याद आ गया। वह नहीं आया ! चपा चाय ले आई। एक गिलास। वहा लो, पियो।

—लाओ दो।

—जी उदास क्यो है मौसी ?

—पता नही।

आठ दिन के बाद।

—अगले शुक्रवार को मालती खूब अच्छी तरह से दुकान सजाकर हाट में बैठी। सच पूछिए तो उसका भाग खुल गया।

सोमवार की हाट में ही वह पहली बार बैठी थी। पर महज दो दिन में ठीक से सवार नहीं सकी। शनिवार को उसने कुड़ की दुकान से अस्सी रुपये का माल लिया था। वही लेकर सोमवार को बैठी थी।

पहले तो कुड़ू पचास रुपये से ज्यादा का उधार नहीं देना चाह रहा था। मगर कह सुनकर मालती ने अस्सी रुपये का लिया। ज्यादा परेशानी उसे नहीं उठानी पड़ी इसके लिए। आखिर को तो कुड़ू आप ही काफी का उधार देने को तैयार हो गया था। शुरू में पचास से ज्यादा का राजी नहीं था?

मालती बोली, पचास रुपये में माल ही कितना होगा कहिए! कितने अदद? और उतने से मुनाफा ही क्या होगा?

कुड़ू एक ही घाघ आदमी। बोला उसका मैं क्या करूं कहो!

—आपलोग ही ना कहेंगे तो मैं क्या करूंगी?

—शादी-ब्याह करके घर गिरस्ती बसा। दुकान करना क्या औरत का काम है?

मालती रुज नहीं हुई। कहा औरतें आजकल सब कुछ करती हैं। हाकिमगिरी भी—और वह हमी थी।

—तो तू वही कर जाकर।

—लिखना-पढ़ना ही जो कम जानती हू। जानती होती तो करती। और शादी? कौन करेगा मुझसे?

कुडू बोला हां सो तो है! मगर तू मेरा रुपया न लौटाए तो मैं क्या करूगा? किस चीज से वसूल करूगा। तेरा बाप तो मुकदमे मे ही सब उड़ा गया है। घर के सिवाय तो कुछ है नहीं।

—मैं तो हू। मैं तो नहीं भागी जा रही हू।

—भाग ही जाए तो कौन पकड़ेगा? जो इनकिलाब जिन्दाबाद करती है! तिस पर जो रूप हुआ है! तकाजे मे कही घर पर गया तो हंसिया लेकर दौडेगी। और फिर वह कमेटी हैं। नेता बाप रे!

मालती बोली—खैर। चलती हूं।

—जाएगी?

—और नहीं तो क्या करू। पचास रुपये के माल से क्या होगा? छछूदर मारकर हाथ घिनाने से क्या लाभ?

—खडी रह खडी।

—खडी रहूं?

—नहीं। बैठ। एक काम कर तो उधार दू मैं।

—कौन सा काम कहिए?

—मनिहारी के साथ साथ अगर चाय पकौड़ी सिगरेट पान की भी दुकान कर सके तो मैं काफी रुपया का माल उधार दूगा।

मालती अवाक हो गई थी। यह बुड्ढा कहता क्या है? मतलब क्या है? ऊ कम्बख्त देख कैसे रहा है, जैसे निगल रहा है! वही सुनीता जो जेल में कहती थी—नजर से निगलना। सभी—सभी—सभी मर्द। उनकी निगाह देखते ही समझ जाएगी।

कुडू ने कहा सुनो वह श्रीमती है न! वह पहले मेरी ही दुकान से

माल लेती थी। समझ गई ? सखी बन गई थी मेरी। दुकान अब जम गई। पक्के का घर बना लिया। गरूर हो गया। अब माल सखिया से लाती है। वहां मरी शिकायत कर आई है, मैं गला काटता हूं। यहां भी लोगों से कहती है। औरत की दुकान—लोग भीड़ लगाते हैं। तू भी स्त्री है देखन म सुन्दर है जवान है—अगर तू चाय-नाश्त की दुकान कर ले, तो दालान पीट देगी देख लेना। सौतली मा है ही। वह बना-बनू दगी। दो एक लौंडा को रख लेना। करेगी ?

मालती अवाक ही देखती रही कुड़ू की तरफ। ठीक वह समझ नहीं सकी कि बुड्ढा का गुस्सा उस गला काटने वाला कहने की वजह से है या इसलिए कि श्रीमती ने सखीवाला नाता तोड़ लिया ? कुड़ू के मनचले होने की कभी शुहरत थी। शराब पीता था, मेले म मनिहारी दुकान ले जाता था। उसकी बदौलत इलाके भर म मौसी थी, फूआ थी दादी थी मा थी—और यह सखी भी थी। महुतरी थी।

कुड़ू ने कहा, बोल। नहीं कर सकेगी ? ऐसा चटक्दार चेहरा है तेरा।

मालती फिक करके हंस पड़ी, सखी का नाता भी जोड़ना होगा क्या ?

कुड़ू ने तेज निगाह से उसकी तरफ ताककर कहा तू रे छोरी, खूब कर सकेगी। मगर सुन तेरा बाप मुझे चाचा कहता था। नाते में तू मेरी पोती हुई। वह नाता ही जोड़े तो कोई दोष नहीं है। मगर खैर। वे दिन लद गए। उम्र सत्तर पार कर गई। इस साल कितनी है वह बोलना नहीं चाहिए। अगले साल तिहत्तर की होगी। छोड़ उसे।

—डर लग रहा है ?

—तू बड़ी शैतान है रे छोरी। अरे नहीं-नहीं, कुड़ू को इसका डर नहीं है। कुड़ू मक्खीचूस व्यवसायी है। समझी ? वह पानी म उतरा है कीचड़ कभी नहीं लगाएगा। तू सो सब नहीं समझेगी। है तो वष्णव की बेटी मगर यह सखी बखीवाला मम तू नहीं जानती। और

इसमें तेरा भी बड़ा दाम बढ़ रहा है मुझ पर।

—दिखाइए न मुझे ?

—और। यह। मेरी दुकान होगी। हाट की धूप तले बरामदे पर लगाकर पान धूप की तरह हलवाई का माल भर लूंगा। तो पाव इतना ही ले जा बहुत सस्ते का माल। बिक जाने पर पैसे दे देना। जो माल बच जाए, सब फिर यह नहीं बिकेगा लौटा देना।

गोपकार को बस फिर मनिहारी अक्सर हो बैठी था। भीड़ हुई था। काफी भाड़। मालती बैठी भी खूब बाट जोह रही थी। सजना सवरना वह अन्त तक सीख आई थी। बरहमपुर के बाजार अलगाने में लोगों के करीब नारी बैठा रहती थीं। ऐसी और पढ़ी लिखी उससे कम भी तो आठ-दस होंगी। कई वेश्याएं भी थीं। उनमें से एक थी नीहार दीदी। पढ़ी लिखी। किसी सरकारी दफ्तर में काम करती थी। टाइप करती थी। उस दफ्तर के किसी साहब ने उसे बहुत रुपए देकर जाने क्या सब कागज गायब कराया था। इसकी वजह से नीहार-दी को दफ्तर के मालिक के बेटे से प्रेम करना पड़ा था। मालिक के बेटे ने शादी नहीं की था। उसके घर जाकर उसे शराब के नशे में चूर करके उससे कागज निकाल लिया था—कागज के साथ रुपये और हीरे की कीमती अंगूठी भी थी। वह भी ले ली था। लोभ नहीं संभाल सकी। उसी हीरे की अंगूठी से आखिर वह पकड़ी गई। ढाई साल की सजा हुई। जेल में वह ऐसी सजती संवरती थी कि सब कोई उसकी नकल करती थी। नीहार-दी काली थी। सखी। उसके सिंगार में सबसे बहार थी बालों की सवार की। बालों में वह तेल नहीं लगाती थी। रूखे बाल फूल उठते और उसके चेहरे को घेरे रहते। हाथ से दबा-दबाकर उनमें लहरें बनाती थी। नीहार दी जैसी कुछ स्त्रियां ऊंचे क्लास की थीं। फर्स्ट क्लास सेकेंड क्लास की कैदी। तीसरे दर्जे की कैदियों से पहले मिलती ही न थीं। लेकिन कुछ ही दिनों में वह सभी की आने-जाने लगी।

हसती-गाती। नीहार दी नो नाचती तक थी। मालती नीहार-दी से पढ़ती थी। उसने मालती को कुछ पढ़ाया था। उसके नाम से वह प्रेम के उपन्यास मगवाया करती थी। वह पढ़ती बाकी सब सुनती। अंतिम दिनों म नीहार-दी ही उसकी गुरु थी। उससे मालती ने बहुत कुछ सीखा।

उसी नीहार दी से सीखे हुए कायदे से उसने रूखे बालो को पीठ पर बिखेर दिया था और दुकान मे बठी थी। भीड लग गई थी। ज्यादातर बाबू छोकरे। परतु एक सिगरेट के सिवा उन्हे वहा खरीदने लायक कुछ भी नहीं मिला। दो-एक ने बच्चा के नाम पर कुछ गोलियां और पेंसिल खरीदीं। स्कूल के छोरे भी आए थे। स्कूल की लडकियां भी। लडकियो ने बल्कि कुमकुम काटा फीता, बाल की क्लिप कुछ खरीदी थी। एक बाबू छोकरे ने तो साफ ही कहा, अजी, तुम्हारी दुकान म खरीदू क्या ?

बहुत पीछे से कोई बोल उठा दुकानवाली को ही खरीदिए न।

—कौन है रे उल्लू ! बेहूदा।—बोलनेवाला बोला।

मालती बिगडी नही। हसकर बोली हाट की बात को क्या लेना बाबूजी, जाने दीजिए।

और कोई बोल पडा भुवनपुर की हाट है भैया।

मन की बिथा लिए जाओगे
दुख के बदले सुख पाओगे।

मालती ने हसकर कहा, जय, बाबा भुवनेश्वर की जय !

और सबके सब हस पडे थे। भले आदमी का चेहरा और आखें तमतमा आई थीं। वे बोले बडे अभद्र हैं सब।

मालती बोली, आप नाराज क्या हो रहे हैं बाबूजी यह इस हाट की पुरानी बोली है।

मोलो तो मन भी बिकता है,
कडवे का मीठा मिलता है।

—सभा-सा पथ है। सर। कुछ खरीदिए न बाबू, जो भी चाहें। आप से कुछ मुनाफा कमा लूं। घर जाकर जोड़ूंगी-आड़ूंगी, आपको याद करूंगी।

धरनीदास अवाक् होकर उसकी ओर ताकते हुए उसकी बोली सुन रहा था। उस दिन जिस लड़की को उसने देखा था यह लड़की तो वह नहीं है। यह तो और ही कोई है। इसे लाज नहीं, शरम नहीं—जरा भी नहीं। क्या वह इसे? एकबारगी—कोई याद नहीं सूझा। हां मिल गया। लोकनाथ है यह! यह सब कुछ कर सकती है।

उन भले आदमी ने सारी गोलियां खरीद लीं और जूड़े में खोंसने के प्लास्टिक के फूल खरीदे। सयाल स्त्रियां को देंगे। गोलियां देंगे रास्ते के लड़कों को।

उस दिन कुल मिलाकर दस रुपये बिके थे, कुछ आने कम। हाट टूटने के वक्त धरनीदास ने कहा: तुम कामयाब होगी बिटिया।

मालती ने हंसकर कहा, देखूं चाचा। लेकिन मनिहारी नहीं चलेगी। बस्ती-बस्ती घूम घूमकर फेरी किए बिना लाभ नहीं होगा। और ही कुछ करूंगी। तुम्हारी दुकान में बैठने से नहीं हो सकेगा।

—तो क्या करोगी?

—देखती हूं।

सब कुछ समेट कर वह उठ रही थी कि डुगडुगी बज उठी। एक लाल झंडा उड़ाकर तीन चार छोकरे आए। मुंह में चोंगा लगाकर चिल्लाया—सभा होगी। चीजों की कीमत बेहद बढ़ गई है। उसके विरोध में कल यहीं हाट में सभा होगी। इसका जोरशोर विरोध कैसे किया जाए इसका उपाय सोचा जाएगा। कम्युनिस्ट नेता विमल बोस का भाषण होगा। आपलोग काफी तादाद में इकट्ठा हों।

मालती एक बार तो मानो चौंक उठी। सभा होगी। वह नहीं आएगा? उसने तो कांग्रेस को छोड़ दिया है। वह?

वह तुरत बोली मैं अभी आई चाचा। और वह टूटी हाट की

भीड मे खो गई। हाट से बाहर सावाधान से दाहिने वह उसी जगल मे गई। घने जगल के बीच वह उसी पेड के पास जाकर खड़ी हुई। अधेरे म पता नही चला। टटोलकर उसने जानना चाहा कि डालो मे पत्तों के साथ काटे हैं या नही। अगर काटे होगे ता कूच की लतर होगी। एक छोटे से पीपल पर कूच की लतर चढ गई थी। उसी म उसने साडी की कोर फाडकर ढेला बाधा था। काटा तो हाथ म लगा था पर यह अदाज नही लग सका कि ढेला है या नही। टाच लाई होती तो ठीक था।

वहा से लौटी। गधेश्वरी तला होते हुए कुडू के यहा जाकर कह आई मैं अब वही दुकान करूगी भदाजी।

—दादाजी कहा ? छल से या सच-सच ?

—लीजिए, छल क्या करने लगी ?

—क्या विश्वास। बूढा हो जाने पर छोरिया छल से ठगना चाहती है। रात का वक्त है ठीक दिखाई नही देता। मुह देखकर ठीक-ठीक समझ नही पा रहा हू न।

मालती ने बिजली की पूरी रोशनी म मुह ले जाकर कहा देखिए।

उह तू आसान लडकी नही है। रात की रोशनी म काली गोरी दिखती है। तिसपर बूढे की नजर म युवती! दादाजी बनूगा या नही, यह आज नही कल बताऊगा। नहीं कल नही दस दिन के बाद। मगर कल आना। तेरे रूप से बेहाल नही हुआ हू मैं तेरी माया से गल नही गया ।। मेरा गुस्सा उस श्रीमती पर है समझ गई? वह विधवा हुई। चटक थी जुवान थी। दुख नही था। मेरे साथ मौन मजाक करती थी। उस समय उमर थी और हमी मजाक मैं पसद करता था। लोग उसे बुरी कहते थे। मेरे पास आकर बोली समधीजी अब ना नही चलना। मैं उसे समधिन कहता था वह मुझे समधी कहती थी। मैंने कहा अच्छी-सी दुकान कर ला। मूल पूजी मैं देता हू—उधार सौदा। और वही मुझे बुडढा कहती है! मैं गला काटने वाला महाजन हू। मैं एक जवान औरत को

तलाश म था—बढ़िया नाक-नक्श हो—दुकान पर बैठे तो घर की भी टूटे—उससे अधिक ग्राहक जुटें। तेरे दादा हैं। दाग़ी-वाग़ी तेरी होगी नही। माई घरेगा नही। आखिर को कुपथ विपथ म जाएगी उससे अच्छा है कि दुकान कर ल। कल आना।

मालती को ये बातें अच्छी लगी थी। बुड्ढा सयाना है—बात भी दो टूक करता है। वह बोली ठीक है। कल आऊंगी।

—क्या क्या चाहिए पेहरिस्त बना लाना।

—मैं भला वह सब जानती हू दादा। आप ही बता दीजिएगा।

—यह लो, जो बात मा बाप को जाए ! बटने को कहा, तू गरदन जकड़ लेना चाहती है।

—बटना भी होगा तो दाए बढूंगी दादाजी बाए नही।

—अलबत्ता। खूब कहा ! सर। कल आना।

दूसरे दिन सवेरे कुड्डू ने कड़ाही परात, थाली कलछुल चक्का बेलन—सब खरीद दिया। छोटी सी बेंच एक बड़ी बेंच, उसके साथ छोटी सी एक मेज लोहे की एक कुर्सी, दो तिपाई भी। छोटी बेंच पर बैठकर लोग बड़ी बेंच पर खाएगे। मालती कुर्सी पर बैठेगी। मेज पर पसेवाला बक्स रहेगा। काठ की दो बड़ी, दो छोटी कठौती। खुद से हाट गया। बढ़ई को बुला ले गया। फ्रेम बनवाए और घर से टिन मगवाकर दो दिन में घर बनवा दिया। फर्श पर ईटें बिछवा दी—जोड़ो पर सीमेंट करवाया और कहा ले, कम्प्लीट हो गया।

पहले दिन श्रीमती जरा हक्की बक्की सी हो गई थी। खास करके खुद कुड्डू को देखकर। उसके बाद भाप गई। आगे बढ़कर पूछा यह सब क्या हो रहा है ?

यह मगलवार के दिन दस बजे की बात है। कुड्डू ने कहा बाघ का तमाशा होगा।

—बाघ का तमाशा ?—अवाक हो गई श्रीमती।

—हा-हा बाघ नही बाघिन का। मालती की दुकान होगी। उसने

मेरी ज़मीन किराए पर ली है। दुकान खोलेगी।

—मनिहारी ?

—चाय, आटलेट, सिंघाडा, कचौरी, चाय-पान, सिगरेट। उसके साथ कुछ मनिहारी। बिस्कुट। डबलरोटी।

—हूं। तो—। श्रीमती चुप हो गई। अपनी दुकान में गई और एक अनाम आदमी को घायल करने के लिए बातों के तीखे-तीखे तीर छोड़ने लगी। कैसे तो कहते हैं, इल्लत धोए नहीं धुलती। यह बुढ़ापा। साल भर हुआ बुड्ढे की बीवी मरी है। घर में अधबूढ़ा बेटा, बहू नाती पोते। उसे यह अट्ठारह साल की बच्ची ! छि छि। लाज के घाट पर मुंह नहीं धोया। जमराज के दरबार में जवाब क्या दोगे ?

कुड़ नाराज़ नहीं हुआ। खिक खिक खिक खिक हंसने लगा।

ज़रा देर बाद वहां से जाते समय मालती से कहा, मनमाफिक काम करा ले। खबरदार, मिजाज़ मत खराब करना। खबरदार।

कुड़ को अपना रिक्शा है। उसी पर चढ़कर वह चला गया। मालती अब उस ओर गई, जहां कम उमर के पीपलों पर कूच की लतर चढ़ी है। पूरे पेड़ में फूट फला है दाने जैसे लाल लाल कूच वहां हाल के बंधे कुछ ढेले झूल रहे थे पुराने कहां गए ? वह पीछे की तरफ से जाकर खड़ी हुई। अब दिखाई दिया, हां, ह तो पुराने ढेले। लटक रहे हैं। उसका वाला ? उसका वाला कहां है लंबा-सा था। चुनकर लाई थी वहां बीच में थोड़ा दबा-सा। गिर न जाए जिसम। कहा है। रस्सी भी मजबूत थी। अपनी महीन साड़ी की कोर फाड़कर बांधा था।

ढेला गिर जाने का मतलब है कामना पूरी नहीं होगी। मनोकामना पूरी करने की इच्छा नहीं है बाबा को। ढेला नहीं गिरे तो जानिए मनोकामना पूरी होगी। पूरी होने पर आकर ढले को अपने हाथ से खोल देना पड़ता है।

ढेला झूल रहा था।

खुशी खुशी लौट आई। रास्ते में बाबा को उस रोज़ प्रणाम किया।

बाबा भुवनेश्वर, इच्छा पूरी करो। मन में उसके बाबायान का यह पुराना गीत गूंज उठा था।

श्रीमती जुआन के तीर तब तक भी चलाती ही चली जा रही थी। अब उलटफेर। खूब कहती है श्रीमती। खूब। उसके तीर मनगढ़ंत आदमी को बधते हैं। आदमी पूरब को खड़ा रहता है तो वह दक्खिन का मुंह किए खड़ी होती है और पश्चिम कोन को तीर छोड़ती है। तीर घूमकर पश्चिम से उत्तर उत्तर से पूरब में आदमी को घायल करता है। कलेजे में बिंधता है। लाल झंडा बाबा ने कल सभा करने का एलान किया है। वे श्रीमती से अच्छा नहीं बोल सकेंगे।

खूब कहा नवयुवती नई जवानी। मगर यही भुनाकर खाना था तो भुवनपुर की हाट में पकौड़ी लिए क्या बैठी? अरे बाबा शहर में जा बाज़ार में जा। वहां एक रसिया बुड्ढा है भी तो कमबख्त गला काटने वाला महाकंजूस है। वहां कौड़ी-कौड़ी पाएगी!

बुधवार की हाट के दिन सवेरे उसने दुकान खोली। आम के पल्लव लगाए। पानी भरे दो घट रखे। कुछ बानू ने दो नारियल भी भेज दिए थे। बाबायान के एक पंडे को बुलवाकर सबसे पहले उसने उसी को चाय पिलाई। चाय का पहला गाहक खुद कुट्टू बना।

चंपा मौसी की राय नहीं थी। वह बोली थी, मालती तुम यह क्या कर रही हो मैं समझ नहीं रही हूं। अच्छा नहीं लग रहा है मुझे। कुट्टू को लेकर जो अफवाह उड़ रही हैं अच्छी नहीं लगती हैं मौसी!

—कैसी अफवाह?—कौतुक से पूछा उसने। उसका अनुमान वह कर सकती है। उधार देने के बहाने कुट्टू आखिर उसीको खरीद बैठेगा।

चंपा बोली समझती नहीं हो? श्रीमती के मुंह से सुना नहीं?

—सुना है। देख तो लूँ खेल खेलकर।

—नहीं-नहीं। यह अच्छा नहीं है। उसके साथ खेलना ठीक नहीं।

—ठीक है। मैं खेल लूंगी। मैं खुली औरत हूं।

—माला तुम्हे हाथ जोडती हू मैं।

—ठीक है। तुम मत जाना। तुम जो कर रही हो, वही करो। इसमे मैं तुमको नहीं घसीटूगी। मगर मैं यह मौका हाथ से नही जाने दूगी। आखिर मैं करू क्या, कह सकती हो? हा। है। श्रीमती ने कहा था, बाज़ार मे बैठकर रूप और जवानी भुनाकर खाओ। कहो, वही करू?

—मेहनत मजूरी करके खा सकती हो मौसी। कल ही तो दे कह रहा था, तुम्हारी सखी गोपा का बाप। कह रहा था कुछ सीखती तो ठीक था। नर्स का काम सिलाई का काम। दरकार होती तो सिलाई की मशीन खरीदने के रुपये मिल जाते। यह दुकान

—उहू मौसी, मुझपर इसका नशा सवार हो गया है। तुमसे न बने

—यह मुझसे बनने न बनने की बात नहीं है।

—तो फिर क्या? वैष्णव की बच्ची हू भीख मागकर न खाऊ तो अधरम होगा?

—यह भी नहीं मौसी!

—फिर?

—ठीक ठीक समझ नही पा रही हू। तुम यही सब करोगी—घर-गिरस्ती नही करोगी?

—घर गिरस्ती? माने ब्याह? सो नही जानती।

—उसकी उम्मीद पर तुम न रहो।

—माना नही रहूगी।

—फिर?

—गाव मे लडकियो का स्कूल खुला है मौसी। दीदियो को देखा है? उनमें-से कितनो ने शादी की है?

—यह मैं सोचती हू। कोई किनारा नही मिलता।

—मेरा किनारा तुम खोजो भी मत।

—वह सब तो अपनी विद्या के बूते पर रहती हैं।

मुह की बात छीनकर मालती ने कहा मैं यही लेकर, रुपया लेकर

रहूंगी। तुम थको मत। यह बताओ कि काम छोड़कर दुकान का काम करोगी कि मैं आदमी तलाशूं ?

—तुम्हारा ही काम करूंगी मोसी। तुमने बेटी की तरह छोटी बहन की तरह पाला है। मां जैसा प्यार कर बैठी हूं। तुम्हारा ही काम करूंगी।

हाट तीसरे पहर लगती है। उनलामा ने दो पहर से ही सामान बनाना शुरू कर दिया। पहले दिन के लिए कुछू ने ऐसा एक आदमी को भेज दिया था जो सिंघाड़ा कचौरी बनाना जानता है, पकौड़ी बनाना चाय कटलेट बनाना जानता है।

श्रीमती ने भी अपनी दुकान को अच्छी तरह से सजाया। रंगीन कागज की कुछ बर्ने लाकर लगा दी। एक काम और किया, उस काने लगड़ की बेटी चुनरिया को साफ कपड़े-लत्ते पहनाकर दुकान में बहाल कर लिया।

चुनरिया के बाप के गले में एक मोटी काली डोरी-सा जनेऊ सदा से है। वह कहता है मैं ब्राह्मण हूं। उसका माटी-सा और चुनरिया का तांबे सा रंग उसके इस कथन का गवाह हो जाता है। वह ब्राह्मण है कि क्या है यह बात उससे कभी किसी ने नहीं पूछी। श्रीमती ने आज उसका उपयोग किया। चुनरिया बन ठनकर रात को रास्ता पर घूमा करती है बाबाथान के बड़ बन पीपल के जंगल में घूमती है यह भी सभी जानते हैं। लेकिन भुवनपुर की हाट में यह बात कोई उठाएगा ही नहीं। चुनरिया दुकान में चाय देगी बरतन धोएगी। लोगों से पूछेगी और क्या लाए बाबूजी ? मुसकराएगी। लेकिन श्रीमती की भूल है। चुनरिया भुवनपुर की हाट में धूल की चीज है। उसपर पड़कर भी लोगों की नजर नहीं पड़ती। मालती का मोह उससे कहीं ज्यादा है।

टिकली उसके पास आई थी। कहा था तुम मुझे रख लो।

मालती ने हंसकर कहा तू करेगी क्या ? तेरे हाथ का तो कोई खाएगा नहीं !

टिकली बोली, नहीं खाएगा ? तो मैं ग्राहक बुलाऊंगी। इस दुका

मे आओ। जूठे बर्तन धोऊगी। लोग आएगे—कहकर वह हसी।

मालती ने उसे रख लिया।

भुवनपुर की हाट। इस हाट म सब कुछ बिक जाता है सब चल जाता है।

कुर्सी पर बैठी हाट की ओर देख रही थी मालती। मन म उसके सचमुच ही एक नशा था। शायद हो कि काम का नशा हो। उसके साथ साथ भविष्य का भी। अच्छा लग रहा था। सवेरे चाय, सिंघाडा, बिस्कुट, सिगरेट की अच्छी बिक्री हुई। लोग सवेरे से ही हैं। ये सब हाट के लोग हैं गाहक नही। जो लोग बैलगाडियो स यहा माल लाते हैं वे लोग। रेलगाडी स उतरकर जो लोग माटिया मजरा पर, किराए की बलगाडी पर माल लेकर आते हैं वे लोग। कुछ वसे खरीदार भी आए है। उन्हें हाट की सौदा-पाती के सिवाय भी काम है। किसीको थाने मे किसीको रजिस्टी आफिस म किसीको प्रखड विकास पदाधिकारी के दफ्तर म, किसीको स्कूल, लडकियो के स्कूल मे। लडकिया होस्टेल मे रहती है, उनसे मुलाकात करनी है। कोई गाव स बोर्डिंग मे चावल लाकर देता है। सवेरे जो आए, जो हाट के सामने से गुजरे, व सभी टिन की छौनी-वाली इस नई दुकान और दुकानदारिन को देखकर ठिठक गए। बिलकुल शहरी औरत! उन सबने वहा जाकर चाय पी। सिगरट पी। कुडू बाबू हिसाबी आदमी हैं। सिगरेट की बीस डिबिया दी है। वह भी ज्यादातर दामी सिगरट। कह दिया देखो सस्ता माल मत रखना! तेरी दुकान सस्ती नही है। टिक्ली को तू रख रही है रख, मगर उसे सजाना गुजाना मत। वह दाई है, दाई की तरह रहे। हा।

सवेरे चालीस प्याला चाय बिकी। सिगरेट पूरा एक टिन। पचास सिगरेट। डिबिया भी चार। डिबिया के अलावे कुडू ने सिगरेट की कई टिन भी दी थी! टिन से इज्जत बढती है और खुली-खुदरी सिगरेटो की बिक्री भी होती है। कुडू ने सब समझा दिया था।

आलूवालो ने गाडी से बोरे उतारे। आलू की ढेरी लगाने लगे।

तम्बाखूवाला पहुंच गया। कटवा के फलवाले टब के बक्सा पर फल सजाने लगे। फीता वार का फेरीवाला आ गया। सब पेड तने बैठकर बीडी फूंक रहे है। उसकी दुकान की तरफ ताक रहे हैं। टिक्ली कभी कभी हाथ के इशारे से उन्हें बुला रही है। हंस रहा है। वह सर पर बोझा लिए आठ दस जने आए। ये बगन की बस्ती के नामी येतिहर है। भुवन पुर की हाट में उन्हीं की बगन मूली के लिए बगन मूली का नाम है।

चपा ने कहा यह देखो मौसी आतुल के खत का बगन आ गया। बगना बनाने के लिए ले लो। लबा, गोल बगन। लबी फाँके और गोल चकत्ते—दोनों अच्छे रहेंगे।

मौसी पर भी नशा चढ गया है। पहले आकर चपचाप काम कर रही थी। कभी-कभी हाथ रोककर सोचने लगती थी। अब वह आच्छनता जाती रही है। टिक्ली से कह रही है। हुक्म दे रही है। काम कर रही है।

बाली, जा। चुनकर ले आ।

वह आ गई चटाईवालियां। मुसलमान औरतें खजूर की चटाई लिए वह आ रही हैं। वह आ गई मोढा टोकरी।

मौसी रुपया लेकर चली जा रही थी। मालती ने कहा, सुनो।

—क्या ?

—तीती-तीती मिर्च लाना। और

—कहो।

—रंगाई हुई खजूर की पत्तों की दो चटाइयां, एक मोढा।

खैर यह हाट उठते समय लेने से भी चल जाएगा। वह आ रहा है एक मनिहारी वाला। पुराना आदमी है, उसके बाप के जमाने का। यह भी मछली मारने का सरंजाम बेचता था। अभी भी बेचता है। वह रहा धरनी चाचा। तैयार कपडे वाला। वह आ रहा है। वह रहे किताब वाले। तसवीर वाला। उसके पास से औरत की अच्छी तसवीर वाले कुछ कलेंडर लेने होंगे। टिन की दीवाल पर लगा दिए जाएंगे। एक दल और आ रहा है। दो बैल गाडियां—कद्दू-काँहडे लदे हैं। ये लोग मयूराक्षी के

किनारे के हैं। वह रही बदनामी की गाडी। अब तो हुड-हुड करके चले आ रहे ह लाग। घुसत ही ठिठककर खडे हो जाते हैं—हाट की माटी को उगली से छूकर कपाल से लगाने के बाद हाट के अदर दाखिल होते हैं। दौडते हुए आ रहे ह। अच्छी जगह दखल करेंगे। वे सबक सब मुसलमान हैं। अच्छे अच्छे खतिहर। व्यापार म भी भले व्यापारी। उनकी लाई हुई चीजें कभी लौटती नही। या प्रवाद तो है पर भुवनपुर की हाट का वह पहला नियम अब नही है कि अनबिका माल मालिक खरीद लेंगे।

साइकिल चढे खरीदारो का एक दल आया। साइकिल थाम सभी हाट म आ रहे हैं। लकडी की उस दुकान क सामने बरगद के नीच रखेंगे जजीर लगाकर ताला बद कर देंग। व लोग इधर ताकने लगे। मालती को देखन लग। मालती क होठो पर जरा हसी काप गई। मन की जमीन पर घाम सरीखा सरस कौतुक उग आया। वह उठ खडी हुई। माथे का भटका देकर बिखर बालो को सामने लाकर हाथ स ठीक कर लिया। कधे क कपडे को ठीक करके फिर स बठ गई।

पीछे से टिकली ने कहा कुछ लाग आ रहे हैं।

—देख ले चाय का पानी ठीक म उबल रहा है या नही।

कोयल के चूल्हे पर अलुमुनियम की एक बडी-सी देगची म चाय का पानी गरम हो रहा था। टिकली ने कहा, टगबग टगबग कर रहा है।

मालती ने रसोइए से पूछा ठाकुर कडाही चढाइएगा कि जो बना बनाया है, वही देंगे ?

ठाकुर ने कहा वही ठीक है। अभी अभी तो कडाही उतारी है।

आठ जन एक ही साथ आकर दुकान के सामने खडे हो गए। मालती ने कहा आइए!

वे सब बेंच पर बठ गए। जगह की किल्लत होने लगी। एक आदमी को बठन म कठिनाई होन लगी।

मालती ने अपनी कुर्सी बढा दी बठिए।

जो खडा था, उस आदमी न कहा नई दुकान खोली ?

—जी हां। आप ही लोगों के मकान मोन सी।

छोकरा गल गया। बोला बेताब। हमलोग अभी गहरे गए यहां तो बतिया रहे थे। पुरानीवासी दुकान श्रीमती की है। बड़ी मजी है। यहां चूंकि दूसरी कोई दुकान थी नहीं लाचारी वहीं आया करता था। अच्छा दुकान खोली आपने। साफ सुथरी है।

मालती को हंसी आ रही थी। हंसी को जप्त करके हां बोली—क्या मंगवाए?

—पहले चाय तो दीजिए।

—न पहले एक एक सिगरेट दीजिए। वाह कैप्स्टन है गोल्डफ्लेक है। दीजिए एक एक कैप्सटन दीजिए।

—और खाते क्या? चाप है। खिलवाए?

—चाप? वाह! उस दुकान में कम लगती और कमती। दीजिए-दीजिए!

टिक्ली फिक फिक करके हंस रही थी। एक ने कहा अरे यह यहां क्या कर रही है?

—वह जूठे बरतन धोती है।

—खान का सामान तो नहीं छूती है न!

—नहीं नहीं। गरीब बेचारी

—गरीब?

—क्या जी? मैं कोई अमीर हूं? उह। टिक्ली बोल उठी। उसके बाद हठात् क्रुद्ध स्वर में बोल उठी उ, मैं छोटी जात की हूं। टिक्ली छोटी जात की

—ऐ चुप! अभी बाहर जाकर बैठ। जा।

टिक्ली बाहर जाकर बैठी।

कि इतने में हाट के शोरगुल को दबाकर ग्रामोफोन बज उठा—

भुवन हाट मे सौदा लाया पूंजी सारी खाई
तेल नून की बांध पोटली रतन गवा कर रोई।

सखि री, ढूढ़े मिले न अपना मन !

कहा बज रहा है ? जिज्ञासा भरी निगाह उठाकर मालती देखने लगी, कहा बज रहा है ? श्रीमती की दुकान म ? टिक्ली ने उसके मुह की तरफ ताककर उगली से दिखा दिया—हा। वही बज रहा है।

ओ ! श्रीमती ग्रामोफोन बजाकर गाहक बुला रही है। वह हसी।

जी चाहे जितना बजा लो श्रीमती, पूजी तुम्हारी गायब हो गई है सखा ! लाख कहे लो सोना को माया नही होने की।

जाकर हाट घाट पर बठी जल म मारी डुबकी
मोती मिला झलाभल उससे खिली जवानी दुबकी
फिर जा डूबी हाय, खो गया रूप और यौवन
। मेरा खोया रे मूलधन !

एक कोई बोल उठा वही ! मन की राधा वाला। नवीन बाऊल हैं।

—मन की राधा ?

—क्या।

—उसके तो एक ही मन की राधा का रेकड जानता हू !

—यह भी है। बाजी रखगो। ज्यादा नहीं। एक डिब्बी सिगरेट।

उधर गाहक आकर खड़े हैं। खूब हैं ये छोकरे ! उठने का नाम नही ! बातें भी उसकी तरफ ताक-ताककर कर रहे हैं। मालती हसी। अच्छा लगता है। बुरा नही लगता। लकिन अच्छा लगने से तो नही चलेगा ! उसने टिकली स कहा, बठी क्या कर रही है ? गाना सुनन स ही चलेगा ? बतन सब धो ल। नये गाहक आए हैं। सुना ?

टिकली बेंच के सामने जाकर खड़ी हुई। मालती ने नये गाहको से कहा जी, बस। इन लोगो का हो गया। जरा देर रुकिए। उठ जाए ये लोग।

लाचार वे लोग उठ गए। नये लोग बठे। टिकली ने लत्ते से बेंच को पोछ दिया। उन्होने आपस मे एक-दूसरे का मुह देखा। मालती

समझ गई। बोली, ठहरिए, मैं पोछ दू जरा। वह आगे बढी। गाहकों मे से एक बोल उठा, रहने दीजिए, हो गया।

—ठीक है तो ? नही तो मैं पोछ दू ठीक से।

एक ने कहा हा हा। शहर मे चाय देनेवालो की जात कौन देखता है ? और जात तो गई। साहबो ने जात मारना शुरू किया था, देश स्वाधीन हुआ और खत्म। लो बठो।

—क्या मगवाऊ ? खाने की चीज टिक्की नहीं छूती है। सामान ठाकुर तयार करता है। परोसते हम हैं।

चपा बगन कूट रही थी। बोली हम लोग सब कुछ बडी शुद्धता से बनाते हैं। और फिर वैष्णव, ब्राह्मणा के दास। हमारे हाथ का खाने मे क्या दोष ? हम देते हैं।

मालती प्लेट म चॉप लाने लगी। बगनी तली जा रही थी। उन लोगो ने बगनी मागी।

उधर हाट मे शोरगुल मचा। चावल धान के व्यापारी ब्राह्मण जगन्नाथ बाबू दो आदमी के बाल पकडकर खीच रहा था। खीचकर हाट से बाहर ले जा रहा था। लोग बाग उसी तरफ ताकने लगे। कुछ लोग सौदा पाती करना छोडकर उसी तरफ जाने लगे।

क्या हो गया ? मालती ताकने लगी ! गाहक भी उधर को ताकते हुए खान लगे। टिक्की दौडकर चली गई।

मालती ने जोर से पुकारकर कहा जल्दी आना टिक्की। दुकान के अदर स एक गाहक ने हाट के एक जने से पूछा—ऐ सुरन्दर क्या हुआ जी ?

सुरेन्द्र दुकान के सामने से ही जा रहा था। वह दात निपोरकर हसते हुए बोला—पिकपाकेट। पाकिटमार। जगन्नाथ बाबू न रगे हाथो पकड लिया।

—मार, मार साला को ! यहा का है ?

—नही, पछाही है। साल, घूमत रहने हैं तमाम। आज ही सवेरे

गाडी से उतरे हैं शायद। फीता कारवाले ने बताया, परसों इस सथिया मे देखा। सथिया की हाट में उस दिन एक बेचारे के अस्सी रुपये निकल गए। यही साले थे।

मालती चुप बैठी रही। उसे जेलखाने की बात याद आने लगी। अधेड भुवन और छोकरी संध्या जेब काटने के कसूर में जेल आई थी। वे बताती थी। जेल में कोई कुछ छिपाता नही है।

उन दोनो और जगन्नाथ बाबू को घेरकर काफी भीड जुट गई। अचानक कान के इस ओर डुगडुगी बज उठी। बडे जोर से बज रही है। बाजीगर की डुगडुगी जैसी। गरदन फेरकर मालती ने देखा। बाजीगर ही है। एक भालू लिए आम के नीचे खडा है।

—अरे बाप रे! जानती हो मालती दी, तीन तरह की पोशाक पहन हुए हैं वे!

टिकली लौट आई। एक ग्राहक ने पूछा, तीन तरह की कैसी?

टिकली बोली पाजामा पहने हुए है न! उसके अदर हाफ-पैंट और उसके अंदर फिर कपडा।

—क्या मिला?

—ढेरों चीज मिली। पुलिस के हवाले करेगा।

—पुलिस के हवाले क्यो बाबा बाबा भुवनेश्वर के दरबार में! यहां तो नक्द वसूली है। दुख के बदले सुख, मन के बदले मन। चोरी के बदले मार। मार तो पड चुकी। अब फिर पुलिस में क्यो?

—सो जो कह लो। भुवनेश्वर की हाट का वह महातम अभी भी है। उस दिन सुखो घोषाल रो रहा था। बेटी का ब्याह टूट गया। है न! कल सुखो घोसाल से भेंट हुई। बडा व्यस्त। मैं खेत पर धान की कटनी की निगरानी कर रहा था। पूछा ऐसे हनहनाते हुए किधर चले घोपाल? बडी चुस्ती दिख रहे हैं। घोषाल भर गाल हँसकर बोला— चुस्ती की बात तो है नही। बेटी की शादी पक्की हो गई। बाबायान के सिंदूर से लग्न पत्तरी तक लिख दी। हाथ जोडकर प्रणाम करते हुए

बोला, बाबा का महातम झूठा नहीं है चाप। उस रोज हाट गया था। बाबा के सामने बड़ी विनती की बाबा लड़की के ब्याह के लिए बतरह परेशान हूं। दया करो। वहां से निकला। देवी दुकान में चटर्जी से मुलाकात हो गई। दे बाबू को बात मालूम थी। बट बीच में पड़ा। वह सुनकर बात पक्की कर दी। चटर्जी का बेटा एक मास्टरनी के पीछे पागल था। उसीसे ब्याह करेगा। चटर्जी ने मुझसे नहीं बताया किंतु दे से कह उठा। दे ने उसके बेटे का बुलवाया। डाट फटकार कर राजी किया। कहा, चटर्जी आज ही तै कर लो। लग्नपत्री लिखी गई। कहा सीधे बाबाथान चले जाओ। सिंदूर लगा लेना। दे के ही पास जा रहा हू। उसकी जमीन के पास एक टुकड़ा खेत है अपना। उस बेटी के ब्याह के लिए बेचना है। उसी को बेचूगा। इसीलिए जा रहा हूं।

—तो फिर खेत का महातम कहो बाबा का महातम क्यों कह रहे हो ?

—क्यों न कहू ? बाबा का महातम न होता तो तुम्हारा बांधा हुआ ढेला गिर क्यों पड़ता ? बाबा उसे पूरा क्या करे ? पराए घर की विधवा लड़की

—देखो खबरदार। मुह संभालकर बोलो ! तुमने मुझे देखा है ढेला बांधते ?

—तुमने खुद ही मुझसे कहा है। नहीं कहा है कहो ?

—नहीं।—चीख उठा वह।

—हां कहा है। अह आदमी भी उतने ही जोर से चिल्लाया।

यह आदमी उठ पड़ा। मालती के पास आकर बोला एक चाय, एक प्याला चाय। कितना ? उसने एक चवन्नी फेंक दी।

मालती मन ही मन हंस रही थी। खुदरा पैसे हाथ में लेकर पूछा सिगरेट दू ?

—नहीं। खुले पैसे लेकर वह चला गया। जरा दूर जाकर वह फिर लौट आया। दुकान के सामने होकर बोला तुम ? तुम जो चाय

ना'त म। यहा ल आए, वह बात कह दू '

इस आदमी ने कहा, कह दो। तुम क्यो, मैं ही कहे देता हू। मैंने कहा, दुकान अच्छी है। दुकानवाली और भी अच्छी है। चलो, खूबसूरत औरत के हाथ की चाय पी आए ' क्या जी, मैंने काई बुरी बात कही ? यह काई बुरी बात है ? तुमने इसका कुछ बुरा माना '

मालती का चेहरा तमतमा उठा। फिर भी वह बोली न-न। यह बात बुरी क्या है ? मैं क्यो बुरा मानने लगी ?

चपा बोली दुखियारी है बाबूजी। आप ही लोग इसके बाप-चाचा, भाई-बद हैं। आपलोगो को अच्छी लगती है, यह तो सौभाग्य है उसका।

—ठीक है। मैं ढेला बाधने नही जा रहा

भालूवाला दुकान के सामने आकर खडा हुआ—चाय मिलेगी ?

आसपास के लाग, खास करके स्त्रिया दुकान म घुस आई—मैया री मया !

—कोई डर नही माताजी। भालू कुछ नही करता।

—सो हो। तुम उसे हटा लो। और चाय, प्याले मे नही मिलेगी। तुम्हार पास कोई बतन है ? हमार पास माटी का चुक्कड नही है।

—ए हटा भैया, आ बन का भालूवाला। भालू को हटाओ।

चपा बोल उठी मालती, भूती सरकार सा लग रहा है ?

हा भूती सरकार ही तो है। पाव के नीचे की ओर के कपडे को घुटने तक उठाए बदन पर फतुही, काला गुलथुल चेहरा—भूती सरकार आकर दुकान म घुसा !—पहचान रही है रे मालती ? तुझीको पहचानने म तकलीफ हो रही है ! वह वा, देखने म तू खासी हो गई है ! रास्ते मे देखने से लगता शायद शहरी औरत हो। वाह वाह ! मैं यहा था नही न, बदवान म था। तेरी सखी गोपा की जायदाद मे झझट हो गई है। गोपा का बाप मुझे ले गया था। बडा झमेला है। आज यहा आते ही सुना कि तू आई है। आई ही नही हाट म रेस्टरेंट भी खोला

है। और गाव मे उथल पुथल कर दी है। गोपा भी तो आई मेरे साथ। वह विधवा हो गई है सुना है न ?

मालती को पता है। ब्याह के कुछ ही दिन बाद विधवा हो गई। चपा ने बताया। वह जानती है। उसन खूब दुख नही पाया। खुशी हुई—विधवा होते हुए भी गोपा आज बहू है—उसके घर द्वार ह। चपा ने बताया है अच्छे घर की बहू है वह।

गोपा का जेठ चुनाव म जीता है। विधान-सभा का सदस्य हुआ है। बसत ने उसे जिताया है। इसी चुनाव म जीतकर बसत का नाम हुआ है। वह लीडर बना है।

जेठ से गोपा के पति की बड़ी अनबन थी। ये बातें उसने सुनी हैं।

मालती ने सरकार की अगवानी की, आइए आइए। चपा ने कहा, सरकार बाबू का एहसान सदा याद रहेगा। जेल म तुमस मैंने तीन बार भेंट की थी। इन्हाने ही दरखास्त लिख दी थी। तीना बार।

सरकार ने कहा यह ऐसा कौन-सा विशेष किया।—वह बठा।

मालती ने पूछा चाय तो पिएगे न ?

—नही पिऊगा ? तो फिर दुकान मे आया किसलिए ? ला चाय दे। चाप दे। और वह कड़ाही मे क्या हो रहा है ? बगनी है ? यह भी चार दे दे।

चाप तोडकर मुह म डाला। कहा वाह बडा अच्छा बना है। रेस्टु-रेंट किया, बडा अच्छा किया है। तू दुकान पर बठेगी तो खूब बिक्री होगी।

मालती को यह मालूम है।

—शकल आखिर कुडू की है न! खनीफा आदमी है। उसके साथ कुछ लिखा-पढी हुई है ? दिखलाना। वह देस स्कूल के लड़को की जमात आ रही है। बेशक यही आ रही है। मैं उठता हू। ठोगे म थोडी-सी बगनी दे दे, घर ले जाऊ।

चपा ने पूछा, गोपा का क्या हुआ सरकार बाबू ?

—होगा क्या ? थाना पुलिस करके उसे ले आया। मुकदमा दायर हो गया।

—गोपा आ गई ? मालती ने पूछा।

—हा। मामला कुछ आसान थोडे है। उसका जेठ एम० एल० ए० है। कहा ग्रादमी है, बडा आदमी है। मगर मैं भी मूती सरकार हू। अपना बसत लेकिन बसत ही है। खूब किया उसने, खूब। सच पूछो तो गोपा का जेठ जो एम० एल० ए० हुआ है बहुत कुछ उसीके जोर से। रुपया रहने से ही तो वोट नही मिलता। वह फिर बताऊगा। गाहक आया है।

सच ही गाहक आए। लडके। दस बारह जने। मालती लेकिन चुप खडी रही। बसत के बारे म पूछ नहीं पाई। बसत ? कहा है वह ? खूब किया है। कहा आया वह ? उसे देखने नहीं आया ? गाहक लोग बात कर रहे थे। मालती को उसका ख्याल नही। वह हाट की ओर ताक रही थी। अनमनी हो गई थी। गोपा ! बसत ! बसत गोपा ! कसा तो ! घिसे काच के उसपार-सा नजर नहीं आ रहा है।

—मालती !

मालती ने जवाब नही दिया।

—गाहक आ रहा है।

मालती ने कहा देखो मौसी, क्या चाहिए।

चाहिए सब कुछ। लडको की जमात है। बैगनी खाएगा, चॉप खाएगा, सिघाडा खाएगा, चाय पिएगा। दो-एक के अलावा सभी सिग-रेट भी लेगा।

चपा ने ठाकुर से कहा, आप भी हाथ लगाए ठाकुर !

घिसे काच के उसपार सा सारा कुछ खोना ही नही जा रहा है, जल की दीवार के अदर जसे आवाज भी नही आती थी, वसे ही शब्द भी नहीं

सुन रही थी मालती।

वसत। वसत गोपा। वसत न गोपा के लिए बहुत किया।

इसी बीच बुधवार की हाट खत्म हो गई।

चपा ने कहा, मालती हो क्या गया तुम्ह। उठो।

—ओ, हां। घर जाना होगा। वह आदमी आ गया? जो रात को रहेगा?

—आया है। वही तो बाहर बठा है।

—टिक्ली कहां है?

—टिक्ली? अरे राम वह तो शाम से ही मगन है। उस दुकान से चुनरिया और इस दुकान स टिक्ली, दोनो ही शाम से भागी हुई हैं। अकेली सी घूम रही हैं कही।

—हूं।

हाट की बत्ती बुझने लगी।

केवल बीच के खभे मे एक बत्ती जल रही है। इतनी बडी हाट म कसा धुधला धुधला लग रहा है। हाटवाले लोग असबाब जा चुके। जिन के गाडी है, उनकी गाडी लद रही है। धरनी चाचा की छपरी अधेरी है। वह चला गया है। हठात उस याद आया, भूल हो गई। धरनी चाचा को बुलाकर चाय पिलाना चाहिए था। ठोगे म थोडी-सी घुगनी और चाय दे आने से बूढा खुश होता।

बैठकर गिन गिनकर उसने रुपये-पसे की थाक लगाई। कागज म लिखकर जोडा। साठ रुपये दस आने तीन पसे।

रुपयो को थली मे भरकर बाधा।

रात मे दुकान म सोनेवाले को कुछ खाने के लिए दिया। और एक उसके हाथ मे देकर कहा टिक्ली को दे देना।

चपा ने कहा, माला!

—मौसी!

—न चल। रास्ते म कहूगी।

चलते चलते चपा ने फिर कहा, टिकली को कल जवाब दे देना। उसकी जरूरत नही। वह लडकी अच्छी नही है।

—भली और बुरी। उससे हमारा क्या मौसी ?

—तुम कुछ समझ नहीं सकी हो।

—क्या ?

—उसके बच्चा होगा।

—बच्चा होगा ?

—हा। वह गर्भवती है। अपनी दुकान में क्हा जच्चाखाना करगी ?

—हा। बात तो ठीक है। लेकिन उसकी मा के तो झोपडी है। पेडतला है। हमारी दुकान म क्यो आएगी ?

—छूत-पवित्र है मौसी

मालती हस उठी। हठात फिर चुप हो गई। कहा, छोडो मौसी। अच्छा नही लग रहा है। उसका मन सब कुछ को झाड फेंककर फिर मानो शूय हुआ जान लगा।

बसत। बसत गोपा। बसत एक बार आया तक नही। बसत ने गोपा के लिए बहुत किया। सब झूठ है। भुवनपुर की हाट की बात झूठी है। भुवनश्वर झूठ हैं। दुख के बदले सुख कडवे के बदले मीठा मिलना तो दूर, यहा कुछ भी नही मिलता है। बसत ने गोपा के लिए बहुत किया। और उसे आए सात दिन हो गए, वह एक बार आया भी नही।

ज्यादा या नहीं इसका लेखा तो नहीं लगाया है। लेकिन हा, किया है। जो मुझे करना चाहिए जो मैं कर सकता हू सो किया है। बसत ने यह खुद ही कहा।

तीन दिन के बाद सोमवार के सवेरे ही बसत आया। चपा और मालती तड़के ही जगी थी। दुकान जाने का इतजाम कर रही थी। हाट का एसे ही जाती है। और और दिन देर से जाती है। हाट के करीब ही है सब रजिस्ट्री आफिस। जरा दूर की दूरी। वहा रोज ही लोग आते हैं। आफिस के सामने सदर रास्ते पर चाय नाश्ते की दुकान भी है। भीड़ वहीं ज्यादा होती है मगर हाट की दुकानो म भी कुछ कुछ बिक्री होती है। मालती की दुकान मे सबसे ज्यादा होती है। हाट के दिन सुबह स ही खूब बिक्री होती है। जो लोग पिछली रात गाडी से माल लेकर आते हैं वह सब सवेरे ही चाय पीते हैं। भुवनेश्वर धाम म अभी भी यात्री आते है। बीमारी के लिए मन्नत के लिए आते हैं। उनमे से जो रोगी होते हैं जिन्हे मानता होता है वे तो बगर पूजा किए नही खाते। पर उनके सगी-साथ जो आते हैं खाते हैं। सोमवार को ऐसो के लिए मूढ़ी-मुड़क बुताशा मड़ा बिकता है। उन चीजो को लेकर सोमवार को सवेरे चपा अलग बठा करती है।

और म वे जाने की तयारी कर रही थीं कि दरवाजे पर पुकार हुई,
मालता ? कहा है मालती ?
मालती चौंक उठी थी। कौन ? कलेज में अदर धड़कन होने लगी।
किसका गला है ? वह वही नहीं है ?
—कहा हो, वष्णवी मौसी ?
—अरे, बसत लाला ! अहोभाग । आओ आओ।
मालती मानो पत्थर हुई जा रही थी। केवल दिल में अदर की उथल-पुथल बनी ही जा रही थी। अवाक हो गई थी वह। धप धप साफ पाजामा गरुआ रग का लबा कुरता, आखों पर ऐनक, माथे पे बाल—रूखे, बिखरे बिखरे दूसरा बसत हो जस।
बसत भी अदर आकर ठिठक गया। अवाक होकर मालती की ओर ताकता रह गया। यही—यही मालती है !
निढाल-सी खड़ी होकर भी मालती न यह महसूस किया। उसके दोनों कान गम हो गए। एक बार उसकी तरफ ताककर उसन फिर से नजर झुका ली। चपा ने कहा, देख क्या रहे हो सोना ? ऍ ?
बसत न बेझिझक हो कहा, मालती को देख रहा हू मौसी। कितनी सुन्दर हो गई है वह। और, सुन्दर ही नहीं, एकबारगी माडन स्त्री।
चपा न मालती से कहा, प्रणाम करो माला।
मालती न बढ़कर प्रणाम किया। बाली, और तुम ?
—मैं क्या ? मेरा क्या हुआ ?
—शहर का लीडर बन गए। आख मुह से चमक निकल रही है।
चपा ने कहा बठो-बठो सोना।
उसने एक आसन डाल दिया।
मालती उसके पास ही खड़ी रही। गजब है। वैसी वालती ही र
वाली मालती कसी तो झुक गई है—गूगी हो गई।
चपा ने कहा चाय नहीं पियोगे सोना ?
—नहीं पिऊगा भला ? तुम्हारे यहा भात खाया है। अब तो

का रेस्तरा खोल लिया है। चाय नही पिऊगा भला ! कल रात मैंने सब सुना। मन ही मन तारीफ की। वाह रे मालती ! सोच रक्खा था, सवेर सीधे हाट ही जाऊगा। रेस्तरा मे बैठ जाऊगा। कहूगा, एक प्याला चाय तो दीजिए ! तुम सब अवाक हो जाओगी।

हस उठा वह।

मालती हसी नहीं। पूछा गोपा के यहा ठहरे हो, क्यों ?

—हा। और कहा ठहरू ? गोपा की बदनसीबी की तो सुनी ही होगी ! मैं उसम उलझ गया हू। आया भी हू उन्हीं लोगों के काम से।

—सुना है। सरकार बाबू कह रहा था, तुमने बहुत किया।

जरा हसकर बसत ने कहा बहुत या नहीं इसका लेखा तो नही लगाया। लेकिन हा, किया है। जो मुझे करना चाहिए जो मैं कर सकता हू सो किया है।

गोपा बसत को बदवान लिवा गई थी। गोपा का ब्याह बदवान से कुछ फासे दूर एक गाव मे हुआ था। उसकी ससुरालवाले दत्त लोग जमींदार और व्यवसायी, दोनो थे। गोपा के ससुर राय साहब थे। आजादी के बाद भी वे कांग्रेस मे समझौता नहीं कर सके थे। पिछले चुनाव म गोपा के जेठ जनसघ से खडे हुए थे। हार गए थे। जो उसमे जीते थे हठात् उनके मर जाने से गोपा के जेठ स्वतत्र उम्मीदवार होकर फिर खडे हुए। उस समय तुरत तुरत व्याह हुआ था गोपा का। गोपा ने अपने पति से कहा था जेठजी से कहो वह हमारे गाव के बसत बनर्जी को बुलावें। बहुत अच्छा बोलता है। वोट ओट की बात खूब समझता है। कितना अच्छा गाता है कि क्या बताऊ !

गोपा के जेठ इसी बात पर बसत को अपने यहा ले गए थे। बसत ने सचमुच ही काम करके अपना कृतित्व दिखाया। वह उनके चुनाव का सर्वेसर्वा ही नहीं बना उनका राजनतिक परामर्शदाता भी बन गया। चुनाव के बाद भी उनके साथ रहता था। उन्होंने एक साप्ताहिक पत्र

निकाला था। संपादक उसका था वसंत।

उसके बाद गोपा का पति सहसा चल बसा। और उसके महीने भर के ही बाद गोपा के ससुर चल बसे।

गोपा के कोई बच्चा नहीं हुआ था। उसके जेठ ने कहा, जायदाद सब मेरी है। यही नहीं, पति के जीते जी गोपा स्वाधीन-सी घूमती फिरती थी—बंद करा दिया उन्होंने। गुरुआत सिनेमा देखने से हुई। घर की गाड़ी के लिए तिल का ताड़ हो गया। गोपा के पिता उसे लिवाने गए। लौटा दिया।

वसंत से झगड़ा हो गया।

वसंत ने उसी साप्ताहिक में लिखा जो सका जाता है वही रावण बन जाता है। जो नेता बनता है वही स्याह सफेद का मालिक बन बैठता है। वही हिटलर हो जाता है। वही गरदन काटने पर आमादा हो जाता है। मनुष्य के अधिकार को रौंदता है, नारी को जंजीर से जकड़ता है। दासी बनाता है। इस बात के जलते हुए उदाहरण हमारे नेता दत्त बाबू हैं।

इतना ही नहीं दत्त के सामने ही सुना दिया, मैं अपने किए पाप का प्रायश्चित्त करूंगा। गांव गांव में जाकर सभा करूंगा। आपके जुल्मो सितम का कच्चा चिट्ठा खोलूंगा।

दत्त इससे डर गए। गोपा को मैके जाने दिया। उसके गहने दे दिए। जायदाद का अब मुकदमे में जो हो।

वसंत ने कहा आखिर कितना मिला ? गोपा के ससुर की जायदाद तीन चार लाख की होगी। उसका कितना-सा मिला, कहो ?

एकटक उसकी ओर देखती हुई सुन रही थी मालती। वसंत थम गया। उसने धाम से कहा, और मैं ? मेरे लिए कितना किया है, सो कहो ?

वसंत हंसा। बोला तेरे लिए क्या करना था, बता ?

—कुछ नहीं था ?

—बता क्या था ?

एक लंबा निश्वास फेंककर मालती ने कहा नहीं। कुछ नहीं था। मेरी ही भूल है।—और वह अन्दर चली गई।

—अरे रे! मालती! मालती!

उसके पीछे पीछे बसंत अन्दर चला गया। मालती उस पार की खिड़की पकड़कर खड़ी हो गई थी। बाहर की तरफ ताक रही थी।

—मालती! बसंत ने फिर उसे पुकारा।

मालती ने पलटकर देखा। वह रो रही थी। दोनों आंखों से आंसू बह रहा था।

—रो रही है तू?

मालती एकटक उसकी ओर देख रही थी। अजीब थी उसकी वह नजर। वह नजर देखकर बसंत दंग रह गया। स्थिर, अपलक।

—बसंत तुम्हारी चाय?

चाय लिए चंपा आई। लेकिन फिर भी उसे कोई संकोच नहीं कोई हड़बड़ी नहीं। मालती की नजर को देखकर चंपा ने शंकित होकर पुकारा मालती, माला!

मालती की निगाह मानो दप से जल उठी। वह चीख पड़ी—मौ सी!

—मालती!

मालती खूंखार जानवर-सी उसकी ओर दौड़ी—जाओ यहां से जाओ कहती हूं।

चंपा डर से पीछे हट गई। अस्फुट स्वर में बोली माला!

—मार डालूंगी मैं तुम्हें। जाओ।

चंपा चली गई। किवाड़ भिड़काकर मालती बसंत की ओर पलटी। उसकी आंखें अभी भी लहक रही थीं। आंसू के नीचे नजर की वह आग मानो हर पल अनेक रंग निखार रही हो।

बसंत देख रहा था। वह चंचल नहीं हुआ। स्थिर होकर खड़ा था। बल्कि होठों पर जरा हंसी खेल गई थी। मालती ने कहा उस खेत की

राह आते हुए एक दिन—याद है ?

—तुझे वह बात याद है ?—वसत के होठो के एक ओर वह हसी जरा और ज्यादा फैल गई।

—तुमने मुझसे विवाह करने की कही थी। मुझे जकड लिया था—। अब मालती टूट पडी ! झर झर करके रो पडी। वसत ने करीब जाकर उसके सर को छाती म खीच लिया।

मालती ने कहा, कदखाने मे ढाई साल तक मैं केवल तुम्हारी ही बात सोचती रही थी। तुम्हे ही सपना देखती रही थी।

वसत ने उसे छोड दिया। कहा वह बात मैं भूला नही हू। मुझे याद है ?

—नही-नही, नही है। फिर तुम आए क्यो नही ?

—काम से

—काम ! गोपा का काम ?

—नही। काम ! मेरा काम। अब मुझे बहुत काम है !

—जानती हू। अब तुम बहुत बडे आदमी हो। बडा नाम है तुम्हारा।

—फिर भी मैं तुझे नही भूला। आज भी तुझको प्यार करता हू।

मालती ने दोनों हाथ बढाकर उसके गले का लपेट लिया। मुह पर मुह रखकर बोली, तुम्हारे बिना मैं जिदा नही रह सकूगी। नही नही-नही ! वह फिर रो पडी।

—वसत !

बाहर से चपा ने आवाज दी।

पागल की तरह त्रासित आखो से गरदन घुमाकर मालती ने दरवाजे की ओर ताका। चिल्लाकर ना कहना चाहा। परतु हाथ से उसका मुह दबाकर वसत ने जवाब दिया जरा देर बाद वष्णव बहू।

—तुमको बुला रहे हैं। दस-बारह आदमी आए हैं। बाहर खडे हैं सब।

—अजीब मुसीबत है! छोड़ मालती। मैं हूँ। मैं तुझे आज भी चाहता [illegible]। छोड़।

मालती ने उसे छोड़ दिया। उसके ज़रा देर पहले के गुस्सैल और क्षुब्ध चेहरे पर गजब की सजीली सी हँसी निखर आई। बोली, बड़ा मनने की मुसीबत है! जाओ।

बसंत बाहर निकल गया।

मालती ने आँखें पोंछी।

कुछ क्षण वह स्तब्ध खड़ी रही। बाहर निकलने में शर्म आ रही थी मानो। चंपा मौसी के सामने तो लाज का अन्त नहीं रहा। एक अपराध बोध ने उसे जैसे नचा दिया। छि छि। यह क्या किया उसने पागल जैसा। कुछ देर में अपने को संभालकर वह बाहर आई। आवाज दी—मौसी!

चंपा सिमटी बैठी सर पर हाथ रखे नीचे को नजर किए सोच रही थी। दुकान का आदमी आँगन में बैठा था। सामान सब सजे-बजे पड़े थे। चंपा ने मुसकराकर कहा कहो, क्या कहती हो?

—नाराज़ हो गई?

—नाराज़?—चंपा हँसी—नहीं। गरदन हिलाई।

—मेरा दिमाग ठीक नहीं था मौसी।

—वह बात रहने दे।

—वह मेरा कन्हैया है मौसी!

—भला! इसी तरह से ठीक भज पाओगी?

—जरूर।

—कन्हैया पर विश्वास करती हो?

—नहीं। सो नहीं करती।

—तो? विश्वास के बिना तो नहीं बनता मौसी।

—देखना।

वह आदमी बैठा बीड़ी पी रहा था। बीड़ी को फेंककर वह बोला,

बडी देर हो गई। हाट का दिन है। चलिए!

—उठ जा मौसी!

—चलो।

हाट जम गई। शोर-गुल। आज की हाट ज्यादा जमी है। आज लकडी की गाडियां ज्यादा आई थीं—सखुए की सिलपट—बने दरवाजों से भरी गाडियां बड पीपल के जगल मे आकर जमा हुई थीं। वह सब बरागोनला के मेले मे जा रही है। वह मेला बगाल का सबसे बडा मेला है। तिसपर श्रीपचमी और शीतला-षष्ठी करीब है। स्कूल के लडके और लडकियां सरस्वती पूजा का सामान खरीदने के लिए टूट पडे हैं। गृहस्थ शीतला-षष्ठी का बाजार करने आए हैं। गाडी बदी डठलें भान बिकने को आई हैं। षष्ठी के लिए खासकर कटवा के आलमपुर की डठला की आज बडी माग होना है। मटर की छीमी, सेम, बगन भी बहुत आया है। उबला मटर सेम बैंगन की तरकारी और साग की डठल तथा पोस्तादाने की तरकारी शीतला षष्ठी के लिए अनिवार्य है। होनी ही चाहिए। उधर लकडी की दुकान के सामनेवाले बरगद के नीचे पकार लोग बकरे बहुत ले आए है। लडके-लडकियां सरस्वती पूजा के लिए खरीदेंगी। षष्ठी के दिन बाबू लोग दिन म बासी खाएग रात को बाहर इट के चूल्हे पर मास और खिचडी पकाकर खाएगे। जाडे के अब रहे कै दिन! इस तरफ कुम्हार लोग सरस्वती की छोटी छोटी प्रतिमाए ले आए हैं। दो चार मभोले कद की मूर्तियां भी है। कलकत्ते मे आजकल जिस फशन की मूर्तियां बनती हैं वसी ही।

एक कारवाला हाक लगाता चल रहा है—बसती रग बसती रग। कार फोते के साथ आज वह रग भी ले आया है। लडकियां बसती रग से कपडे रगाकर पहनेंगी।

मालती की दुकान मे भी आज भीड ज्यादा है। मालती आज जसे खिले कमल-सी टलमल कर रही है। जीवन मे खुशी की धूप लगने से उसकी सारी पखडियां मानो फूल गई ह।

सकोच, सस्कार—सब कुछ को ऐरावत की तरह वहा दिया। कोई कुछ भी कहे। जो होना ही हो। उसकी कोई चिंता नही, भिभक नही परवा नही। बेखौफ है वह। बसत उसको प्यार करता है। बीच-बीच मे वह खिलखिलाकर हसती है।

श्रीमती की दुकान म ग्रामोफोन बज रहा है—

मिलनमधु माधुरी भरी
यह रात स्वप्न की बीते ना,
जीवन के बिरवे से सुख की
यह शेफाली रीते ना। रीते ना।

बड़ा अच्छा लग रहा था। कभी कभी आस-पास को भुलाकर गुन-गुनाती हुई वह सुर मे सुर मिलाने की कोशिश कर रही थी।

उसकी निगाह आज घिसे काच-सी धुधली न थी, आर पार मिल कर एकाकार हो गया था। लाग और लोग। काले काले सर, घूघट-वाले सर। उसीमे हजार मुह—औचक ही एक चेहरा दिख जाता है और फिर तुरत खो जाता है। या तो वह झुककर कुछ खरीदता रहता है या पीछे हट जाता है। या इधर के कुछ माथो का पिछला हिस्सा उसे ढक देता है। बेमानी। मगर अच्छा लग रहा था।

झन की आवाज हुई। चपा ने अफसोस के साथ कहा, तोड दिया।

मालती न मुडकर देखा। धोने मे कुछ प्लेट-प्याले टिक्ली ने तोड डाले। अप्रतिभ होकर खडी हो गई वह। मालती रज नही हुई। हस-कर बोली टूटे टुकडो को बटोरकर कूड के टिन मे डाल दे। चल मैं बसन धो देती हू।

कमर म फेंटा बाधकर वह बढ गई?

टिन की दीवाल के उस तरफ खडा होकर कोई धीमे से कह रहा था छोकरा देखने म खूब है मद!

—हसी दगी है?

मालती को जोरों की हसी आ गई। वह खुक-खुक करके हसने लगी।

बतनो को धोकर उसने चपा के सामने रख दिया और चाय भरे प्याला को उठा उठाकर गाहका के सामने रखने लगी।

—कपडा लीजिएगा? कपडा। रगीन, डारिया।

कपडावाला आकर खडा हो गया।

—बडे रसिया हो जी? यह कपडा रखने का समय है! कपडावाले के पीछे से किसीने कहा, अरे हटो हटो, ऐ!

मालती का कलेजा धक से रह गया। आवाज बसत की थी। भारी गला। भारी ही नही, गभीर भी! मझले कद का आदमी—कपडावाले की पीठ के बोझे की तरफ सिर्फ बाल ही दिखाई दे रहा था। कपडावाला लबा है।

—सुनने हो?

कपडावाला हटकर खडा हो गया। बसत हल्का-हल्का हस रहा था। हसते हसते ही बोला चाय पीने आया हू। बसत के साथ स्कूल के कई लडके थे।

जाडे के दिन। फिर भी मालती के कपाल पर पसीना आ गया। हसकर बोली, आइए। 'आओ' नही कह सकी!

बसत दुकान के अदर आया। चारो ओर गौर करके बोला, शुरुआत अच्छी हुई है। लेकिन इस घर को पक्का बनाना होगा। बिजली लेनी पडेगी।

उसके बाद लडको से बोला, देश के बारे मे यहा हाट मे क्या बातचीत होगी भया। किसी और समय आना!

लडको ने कहा कहा मिलें आपसे? कब?

—कल तीसरे पहर। इस मालती का घर जानने हो? वही आना। मैं वही रहूगा।

मालती खुश हो उठी। अपनी कुर्सी उसकी ओर बढाकर बोली, बठिए।

—बैठ गया। जरा बढिया सा चाय बनाओ। अरे, सिगरेट तो है देखता हू। एक डिब्बी दो मुझे।

सिगरेट देकर मालती उधर गई। चपा ने चाय का पानी उतारा था। उसके पास जाकर बोली, हटो तुम मौसी, मैं बनाती हू।

चपा ने पूछा चाय दू ?

—नही। रहने दो।

बसत ने कहा—उसने बात सुन ली थी—चाय नही। उसकी निकाल दो थोडी-सी! अच्छी तरह से तल दो।

मालती को बडा अच्छा लग रहा था। बसत उसकी दुकान मे आया है! यानी उसने मेरे दुकान करने की बात का बुरा नहीं माना है! बडा अच्छा लग रहा था। सोचने लगी, चौनी थोडी-सी ज्यादा दे या नही।

—बसत! नसीब अच्छा है कि भेंट हो गई।

—क्या बात है खबर क्या है ?

—हाट करने आया हू।

मालती ने मुडकर देखा। अच्छे कपडो मे एक भला आदमी। वह अदर आया।

बसत ने कहा चाय दो कप बनाना।

उस आदमी ने कहा, चाय नही पीऊगा। तुमसे एक बात पूछनी है।

—कहिए ?

—तुमने यह जुलुम क्यो किया ?

—जुलुम मैं बहुत किया करता हू। आप कौन से जुल्म की कह रहे हैं। पहले यह कहिए।

—मेरे भाजे का ब्याह कायस्थ लडकी से क्यो करा दिया ? उसकी जात क्यो मार दी ? उसको तुम्हीने उसकाया!

—तैयार तो वह आप ही था। उसने कहा, उससे शादी करूगा। मैंने इसमे कोई बुराई नही देखी। कहा करो।

—कोई बुराई नहीं देखी ? ब्राह्मण का लड़का—कायस्थ की लड़की

टोककर वसंत ने कहा, नहीं। कोई बुराई नहीं।

—तुम हिन्दू सभा के

—मैं किसी सभा का नहीं हू। मेरी राय मेरी अपनी है। मैं स्वतंत्र हू। हिंदू-कायस्थ में शादी क्या, मैं इस ब्याह की ही जरूरत नहीं समझता। नियम के नाम पर समाज द्वारा लादा हुआ यह एक अनियम है। प्यार स्त्री-पुरुष में होता है। प्यार होने पर दोनों एक साथ रहेंगे। इसमें यह ब्याह की धूम धाम क्या है ?

—तुम बड़े भारी पाखंडी हो।

—आप भी ढोंगी हैं। धरम के सांड।

—वसंत !

—आप डांट किसे रहे हैं ?—वसंत ने कहा। वह हंसा। गजब है ! वसंत हंसते ही हंसते बोल रहा है। एक सिगरेट फूंक दी। दूसरी सुलगा रहा है। मालती चाय का प्याला हाथ में लिए ही बैठी है। समझ नहीं पा रही है, उठकर दे कि नहीं।

वसंत ने यह देखा। कहा, चाय दो मालती।

मालती ने चाय का प्याला बढ़ाकर उतार दिया।

वह आदमी अब तक चुप बैठा था। अब एकाएक बोल उठा, आप ? आप क्या करोगे ?

—मैं ? मुझे बहुत काम है मुखर्जी बाबू। ब्याह करने की फुरसत नहीं है। और साहस भी नहीं है। ब्याह मैं नहीं करूंगा। वसंत हंसा।

—ब्रह्मचारी बनोगे ? इधर तो यह सुना कि शराब शुरू कर दी है ?

—गलत नहीं सुना आपने ! शुरू की है ! रात को पीता हू सेहत के लिए। और ब्रह्मचारी रहूंगा यह भी नहीं कहता। यदि किसी से प्यार कर बैठूंगा तो कहूंगा आओ हम दोनों मिलकर घर बसाएं। बसाए तो ठीक है वरना जो बसाने को तैयार होगी उसीकी खोज करूंगा।

चाय की चुस्की लेकर बसन्त ने कहा, वाह क्या खूब चाय बनाई है! दो दो, मुखर्जी बाबू को एक प्याला दो। पीजिए पीकर मिजाज को ठंडा कीजिए।

वह आदमी बिना कुछ बोले ही उठकर चला गया। बसन्त हा हा हा हा हंस उठा चार-पांच ग्राहक दुकान में आ गए।

—हां भई, दो दो चाय और चाय।

वह सब बेंच पर बैठ गए। बसन्त उठ खड़ा हुआ।—तो चलता हूं। दाम नहीं लोगी?

मालती ने उदास होकर देखा। कहा नहीं।

बसंत हंसते हंसते दुकान से बाहर चला गया। सारी हाट पर नजर दौड़ाकर बोला ओ बड़ी भीड़ है आज तो!

चंपा ने कहा, होगी नहीं? तुम तो शहर में रहकर सब भूल गए हो। लीडर बन गए हो—

—क्यों, उससे क्या हुआ? क्या भूल गया हूं?

—आज काहे की हाट है बता सकते हो?

—ओ। हा हा। सरस्वती पूजा की हाट। इसीलिए स्कूल के लड़कों और कन्या विद्यालय की दीदियों की भीड़ है।

—सिर्फ उन्ही लोगों की? सरकारी दफ्तर के बाबुओं की। क्लब की। स्टेशन की। उस दिन हमलोगों ने कितनी गिनी थी मालती? दस न? एक हाट की—हां।

हाट में भी सरस्वती? यह कैसी—लाभ विद्या की?

—जो कह लो। तुमलोग पंडित हो। लीडर। सिर्फ सरस्वती पूजा ही नहीं है। दूसरे दिन शीतला षष्ठी। बासी भोजन।

—टिक्ली! बसंत ने पुकारा। टिक्ली ने उधर ताका।

बसंत ने कहा, जरा देख तो आ, मुर्गी कैसे बिक रही है? सरस्वती पूजा है। शीतला षष्ठी है। लोग मुर्गी तो खाएंगे नहीं। जा। मां सरस्वती की जय-जयकार हो।

—तुम खाओगे ?—चंपा ने अचरज के साथ पूछा।

—ओ, तुम्हें शायद नहीं मालूम ? मा सरस्वती मुर्गी खूब पसंद करती हैं ! नहीं तो लोग भला इतने विद्वान् हो !

चंपा हंस उठी। मालती ने कहा, गाहक क्या माग रहे हैं दानो मौसी।

एक साथ ही पांच गाहक आ पड़े। वाह ! खासी दुकान खुल गई है। साफ-सुथरी—

हाट में बड़े कौतुक से 'हरि बोल' बोल उठे लोग। उस भीड़ को ठेलकर एक-एक करके दो जने बाहर निकल आए।

—धर ! धर—धर।

—चल-चल।

—हां, चल।

—हां-हां चल। चल न।

—चल। मैं बाबा के आगे पैसे फेंक दूंगा। तुझे उठा लेना पड़ेगा।

—जरूर उठा लूंगा। तू बाबा के माथे पर ही रख देना।

—कोढ़ फूटेगा।

—तुम साले को जो हुआ है। हु, साले मेरे दोस्त बने हैं। हाट धूल चोट्टा कहीं का।

कहते कहते दुकान के सामने से ही वे आवाघान की ओर चले गए।

ठाकुर ने कहा दो मित्तन में झगड़ा हो गया। तरकारीवाला मित्तन पाल और बोर्डिंग में जो चावल देता है मित्तन पाल। अजीब है !

मालती भी उन्हें जानती है। बाप के समय से देखा है। बाप से, धरनी चाचा से उनके बारे में सुना है। कहते थे, दस साल पहले तो दोनों ने हाट घल का नाता जोड़ा था। दोनों ही मृत्युंजय पाल। तरकारीवाले मित्तन पाल की जगह-जमीन नहीं थी—खरीदकर तरकारी वेचने के लिए लाता था। बाजार में चावल खरीदता था। हमनाम होने की वजह से दोनों

मे मिताई हुई थी। गाढ़ी मिताई। चावल अधिक चावलवाला मित्तन कभी सेर भर, कभी डेढ़ सेर चावल खाने के लिए तरकारीवाले मित्तन को देता था।—खीर बनाकर खाना। गुनगुनवाला चावल है। तरकारीवाला मित्तन कभी-कभी उसे खीर खाने में मिला कर दिया करता। कभी अच्छा बैंगन देता भुरता बनाना हाटफूल! मकरान जमा है। पिछले दस साल, फिर ढाई साल—बारह साल से ज्यादा दिनों के बाद मित्रों में झगड़ा। ऐसा झगड़ा देखकर उसे भी अचरज हुआ।

मालती की दुकान का एक गाहक हठात् खड़ा हो गया। हाथ उठाकर चिल्ला उठा, अरे, य हां। चटर्जी यहा है। घो—घ।

अब कान में आया कि हाट के शोरगुल को दबाकर जो कुछ चीख उठ रही है उनमे से एक पुकार है चटर्जी चटर्जी—

बीच-बीच मे कारवाला पुकार रहा है—ऐ का र

कोई कह रहा है आलमपुर का हाट। (साग की डठल) रा त म हो गया।

कोई चिल्ला रहा है बैंगन।

—बद गोभी। उसीमें कोई चिल्ला रहा है चटर्जी।

दुकान के उस आदमी ने खड़े होकर हाथ उठा करके आवाज लगाई केवल जवाब से काम नही चलेगा। साक्षात् सामने होना चाहिए। हाट मे अभी सर ही सर नजर आ रहा है। उसमे औरतो के सादे घूघट छींट बना रहे हैं। कहीं-कहीं रगीन कपडा भी है। वह सब सादे कपड़े में घूघट जरा ठीक दिखाई नही पडता। चटर्जी—यह रहा! घोष!

घोष आकर खडा हो गया। बोला, खूब है। चाय पीने बैठ गए?

—बडी प्यास लगी थी। रात रहते ही निकला हूं। बैठो, एक प्याला चाय पियो। दो चाय खा ना। पेट ठंडा करके सौदा करेंगे।

—नई दुकान है!

—हा। बडी अच्छी दुकान है!

—दुकानवाली और भी अच्छी है!

—मालती की भवें सिकुड गइ।

चपा न कहा आपलोग अच्छी कह तो अच्छी हैं हम। नहीं तो बुरी।

मालती ने अब हसकर कहा आप सबके ही भरोसे तो यह दुकान है! आपलोग ठीक से यहा खाए जव ता!

—ता और दो दो चाप दो।

—दो मौसी।

—कहा घर है तुम्हारा? कहा से आई है? पूर्वी वगाल की रिफूजी हो शायद। तुम्ही लोग यह सब कर सकती हो। हमारे यहा की औरता में यह जुरत नही है।

—मैं यही की हू।

—यही की? किसकी लडकी हो?

—मेरे बाप का नाम था श्रीमत दास।

वह आदमी हा किए उसकी ओर ताकता रह गया। मालती ने समझा उसने उसे पहचाना। कमबख्त की हा कसी भद्दी! सामने के कई दात ही नहीं हैं। जो कई हैं, काले हा गए हैं। डर गया क्या? हमी आई। फिर भी बोली, श्रीमत दास यहा मनिहारी की दुकान करते थे। उनकी लडकी ने बासदेव दुबे को मछली वाली हसिया से काट डाला था—

—हा।

मुह स निकलकर थोडा सा चाप तश्तरी पर गिर गया। मालती ने दूसरी ओर मुह फेर लिया। सभी तरफ हाट। अभी हाट म मधुमाखी के छत्ते की भन भन-सी आवाज चल रही थी। वे दोनो क्या फुस फुसा रहे थे। ताकने को जी हो रहा था, पर ताक नही पा रही थी। ताकते ही हस पडेगी। बसत चला गया। वह वहा मुरगा का मोल भाव कर रहा है। पैकार उसे बार बार सलाम करके बात कर रहा है।

—पसा। पसा लो जी।

उन्ही दो जने म से एक था—चटर्जी। पाच रुपय का एक नोट फेंक दिया! कहा सामान तुम्हारा अच्छा है। चाप अच्छा बनाया है।

रही है।

टिक्ली ने पूछा क्यो री, चाप खाएगी ? खूब अच्छा है। खा।

मालती ने कहा, दो आने मे एक।

उस लडकी ने इस बात का जवाब नही दिया—सुना और सा करके घूम गई। हनहनाती हुई हाट की भीड म जा मिली।

मालती ने पुकारा सुन सुन!

मगर वह नही लौटी।

टिकली बोली इतना पसा वह कहा पाएगी ?

मालती ने पूछा पहचानती है तू ?

—हा। हाट म आती है।

—घर कहा है ?

—कोमरपुर। ससुराल मे नही रहती। बाप के घर चली आई है। पूछा चुमौना (दूसरा ब्याह) क्यो नही करती तो कहा मेरी इच्छा।

—बुरी लडकी है ?

—ऐसा तो नही लगता। कमा-कोडकर खाती है। हाट के दिन गोइठे लाती है, गाव-बाजार मे बेचती है।

मालती को अच्छा लगा। बोली उससे कहना न, हम गोइठे देगी। जा बुला ला उसे। एक चाप दूगी।

टिक्ली चली गई। ठाकुर ने कहा ऐ ऐ बत्तन धाकर जा। चपा ने कहा हाय राम, यह क्या कर रही हो मौसी! कितने लोग खाते हैं आखिर सब बराम्हन-कायथ ही तो नही हैं। बहुत जात के। अभी अभी एक मिया खा गया। मैं पहचानती हू उसे।

मालती हस उठी जल म मैंने जुबेदा बीबी का जूठा धोया है मौसी,

—सो जेहल म दोष नही है। वहा की बात और है। मालती ने कहा चाय-वाय की दुकान की बात और ही है मौसी। और फिर यह तो हाट है। भुवनपुर की हाट। यहा मुसलमान भी मन्नत मानकर ढेला बाधते हैं। पहले बड-पीपल के जगल म मुरगा छोड जाया करते थे।

—हरि बोल !

—टूटी कमरवाला एक भिखमगा आकर सामने बैठ गया। भिख-मगे हाट म आते हैं। कान, लगडे, कोढी। और बाऊल आते हैं। आलू की दुकान मे एक-दो आलू मिचवाला दो मिच, बगनवाला कभी कीडा लगा बगन दे देता है, प्याज देता है। जो बडी चोड़ा के व्यापारी हैं, वे लगडे-काने, कोढी को एक-एक पसा देने है। कुछ लोग भगा देते हैं। लेकिन हा, अलखल्ला वाले बाऊल या गेरुआवाली वरागी को नही दुत कारते। और वे हर हाट म आते भी नही।

टूटी कमरवाला भिखमगा बैठे-बठे चलता है। उसने फिर आवाज़ लगाई—हरि बोल !

मालती न बत्तन मलते मलते ही कहा, यह लगडा कब से आ गया ? कहा स आया ? वह बुडढा लगडा कहा गया ?

लगडा बोला मैं मेदिनीपुर से आया हू मा जी। तुमने दुकान की है। खूब बिक्री होगी तुम्हारी। खूब। उस बुढिया की दुकान मे कोई नही जाएगा, देख लेना। चपा ने उसे बैगन के दो पकौडे दिए—लो जाओ।

—कोई नई चीज़ बनाई है सुना। लोग कहते है बडी अच्छी है। वह नही दागी ?

मालती ने एक टूटा हुआ चाप उसके हाथ पर रख दिया। उस मुह मे डालकर बठे बैठे चलते हुए वह बढ गया।

टिकली लौट आइ बोलो न। नही मिली वह। एक आदमी ने बताया वह दौडती हुई भाग गई।

मालती को उस पुराने लगडे का याद आ रही थी। पिछली कई हाट म याद नही आई। आज इस लगडे को देखकर एकाएक याद आ गई। बोली, उस लगडे को क्या हो गया मौसी ?

—उसने देह रक्खी। पानी में डूबकर मर गया।

—पानी म डूबकर ?

– हां। रात मे एक सड़क मे गिर पड़ा था।

लगड़ा मर गया! जी गया बेचारा लेकिन भुवनपुर की हाट म उसकी जगह खाली नही रही। ठीक दूसरा आ गया।

धरनी चाचा दुकान के सामने से बोलता हुआ चला जा रहा था— भुवनपुर की हाट। आज लगी कल फाट। वाह बाबा दस पद्रह साल की प्रीत—गई! धरनी ठिठक कर खड़ा हो गया। हसकर बोला, वाह, तुम्हारी तो खूब चल रही है बिटिया।

मालती ने कहा चाय पीजिए न।

—ठीक है। पी ही लू तुमने दुकान की है! धरनी अदर गया। वहा बैठ एक ग्राहक ने कहा क्यो भई दास क्या हुआ ? चुक गया ? निबटा सक ?

—न। वह भी भला निबट सकता है। इस कदर धप्पड़ मुक्का के बाद ? दोनो ही थाने पर गए।

वही चावलवाला मित्तन और तरकारीवाला मित्तन। दोनो ही थाने पर गए।

धरनी ने कहा, कसूर दोनों ही का है। पहले ऐसा था कि यह उसके यहा छोड़कर तरकारी नही खरीदता था और वह इस छोड़कर चावल नही खरीदता था। अब तरकारीवाले मित्तन की हालत सुधर गई है। जमीन खरीदी है। धान होता है। चावल कम खरीदता है। चावल वाला मित्तन धीरे धीरे इससे उससे तरकारी खरीदने लगा। आज चावल वाला मित्तन लालचाद से पाच मन आलू खरीद रहा था। तरकारीवाले मित्तन को इसीका गुस्सा हुआ। जाकर कहा तुम तो अच्छे मन आदमी हो जी। थोड़ा धाना पैसा तुम्हारे लिए कुछ नही है! तुम बड़े आदमी हो। मेरे लिए लेकिन वह बहुत है। चावल मित्तन ने कहा काहे का पैसा ? [illegible]

धूल' भर लिए ले आया था। लोग इसका डेढ़ रुपया तक दे रहे थे, उसने नही दिया। मैं बोला तो यो ही दे दिया ? उसन कहा चौदह आने की खरीद है। उसी दाम पर दिया। लेकिन मैंने यह नही पूछा कि नकद कि उधार। अब तरकारी मित्तन कह रहा है कि दाम दिया नही है। चावल मित्तन कहता है कि दे दिया है। इसी बात पर विवाद हुआ। मुझे गवाह माना। जो जानता था मैंन कहा। काहडा लिया है दाम भी चौदह आना ठीक ही है। लेकिन नकद लिया कि उधार कसे बताऊ ? इसपर चावल मित्तन ने कहा कोढ फूटेगा। कहना था कि तरकारी मित्तन ने झट एक तमाचा जड दिया। कि चावल मित्तन ने एक मुक्का जमा दिया। आखिर दोनो थाने गए। अब लो दो फौजदारी मुकदमे में गवाही ! हाट का प्रेम यही होता है। सस्ता। दा, नही दिया कि बुरे आदमी हो गए। आज तुम सस्ता दो, दोस्त हो कल कोई और देगा, तो वही दोस्त। देने-लेने का व्यापार। एक बात कही जाती है भुवनपुर की हाट, आज जुड़ी कल फाट। यह हर हाट म होता है।

मालती बठी सुन रही थी। अच्छा ही लग रहा था। बात धरनी चाचा ने ठीक ही कही। गलत नही कहा। धरनी उठा। बोला, अच्छी चाय है बिटिया, लो। पसे लो।

—नही ! आपसे मैं पैसे नही ले सकती।

—नही-नही ऐसा नही होता बिटिया। नुकसान होगा। यह तुम्हारा व्यवसाय है।

—जिस व्यवसाय म चाचा से चाय का दाम लिया जाता है मैं वह व्यवसाय नहीं करती !

धरनीदास कुछ कहने जा रहा था, बोल नही पाया। जगतपुर के चटर्जी ने उसे ठेलकर हटाते हुए कहा मेरा वह आदमी कहा गया ? वही वही जो माटी के बत्तन सहेज रहा था।

मालती ने कोने की तरफ ताककर देखा। सच तो, वह आदमी नही है। मिट्टी के ग्लास और सकोरे वसे ही अधसजे पडे हैं। वह कहा गया ?

मालती ने कहा, सो तो नहीं जानती। कहीं गया होगा।

—कहां गया?

—यह कैसे जानूं कहिए? कहकर तो गया नहीं। इतनी भीड़ में देखा भी नहीं।

—लछमी, अरे ओ लछमी! लछमनवा? अजीब आफत है। रख पैठे उतार कर वहां रख।

ओरा-वदी पठा। डालकर रखने लगा।

मौसी ने कहा, या। एक कोहड़े के लिए। और यहां इतने कोहड़े फेंके चल रहे हैं। एं!

चंपा को अफसोस हो रहा था एक कोहड़े के लिए दो मितनों में इतना झगड़ा हो गया!

मालती हंसी। चंपा मौसी खूब है!

बसंत फिर आया। पीछे-पीछे हाथ में एक जलती बत्ती झुलाए एक आदमी। बसंत ने कहा ले इसे रख ले। जलाकर ही लाया। रख दे रे।

मालती का चेहरा एक बार दप से दमक उठा। पर दूसरे ही क्षण वह दमक नहीं रही। पूछा कहां से ले आया?

—ले आया। इतना जानने की तुझे क्या पड़ी है? मिली। दुकान पर लटका दे। सुना पिछली हाट में श्रीमती ने यही बत्ती जलाई थी। रख। बसंत हंसा।

बसंत दुकान में आकर बैठा। कहा, और एक प्याला चाय दे।

चंपा ने कहा बत्ती तो नई लगती है बसंत सोना!

—हां, नई है।

मालती ने चाय का प्याला लाकर सामने रख दिया। सवाल उसके जी में जगा था लेकिन दुकान पर कई ग्राहक बैठे हैं। पूछ नहीं सकी।

बत्ती को झुलाने के लिए। बसंत तार भी ले आया था। ठाकुर और टिकली—बत्ती देखकर सभी खुश हो गए। ठाकुर ने तार के सहारे बत्ती को झुलाकर कहा, वाह!

चाय पीकर वसत जाने लगा, तो मालती बोली, बसत-दा। बसत पलटकर खडा हो गया।

—कितनी कीमत ली इस वत्ती की ?

—क्या ?

—आखिर देनी पडेगी न।

बसत उसके मुह की ओर ताकने लगा। फिर बोला, वह वत्ती मैंने तुझे दी।

—दी ?

—हा।

वह रुका नही चला गया। मालती वत्ती को देखती रह गई। दिन का प्रकाश डूब गया, लेकिन रात का अधेरा अभी गहरा नही हुआ। वत्ती की जोत अभी फीकी और निस्तेज थी। मालती के मन मे कैसी तो एक बेचनी होने लगी। बसत मानो दिन की रोशनी मे उस बत्ती की जोत-सा एकाएक निष्प्रभ हो गया। आज हाट की पहली वेला मे वसत ने उस आदमी से जो सब बातें कहीं वही बातें उसके मन म चक्कर काट रही थी। बसत जसे उसका अचीन्हा हो गया है। समझ नही पा रही है। जुबदा बीबी कहती थी—अरी ऐ कच्ची छोरी सुन ले। सुन ले। तेरे काम आएगी

कि सामने श्रीमती आकर खडी हो गई। काली और मोटी श्रीमती क पहनावे मे हाथीपजा साडी, कलाई मे सोने की दो बालिया सर के बाल खीचकर बाधे हुए। छोटा-सा जूडा। कान मे दो फूल नाक म कील, मुह म पान। दोना हाथ कमर पर रखकर श्रीमती बडी अदा के साथ खडी हुइ। मालती न पूछा, बात क्या है फूफा ?

कटे-कटे शब्दा मे श्रीमती ने कहा बात क्या होगी ? देखने के लिए आ गई।

—क्या देखने के लिए ?

—यह वत्ती।

चपा ने कहा, नई आई है।

—हूं। बसंत ठाकुर दे गया। सुना। वही देखने आई। यह बत्ती तो देखी है लेकिन प्रेम मार्का बत्ती की रोशनी कैसी दिखती है, यही देखने आई।

मालती ने कहा, तुम्हारी वह बत्ती अब शायद विरह मार्का हो गई है फूआ।

—क्या ? क्या बोली रे बेशरम लड़की

—जो कहा, सो तुमने सुना।

—मालती !—चिल्ला उठी श्रीमती।

मालती ने झट एक छकनी उठा ली। कहा, सुनो फूआ अब अगर और ज्यादा चिल्लाई तो इसीसे तुम्हारा मुह चूर डालूगी।

श्रीमती डर से पीछे हट गई। मालती चिल्लाकर बोली—हा, जलाई है। प्रेम मार्का बत्ती ही जलाई है। खूब किया है। मैं बेशरम हू, जेल खट चुकी हू। तुम किरया करो।

चपा ने आकर उसे जकड लिया मौसी ! मालती !

मालती मानो हठात पागल हो उठी। वह थर थर काप रही थी। देखते ही देखते भीड़ लग गई। हाट के लोग, जो सामने के टूटे फूटे रास्ते से जा रहे थे, ठिठक गए। जो दूर मे थे, दौडकर आ गए। और भी लोग आने लगे। श्रीमती भीड म दुबककर अपनी दुकान म चली गई। बाबाथान म घटा बज उठा। अधेरा धीरे धीरे बढने लगा। और पेट्रोमैक्स की रोशनी। धीरे धीरे उज्ज्वल प्रकाश होकर झलमलाने लगी।

अब मानो मालती को होश आया। हाथ की छकनी फेंककर उसने कहा दुकान मे धूप दो मौसी। सामने भीड मत लगाइए। हटिए। अब तो कुछ नहीं है।—वह अपनी कुर्सी पर बठ गई।

भीड छटने लगी। किसी एक ने कहा, ले भया, आज हाट म नारद आया है।

जगतपुर का चटर्जी दुकान म आया। उसके साथ घोष। घोष ही

नहा और भी तीन आदमी। उसम चटर्जी ने कहा, ले, सारा सामान गाटी पर रख। पहले मिट्टी के बत्तन उठा ले भैया। दुकान को छेंके हुए है। ले। हा हम चाय दीजिए। कुछ चॉप भूनकर ठाग म दात दीजिए।

चटर्जी बठ गया। धाप न कहा ऐसना बातल टूट न जाए। फिर तो चाप लेना ही बेकार हा जाएगा।

मालती ने अपने हाथ से उनको चाय ला दी। अब वह शात हो गई थी। पूछा मिथाटा—चौरी ?

—दो-चार अड़े दो। ज्यादा नहीं। हा ठीक म गानेवाना के लिए कुछ मिठाई द दो।

मालती न बर्तन उठानेवाल की तरफ मुड़कर ताका। उस उस छोकर की याद आ गई। खूबसूरत उस छोरे की। अचानक चला कहा गया था वह ? उसने पूछा जी वह मिला ? आपलोगो का वह लछमनवा ?

चटर्जी हस उठा—उसकी मत कहिए। कक्दन की ससुराल पास ही है। यहा जान की वह यह जरूर आया था। कहा था, हाट का काम खत्म करके ससुराल जाऊगा। कल आऊगा। मगर कक्दन को धीरज नहीं रहा। चार ही बजे चपत हो गया।

जाग का दल'शब्द करक वातावरण का घटा चुप हो गया। बहुता के कठ की ध्वनि उठी जय बाबा भुवनेश्वर !

मन की वाछा पूण करा बाबा ! हाटवाले खड़े हो-होकर प्रणाम करने लग।

घर में सामान सजोकर बदन धोकर चंपा मालती के इंतजार में बैठी थी। मालती दुकान बंद करके बाबाथान में प्रणाम करके आ रही है। चंपा ने उसके साथ रहना चाहा था। एक युवती को बाबाथान और उजडी हाट में रात को अकेली कैसे छोड़ दे! लेकिन मालती हठात् बिगड़ उठी थी। आज जाने उसे क्या हो गया था। बोली—उस रात तो मेरे बगल में खडी थी तुम। तो क्या वासदेव दुबे की गरदन उतारने से रोक पाई थी? तुम मुझे उखाडो मत मौसी। घर जाओ। तुम्हारे रहने से मेरा नही चलेगा। जाओ।

करुण होकर उसकी ओर ताकते हुए चंपा ने कहा तुम आज ऐसी क्यों हो गई हो माला?

मालती ने कहा तुम्हारे पैरो पडती हू मौसी! तुम जाओ।

और फिर तुरन्त बोली टिकली तो है ही! वह मुझे घर तक पहुचा आएगी।

—टिकली! माला

—समझ गई मौसी। टिकली साथ रहेगी तो लोग मुझे ज्यादा बुरा कहेंगे। कह—कहने दो। लोग जो कह मैं वही हू। तुम जाओ चिंता न करो।

सो चपा अकेली ही घर लौटी। बदन धोया। कपडे बदले और इतजार कर रही है। मालती आ जाए, तो वह गोराग को शयन कराके जप करेगी। चूल्हे म उसने लक्डी-काठी डाल दी है। धुआ हो रहा है। आग सुलगे तो भात चढा देगी। ओसार पर पेट्रोमेक्स जल रही है। मालती आकर बुताएगी।

—वैरागी बहू! मालती!

पुकार सुनकर चपा चौकी। वसत ने पुकारा। वसत आया है। मालती के लिए वह शकित और उत्कठित हो उठी। वसत को यह मालूम होगा कि मालती अभी भी हाट ही मे अकेली घूम रही है, घर नही आई तो वह नाराज होगा। जरूर रज होगा। मद नाराज होते हैं। क्या करे वह? जिद्दी लडकी ने एक बार तो अपना सर्वनाश किया है फिर करेगी।

—मालती! मालती!

लाचार चपा ने दरवाजा खोल दिया।

वसत न कहा इसी बीच सो भी गई थी क्या?

—सो जाऊगी। गरीब का ऐसा नसीब! तुमने लीडर होकर यह बात कसे कही? लो, बठो। उसन एक आसन डाल दिया।

वसत बठा। पूछा, मालती कहा है?

—वह! —जरा रुककर सोच करके बोली—आज उसे क्या जो हो गया है वही जानती है। आज तो वह पागल हो गई! ओह क्या रूप धारण किया! रण रगिनी हो जसे।

—श्रीमती के साथ न?

—तुमने सुना?

—सुना नही? सुना। हाट का हल्ला है!

—लडकी बडी तेजवाली है। क्या जो है उसके भाग म—

—भाग म अच्छी ही है। सोचा मत। सुनकर मुझे कितनी खुशी हुई क्या कहू। जभी तो मैं आया।

—ऐं ? सचमुच गुम हुए हो ?

—सचमुच।

जरा चुप रहकर चपा बोली तुम उस प्यार करते हो वसत सोना वह भी तुम्हे प्यार करती है। मेरी हाट म उसने क्या कहा, जानते हो ? हा हा यह बत्ती मेरी प्रेम मार्का बत्ती है। तो । फिर जरा रुक कर बोली—तुम उससे ब्याह कर लो वसत ! जात-पात तो तुम मानते नही हो। लीडर भी हो। देश म तुम्हारा नाम होगा। धरम भी होगा।

वसत हसा। बोला जरूरत क्या है ? कहा तो है। मालती मगर सचमुच ही प्यार करती है तो तुमलोगो की राधा जसी कलकिनी ही होगी। सिर माखो उठा लेगी।

—कहते क्या हो वसत ? आदमी की बेटी कही राधा हो सकती है ?

—हो सकती है। हो सके तो हो सकती है।

ऐन इसी वक्त मालती बाहरी दरवाजे स अदर कदम रखकर ठिठक गई। कहा, वसत दा ?

—हा रे। आ गई तू ? अच्छा ही हुआ। उसीसे पूछ देखो वष्णव वहू उसीसे पूछ देखो।

—क्या ? मालती राधा हो सकती है या नही ?

—हां। सुन लिया है तूने ? बाहर खडी सुन रही थी, क्यो ?

—सुन रही थी।

—तो फिर मौसी को बता दे। तूने हाट में श्रीमती से जो कहा, इसे यकीन नही हुआ ?

मालती ने उसके मुह की ओर ताकते हुए कहा बिगड जाने से मुझे होश-हवास नहीं रहता है वसत दा। बात मैंने बिगडकर ही कही थी। मौसी ने ठीक ही कहा। किसी बाप की बेटी राधा हो सकती है या नहीं यह मैं नही जानती, मगर मुझस तो रोना धोना नही चलेगा। आज उस बेला भी, जब बहुत दिनो के बाद तुमसे भेंट हुई मेरा दिमाग

सही नही था। क्या कहते क्या कह गई ! जुबेदा बीबी का कहा याद नही आया। जुबेदा बीबी ने कहा था, किताब की, गीत की बात बिलकुल झूठ है रे मालती। ये मद जो हैं, सो शैतान, बदमाश की जात हैं। ये लोग नरकोयल की तरह बोलते बहुत खूब हैं, पर बसेरा नही बाधते। दो दिन पास पास रहते हैं, साथ साथ उडते हैं। उसके बाद छोडकर चल देते हैं। स्त्री कोयल रोती नही है। कौए के घोसले मे अडे दे देती है, बस। लेकिन मनुष्या मे स्त्रिया ऐसा नही कर सकती। रोती हैं ! उसने कहा था, मालती, कोई स्त्री शादी न करके अगर मुहब्बत करती है, तो या तो वह गले म फासी लगाए, नही तो

मालती चुप हो गई।

बसत उसकी ओर ताकता ही रह गया था। विचित्र चरित्र बसत इस जमाने की नई रोशनी का आदमी—मालती की बातो से उसे कौतुक का अनुभव हुआ। मालती के चुप होते ही बोला, नही तो क्या ?

—बुरी बात है। जेल म जबान रुकती नही थी, बोल पडती थी। यहा जीभ रुक जाती है। खुद को ही अचरज लग रहा है।

—समझ गया। जुबेदा बीबी ने कहा होगा, नही तो वेश्या होती है। लेकिन मैंने तो वैसी मुहब्बत की बात नही कही है। मेरी इच्छा है तुम आज के युग की एक अनोखी स्त्री बनोगी। पढेगी। सदा दुकान क्या करेगी ? पढ लिखकर मेरे साथ काम करेगी ! आजकल कितनी ही स्त्रिया लीडर बन रही हैं। शादी नही करती, जिदगी भर देश की खिदमत करती हैं।

—नही।—अजीब-सी हसी हसकर मालती ने कहा नही। वह मुझसे नही होगा। ख्वाहिश भी नही है। तुम बल्कि दूसरी चेली ढूढो।

—तू कर सकती थी मालती।

मालती बोली, नही। नही कर सकती। बडा सर दुख रहा है बसत दा। मैं सोने जा रही हू। जाते समय अपनी बत्ती ले जाना।

दूसरे दिन चपा और मालती ने सवेरे दुकान खोली। चूल्हे पर चाय

का पानी चढ़ाकर बठते न बैठते गाहक आया। श्रीमती की दुकान अभी खुली नही थी। ठाकुर अभी तक आया नहीं। टिक्की बठी था। वह बोली ठाकुर शायद नही आएगा दीदी।

—नहीं आएगा? किसने कहा?

—कल ठाकुर कह रहा था।

—क्या कह रहा था?

—कह रहा था इतनी मेहनत है। मुझसे न होगा। तनखा कम है।

—तनखा तो मैंने नहीं तय की है। कुडू बाबू ने ठीक की थी।

—सो मैं नहीं जानती।

—तू जरा देख तो आ।

टिक्की गई। ठाकुर जरा दूर पर गधेश्वरी बाजार के पास रहता है। ब्राह्मण है। इस बुढापे म गलती कर बठा है। छोटी जात की एक स्त्री के साथ घर गिरस्ती करता है। रसोई अच्छी बनाता है। कभी दे बाबुओं की कलकत्ते की गद्दी म काम करता था। वहा भी एक बुरी औरत कि चगुल मे फस गया। बड़े बड़े कष्ट से उससे पिड छुडाकर भागा तो यहा आकर भी वही हरकत करके जात से अलग हो गया है। कोई भी उसे अपने यहा नही रखता। सामाजिक भोज भात म भी उसकी गुजाइश नहीं। अब तक यहा वहा दावत-बावन म पकाता चुराता फिरता था। और कुडू की दुकान मे बठा रहता था। कुडू का प्रिय पात्र है। कुडू गाजा पीता है। गाजा यही ठाकुर उसे बनाकर देता। मालती की दुकान खोलने के बाद उसने उसे यहा भेज दिया है। समाज म न चले, घर मे न चले चाप चाय की दुकान मे कोई चर्चा न होगी, यह कुडू को मालूम है। आदमी बुरा नही है। अच्छा ही है। अचानक उसके दिमाग मे तनखा का कीडा हिला है। इस जमाने का धरम ही यही है।

इधर गाहक आया। दरअसल ये लोग बलगाडीवाले हैं। रात को गाडिया लिए चल रहे थे। यहा गाडी खोलकर आराम कर रहे हैं। अभी चाय-चूम पी पा कर फिर चल देंगे। कि यहीं गधेश्वरी बाजार मे

सरौद फरोख्त करेंगे। हाट में गाडी रख कर सो गए। दिन भर यहा हाट-बाजार करके रवाना हो जाएगे। हो सकता है, रजिस्ट्री आफिस म आए हों। कोई पट्टा-कबाला हो। घर दूर हो। रात ही आ पहुचे हैं कि पहली ही बेला म काम-काज करके लौट जाएगे।

भुवनपुर का रजिस्ट्री आफिस हाट के सामने ही है। सडक के उस ओर—ठीक सडक पर। सच पूछिए तो रजिस्ट्री आफिस भी हाट मे ही शामिल है। फक सिर्फ लाइन का है। हाट के उस तरफ रास्ते के ऊपर पाच-सात कमरे म रजिस्ट्री आफिस के दलाल लोग काम करते हैं। शिनाख्त करते हैं। हा दस्तावेज पर गणेशाय नम की जगह श्री भुवनेश्वर सहाय लिखते हैं। बहुत लोग बाबायान में जाते हैं। प्रणाम करके कहते हैं बाबा साक्षी हैं, राजी-खुशी बेचा है, बाल बच्चो के साथ भोग करो। कोई कहता बाबा की किरपा स बिक्री के दाम म ही तुम्हारा काम पूरा हो। दुख हो, तो दूर हो। अभाव हो तो मिटे। उसके बाद प्रसादी खाकर सरोवर म पानी पीकर घर जाते हैं। आजकल एक कुआ भी खुदा है। सरोवर का पानी गदा हो जाता है। वह पानी कोई पीता नही लेकिन उसका स्पर्श करता है।

मालती ने अपने से चाय बनाई। चार गाहक थ। चार प्याला चाय देकर बोली बिस्कुट दू ? अच्छा बिस्कुट है।

—बिस्कुट ? खर चार-चार दे दो, सिंघाडा नही बना है ?

—नहीं। बासी सिंघाडे गरम करके हम गाहको को नही देते हैं। बस, अब बनेगा। घटे भर म हो जाएगा।

वह मौसी के साथ जुट गई। निमकी सिंघाडे की बिक्री सवेरे ही होती है। जल्दी-जल्दी बना लेना है। तबीयत ठीक नही है। कल रात नींद नहीं आई। भोर भोर तक जगी ही रही प्राय। तद्रा-सी आई थी जरा मगर सहज तद्रा। बिखरे बिखरे सपने आत रहे।

कल रात बसत को वे बातें कहकर मालती कमरे का दरवाजा बन्द करके सो रही थी आकर। मन कैसा तो हो गया था। अभी अभी गुस्सा

हुआ था, फिर तुरन्त उसका मन मानो रुलाई से टूट पड़ा था। फिर तुरन्त मन दुकान की ओर जा लगता था। वह रंजिश और रुलाई दोनों को भाड़ फेंकना चाह रही थी। थोड़ी देर में बाद ही भाव मन उन्मन हो उठता था।

—तुम आप ही फुट पड़ी!

मालती भट्टे में पानी डालकर गम्भीर का भगना तैयार कर रही थी। उसने नजर उठाकर देखा। ठाकुर बोल रहा था। ठाकुर आ गया। उसकी भौंह सिकुड़ गई! मानो मन की कमजोरी समस्या अभी भी है। रहता है। एकाएक गुस्सा हो आने लगा। भवें तिकोड़े ही वह बोली क्या करती गाहक आए। टिक्की ने कहा, तुम आज नहीं आओगे।

तनखा ?

रुक गई। ख्याल हो आया गाहकों के सामने तनखा के लिए हुज्जत न करना ही ठीक है।

चपा ने कहा छोड़ो भी माला। ये बातें फिर होगी। लो, काम शुरू कर दो भया। इतनी देर करके!

ठाकुर ने कुरता उतारकर रस्सी की अलगनी पर डालते हुए कहा, तनखा की बात मैंने नहीं कही है। टिक्की ने गलत सुना। कल रात से ही बुखार-सा लग रहा है। इसीलिए कहा, कल तो मंगल है। हाट नहा है। कल शायद। खर—छोड़ दो।

मालती मदा मलना छोड़कर अपनी जगह पर आ बैठी। उसका मन फिर उदास हो उठा। बसंत ने कल रात उसे उसके याद भी पुकारा था।

—मालती! सुनो?

उसने जवाब दिया नहीं बसंत दा। वह सब बातें मैं नहीं सुनती। लीडर मैं नहीं हूंगी। तुम्हारा वह प्यार मुझे गवारा न होगा। मैं एक मामूली स्त्री हूं। तिस पर जेल हो आई हूं। तुम बहुत बड़े लीडर हो। तुम लौट जाओ। अपनी बत्ती ले जाओ। कहा तो, मेरी तबीयत ठीक

रहा है।

इसके बाद वसंत चला गया था। इसके कुछ ही क्षण बाद चंपा ने उसे आवाज़ दी थी।

—कितने पैसे हो गए ?

—चार प्याला चाय। सोलह बिस्कुट। आठ आने।

—बिस्कुट पैसे में एक ?

—हां।

एक रुपये का नोट बढ़ाकर उस आदमी ने कहा दो बंडल बीड़ी। कुल कीमत काटकर बाकी पैसे मालती ने रख दिए। वह बोला—सौंफ-सुपारी, कुछ नहीं है ?

—अरे हां।—सुपारीवाली तश्तरी निकालना भूल गई थी मालती। अभी भी मन उसका कल की ही बातों में घूम रहा था। बात वह कल की ही नहीं आज की भी बात है। और सिर्फ आज की ही क्यों ? आनेवाले कल की भी है। परसों की भी। जलखान के पहले धक्के को संभालने के बाद से वह वसंत की ही बात सोचती रही थी। बीच-बीच में जुबैदा उससे कहा करती, जेल से बाहर जाने के बाद खूब होशियारी से चलना मालती। खबरदार—बहुतेरे लोग फुसलाएंगे तुझे। खूब सख्त बन जाना। शादी करनी हो तो आगे-पीछे सोचकर करना। सही मानो में शादी। नकली न हो जाए। और अगर देह बेचने की ही नौबत आ जाए तो गांव में मत रहना शहर चली जाना। प्रेम के नाम पर न भूलना। खबरदार। वह हंसती थी। कहती थी मेरी शादी तो हुई हवाई है। वह भी जेल गया हुआ आदमी है। जुबैदा बीबी ने उसकी कहानी सुनी थी। जानती थी। संदेह से वह बोली वही जिसने एक दिन खेतों के रास्ते से जाते हुए तुझे छाती से लगा लिया था ? कहा कि छोकरा बिरहमन है। लेक्चर देना है। जरा रुककर उसने हंसते हुए कहा तेरा जेल और उसका जेल एक नहीं है मालती। वह जेल से बाहर निकलेगा तो

उसका काला रंग भी गोरा हो जाएगा। इज्जत बढ़ेगी। वह तुमसे शादी करेगा, ऐसा मुझे नहीं लगता। मालती को रंजिश होती। कहती, तुम उसे जानती नहीं हो जुवेदा दीदी। जुवेदा ने इसपर कोई जवाब नहीं दिया। रात को लेटी लेटी वह कल्पना करती थी, बसंत उसे देखते ही दोनों हाथ बढ़ाकर अपनी छाती में खींच लेगा। कहेगा मैं तेरे इन्तज़ार में बैठा हूं। चल शहर चलकर रजिस्ट्री कर आएं। फिर कद-खाने के मोटे सींखचों और ऊंची दीवारों के अंदर वह कितनी कल्पनाएं करती थी। ब्याह के बाद क्या करेगी? इरादा तो लीडरी ही करने का था। लेकिन उस कल्पना से अजीब ढंग से जुवेदा और नीहार दीदी की नाना कल्पनाओं की कहानी आ मिलती। आधा बंधन, पाप-पुण्य—न्याय अन्याय सब कुछ को तोड़ फोड़कर चूर चूर किया हुआ कामना-वासना का चाहे राज्य कहिए चाहे संसार।

जुवेदा बीवी सबसे समझदार थी। सबसे ज्यादा जाननेवाली। कानून जानती थी आदमी के मन को समझती थी। पंडित जैसा विचार करती थी। वकील-सा तर्क। बसंत से भी अच्छा। उस बार वह जो एक बड़े आदमी की दूसरी बीवी अपनी सौत के लड़के को जहर देकर जेल आई थी उसी बार जुवेदा बीवी ने उससे कहा था। शाम के बाद जुवेदा बीवी की किस्से की महफिल जमी थी—बुरी-बुरी कहानियां कह रही थी। वह बड़े आदमी की स्त्री दूर बैठी सुन रही थी। वह अचानक उठकर आई और कहा—कैसी हो जी तुम? ऐसे ऐसे किस्से सुना रही हो?

उसके मुंह की तरफ ताककर जुवेदा ज़रा देर के लिए अवाक् रह गई थी। उसके बाद उसकी आंखें जल उठी थीं।—तुमने कभी नहीं सोचा? नहीं? मन ही मन?

—नहीं।

—झूठ। दूसरी बीवी, जो सौत के बेटे को जहर खिलाकर मारती है वह ऐसा नहीं सोचती? हाय री मरी सती! पुण्यवती! तू जप करती

है। तेरे इष्ट देवता हैं—उन्हें गवाह रखकर बोल कि नहीं सोचा ?

—नहीं-नहीं नहा। वह मेरी तरफ बुरी नजर से ताकता था इसीलिए

झूठ। झूठ। तू चाहती होगी, वह नहीं चाहता होगा। शायद हा कि बाप से कहने की धमकी दी हो, इसीलिए तूने उसे जहर खिलाकर मारा है। देख, मैंने अपने खाविंद को मारा है इसलिए कि दूसरे से मुहब्बत करती थी। तू तो मुझसे भी पापी है। अपने प्रेमी को नहीं पाया, इसलिए जहर देकर मार डाला।

वह औरत कसी तो हो गई। एक कोने में अपनी खाट पर औंधी पड़कर लेट गई।

जुबेदा ने कहा, पाप ! पुण्य ! काहे का पाप-पुण्य ! उसके बाद उसने आदमी के मन के चेहरे के बारे में जो बताया, उसे सुनकर सभी सिहर उठी थीं या नहीं, मालती यह नहीं जानती। लेकिन सबने चुप चाप सुना था, बहुतेरी मुसकरा रही थीं पर मालती सिहर उठी थी। अवाक भी हुई थी। जैसे जुबेदा सत्य ही कह रही हो।

बाद में उसने जुबेदा से वह बात कही थी। एकांत में शांत अवसर पर। जुबेदा हँसी थी। कहा था, तेरा मन बड़ा कोमल है रे मालती। बड़ी शिशु है तू। आदमी का मन सुख के ऊपर नहीं बचता। सुख के लिए पाप पुण्य का विचार वह नहीं करता। विचार नहीं करना चाहता। यही दुनिया का नियम है। मनुष्य ने पाप-पुण्य को चुना है बनाया है। दुःख सहकर पुण्य करके रोते हुए जिन्हें सुख मिलता है उन्हें सलाम। पाप करके लाज से भय से जहर खाती हैं फांसी लगाती हैं और फिर पुण्य करते के दुःख को न सह पाकर भी फांसी लगाती हैं जहर खाती हैं। यह भी जैसा झूठ है वह भी वैसा ही झूठ है। देख ले, मैंने अपने सुख के लिए अपने पति को जहर दिया है। बड़े आदमी की यह बीवी और भी पापी है। तू पापी नहीं है। अपने आप को बचाने के लिए अचानक खून कर बैठी। मैं अगर जज होती तो तुझे छोड़ देती।

तू फिर भी दागी हो गई। बाहर जाने में बाद इतना ही याद रखना कि किसी को दुख मत देना। दुख करके सुख की भी तलाश मत करना। और सुख के लिए पागल होकर सुख की भी लाज मत करना।

ढाई साल मं गत तक वामना को त्याग लेकर वह लौटी थी। रोएं रोएं म वासना। लेकिन यह अपार आशा भा की उस दिन बसत न बेखबर हो हाकर उसका इतजार किया है। सारा कुछ अजीब तरह से गोलमाल हो गया लेकिन। छूटने के बाद सात आठ दिन तक—जब तक बसत नही आया था उसकी आशा उसका सपना ठीक था जेल-खाने के हवा-पानी से तयार हुए वासना के राज्य स भी कोई विरोध नहीं था। भुवनपुर म कदम रखकर वह चकित हो गई थी कुछ भी की हो नही जाता। सब बदल गया है। ठीक बदल नही गया है सब भक्मक, झलमल हो उठा है। उसकी भी उम्मीद और चमक उठी थी। मौसी ने कहा था बसत भी चमक गया है। कल सवेरे भी जब बसत ने ब्याह न करके प्यार की बात कही थी तो उसने नशे म उसपर हामी भरी थी। लेकिन कल तीसरे पहर हाट म उसने हसत हसते जो बातें उस आदमी से कही उससे उसे एक आतंक हो गया। जो आशा उसकी चमक उठी थी वह स्याह हो गइ। शायद हो कि बसत देवता हो, शायद हो कि वह बहुत बुरा हो। दोनो ही दृष्टि स हाथ बढाना उसकी पहुच से बाहर है।

— ब्याह मैं नही करूगा। इस बात पर खेत वाली उस दिन की बात याद आ गई।— मैं तुमको प्यार करता हू। जात-पात मैं नहीं मानता। बाप के मरते ही मैं तुमसे ब्याह करूगा।'

खच से कलेजे म जसे काटा चुभ गया।

वासदेव दुबे पर हसिए का वार करके उसके लहूलुहान शरीर को देखकर जैसा एक निष्ठुर आघात लगा था वसा ही आघात लगा। कदखाने मे जाते हुए जसा डर लगा था, वसा ही डर लगा। अदालत म फसला सुनते वक्त वह जसी निढाल हो गई थी वसी ही निढाल हो गई।

इसीलिए हाट टूटने के बाद रात को दुकान बद करके मौसी का घर भजकर वह वावाथान के उस पीपल की ओर गई थी, जिसपर कूच की लतर लतराई थी। एक टार्च ले गई थी। एक झझरा। झझरे स बाये हुए ढले को तोड़-तोडकर फेंकन के बाद ही वह घर लौटी थी।

भुवनपुर की हाट मे जाने कितनो का बाधा ढेला गिर पडता है। बाबा कहते हैं, मनोकामना पूरी नही होगी। ढेला माटी मे गिरकर धूल मे मिल जाता है। लाभ की उम्मीद मे आकर कितने लोग नुक-सान उठाकर लौट जाते हैं। उसका भी ढेला जाए!

घर गई तो बसत को लोटा दने के बाद भी वह निश्चित नही हो सकी। रोने की इच्छा हो रही थी रोई नही। कभी-कभी बेहद गुस्सा आ रहा था, उसने उसको भी सभाल लिया। कभी जी मे आ रहा था मर जाए। परतु वह भी मानो नही हो सकता। ठिठकना पडता। डर लगता।

मौसी ने आकर पुकारा। दरवाजा खोलकर वह फिर लेट रही आकर। मौसी उसके सिरहाने बठ गई। सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, माला!

मालती ने जवाब नहीं दिया।

मौसी बोली लिखना पढना सीखकर—बसत ने जो कहा—लीडर नही बन सकोगी?

—नहीं!

फिर कुछ देर के बाद मौसी ने कहा इससे तो हम दोना नवद्वीप चल चलें मौसी। मौसी और बहिनबेटी, मा-बेटी

मालती ने बीच ही मे टोककर कहा नही!

मौसी न फिर कुछ देर के बाद कहा तो क्या करोगी?

—जो कर रही हू। भुवनपुर की हाट मे खरीद-बेची करके ही दिन कट जाएगे मौसी!

—सारी जिंदगी ?

—हां, मौसी। खूब मुनाफा करूंगी। पैसा जमा करूंगी। हसूंगी खेलूंगी। कट जाएगा।

मौसी ने फिर कुछ नहीं कहा।

मालती ने पूछा बत्ती बह से गया।

—हूं।

—चलो अब खा लें। भूख लगी है। बस एक बत्ती खरीदूगी।

निमकी सिंघाड़ा निकालने की गंध आई। डालडा की गंध। आवाज। कड़ाही में डालडा उबल रहा था।

दो आदमी हाट की चौहद्दी में आए। अभी भी उस ओर की दुकानें नहीं खुली थीं। अभी बहुत सवेरा है। हाट खो-खो कर रही है। जमादार बैठा झौंक रहा है। हाट के दिन वे भरपेट पीते हैं। गुड़ की दुकान में झाड़ू लग रहा था। अजीब है आज श्रीमती की दुकान अभी तक खुली नहीं है। कुछ हनुमान गुड़ की छत पर उछल-कूद रहे थे खेल रहे थे। पेड़ पर बैठा नर रह रहकर चिल्ला उठता था।

मौसी ने कहा टूलूचौधरी आ रहा है। साथ का मुवक्किल भारी भरकम लग रहा है। तुम इसे जानते हो ठाकुर ?

ठाकुर ने देखकर कहा, नहीं। बाहर का आदमी है।

—भारी भरकम लगता है न ?

—हां !

—इधर ही आ रहा है।

—चाय पिएगा। वही तो, उंगली दिखा रहा है। टिक्की, बेंच को पोछ दे। ठीक से।

मालती ने गौर किया। हां, टूलूचौधरी ही तो है। यहां आने के बाद से मालती ने उसे नहीं देखा। टूलूचौधरी रजिस्ट्री आफिस में दस्तावेज लिखता है। यहां की जगह जमीन की खबर खतियान दाग नंबर— सब उसके हाथ में है। मामले मुकदमे की पैरवी भी करता है। उमर

काफी हो गई है। बसत उसे टूनू पडा कहता था। आज के युग का असली पडा। जियेश्वर का पडा! रजिस्ट्री आफिस विपयेश्वर का मंदिर है। आदर कम हो जाने से भुवनेश्वर अब विपयेश्वर होकर आए हैं। भूतो सरकार को भी यही कहना था।

भूतो और टूलू के मुह पर ही कहता था।

टूल कहता, अरे रुक भी बाबा। नातू ठाकुर के घर म बठकर लीडरी का दफ्तर खोला है। केंदुली मेले का यही पडा था, इसीलिए उस घर का कागज तयार हुआ था। खतियान निशान नबर—सब मेरे होंठ पर हैं। तेरे बाप ने हाथ पकडकर कहा मैंने लिख दिया। श्रीमन्त ने अपने कागज की लिखाई दो रुपये दी थी। तेरे बाप से पैसा नही लिया! आज मुझे पडा क्यो नही कहेगा!

अचानक उसे खोका ठाकुर की याद आ गई। उसका गीत गाना याद आ गया। अपन बाप के साथ उसका गाजा पीना याद आ गया। और फिर याद आ गया धरनी चाचा का कहना—अरी बिटिया, कहा कि वह दस्तावेज पर सही बनाकर चला गया।

बसत कहता था, पागल है, उल्लू!

उस्ताद कहता, गधा है। दिमाग मे गोबर भरा है।

टूलू चौधरी और वह भला आदमी दुकान के अदर आया। टूलू न कहा चाय की दुकान तुम्हारी बडी अच्छी हुइ है मालती। मुझे पहचान रही हो न?

गाहक आने पर उदासीनता म भी मालती को सजग होना पडता है। इन कई दिनो मे थोडा थोडा करके इसकी आदत पडती जा रही है। वह मुसकरा कर बोली पहचानती कसे नही! आप टूलू चाचा हैं।

—ठीक पहचाना है। हम चाय दो। और खाने को क्या बना है? निमकी सिंघाडा? वही लाओ। ठाकुर भी अच्छा मिल गया है। ठाकुर, ये बदवान शहर के आदमी हैं। अच्छी तरह से बनाओ। समझ गए?

मालती ने खुद आकर बेंच को साफ कर दिया। जहा चाय बनती

है, वहां गई। टूलू चौधरी और वदवान के वह सज्जन धीरे धीरे बात करने लगे। हठात टूलू बोल उठा, मालती अच्छी सिगरेट कौन-सी है? दो।

उस सज्जन ने कहा—गोल्डफ्लेक। टिन है—खुला है या भरा हुआ?

—पूरा टिन भी है।—चाय में दूध मिलाते मिलाते मालती ने कहा। दो प्याला चाय लाकर दी। फिर सिगरेट का टिन लाकर दिया। टूलू ने कहा, मालती ये सज्जन बसंत की तलाश में आए हैं। बसंत तुम्हारे यहां है क्या?

चकित होकर मालती ने उसकी तरफ देखा। तुरत उसे गुस्सा हो आया। भवों पर बल पड़ गए—मेरे यहां?

—हां। गाड़ी से उतरकर ये सीधे गोपा के बाप के पास गए थे। उसने कह दिया यहां नहीं है। कहां है नहीं जानते हैं। बसंत ने घर भी बनाया है। वहां भी गए थे। वहां भी नहीं है। वहीं श्रीमती ने बताया, बसंत तुम्हारे यहां ठहरा है।

खासे कठिन स्वर में मालती ने कहा नहीं। मेरे यहां क्यों ठहरेंगे वे? हां, कल आए जरूर थे।

—हां हां, वहीं कल दुकान में आया था। श्रीमती ने कहा, नई पट्रोमिक्स खरीद दी है। फिर—

—हां, सांझ के बाद भी एक बार गए थे। मगर मेरे यहां क्यों ठहरेंगे?

तुम नाराज क्यों हो रही हो? पहले तो तुम्हारे ही यहां बसंत का अड्डा रहता था। तुम्हारे घर वह भात तक खाता था।

मालती स्तब्ध रह गई। यह चौधरी कहना क्या चाहता है? टूलू ने कहा, नहीं खाता था?

मालती ने कहा, खाता था। रहता था, मेरे यहां अड्डा था उसका।

—वही तो कह रहा हूं।

—उस समय उसे अच्छा लगता था हम लोगों को भी अच्छा लगता था—

—अच्छा लगता था ?

—नहीं, प्यार करती थी उसे। आता था रहता था खाता था। अब अच्छा नहीं लगता प्यार नहीं करता। कल आए थे चले गए। मगर आप चाहते क्या हैं कहिए तो ?

भले आदमी ने कहा नाराज तुम नाहक ही हो रही हो। मैं महज यही जानना चाहता हूं कि वह ठहरा कहां है।

—वह मैं नहीं जानती।

—तुमसे कहा नहीं है ?

मालती को अचानक याद आ गया कि उसने कहा था गोपाल के यहां ठहरा हूं। फिर भी वह बोली, नहीं।

टन्नू ने कहा प्यार में आज कैसे आ गई मालती ? कल ही तो तुम्हें नई बत्ती खरीदकर दे गया सुना मैंने।

—हां गया आप लोगों को ?

—ऐ ठाकुर, दो निमकी दो सिंघाड़ा और दो।

भले आदमी ने कहा, तुम जरा उससे कह देना वदवान के

बीच ही में टोककर मालती ने कहा, माफ कीजिए मैं किसीसे कुछ नहीं कह सकूंगी।

—कहने से उसका भला होगा।—

—अपना भला वह आप देखेगा। उसके भले-बुरे से मुझे कोई वास्ता नहीं।

सवेरे सवेरे सारा समा जैसे कड़वा हो गया।

कड़वा ही मन लिए वह बैठी थी। गाहक आ जा रहे थे। आज ज्यादातर रजिस्ट्री आफिसवाले लोग थे। मालती चुपचाप बैठी ही थी। इसी बीच एक अजीब घटना घट गई। हनुमान सब गुड़ की छत पर और आसपास के पेड़ों पर खेल रहे थे। उनमें से दो बच्चों ने उछल-कूद करते करते बिजली के तार को पकड़ लिया और चीख उठे। उसके बाद धप्प से माटी पर गिर गए। मर गए। मां दौड़ी आई। ओह, उसकी

वह तडप, वह आकुलता ! हिलाया डुलाया, दुलारा—उसकी वह आकुलता देख मालती की आंखों म आंसू भर आए। आखिरकार मा उस मरे बच्चे को ही छाती स लगाकर एक हाथ स पेड पर चढ गई।

बठे बठे उसे लगा, वह भी ठीक इसी तरह मुहब्बत की लाश को कलेजे से लगाए बठी है।

—अजी यह चाय कि क्या महत हैं—है ?—एक युवक और एक युवती। मालती के अचरज की सीमा नहीं रही। कल का वही लछमनवा था और वही काली काली सी लडकी जो कल चाय की कीमत सुनकर ही भाग गई थी।

—तुम लछमन हो न ?

—हा।

और तुम तो कल चाय खरीदने आई थी। दाम सुनकर भाग गई थी।

लछमन ने कहा, नही। यह कल मुझको देख करके भाग गई थी।

—तुमको देखकर ! क्या ?

—यह मरी बीवी है। तीन महीने से मके भाग आई है। कल चाय खाने की इच्छा हुई थी। खरीदन आई और मुझे जो देखा

लछमन मुसकराकर चुप हो गया।

मालती ने कहा इसीलिए तुम शायद इसके पीछे-पीछे दौड पडे थे ?

—हू। अब इसे अपने घर लिए जा रहा हू। इसीलिए कहा चाय खा लो। कल यही खाने आई थी खा नही पाई।

प्रसन्न कौतुक की खुशी से पल मे मालती का चेहरा हसी से खिल उठा। मालती अकेली ही नही चंपा हस उठी ठाकुर हस उठा, टिकली खिलखिला उठी। वह लडकी शम से घूघट काढकर उधर को मुह किए खडी होकर धीम से बोली नहीं खाऊंगी चाय। तुम चलो !

मालती ने कहा, नहीं-नही। बठो। तुम दानो जने बठो। अदर आ जाओ। ठाकुर बना दो चाय। सब काम छोडकर चाय निकाल दो।

उस वेला के लिए सब कुछ तो बनाया ही हुआ है।

—बस दस मिनट। अभी देता हूं।

वह लड़की लेकिन हरगिज़ अंदर नहीं आई। दुकान के एक ओर एक खूटे का थामकर खड़ी रही। मालती हसमुख सी धूलभरी बिना हाट के दिन की हाट की ओर ताकने लगी। जहां पर हनुमान का बच्चा मरा था उस जगह से उसकी नज़र ही नहीं हट रही थी।

धूप झलमला रही थी। सवेरे पूरब के कुछ बरगदों की छाया पड़ती है। सूरज पेड़ों के माथे पर आ गया था। थोड़ी थोड़ी गरमी लिए धूप मीठी भी लग रही थी। मालती का मन भी खुशी से भर गया था। वहां न तो टूलू चौधरी था, न बसंत। कोई नहीं। उसके मन के एक कोने में बासन्ब दुबे का सर पड़ा रहता है। वह रक्खा ही हुआ है, सड़ता नहीं है। भुवनश्वर थान से लाखों लाख ढेले गिरकर गुम हो गए लेकिन बासन्ब का माथा उसके मन से न तो खोता है, न ही वह सड़ता है। वह गजब ढंग से जब-तब उसके मन की निगाहों के सामने आ जाता है। वह गाल सर गोया ढालवें से लुढ़ककर बीच में रुक जाता है। आज वह माथा भी नहीं आ रहा है।

भुवनपुर की हाट का महातम सत्य है। अभी सुख अभी दुख। अभी दुख अभी सुख। आज मुनाफा, कल नुकसान, कल नुकसान, परसों लाभ। आज जुड़ी, कल फटी यही है भुवनपुर की हाट। आज फटकर जो कल नहीं जुड़ना उसका नसीब जला हुआ है जानो।

चौंक उठी मालती।

घर घर आवाज करती हुई तीनेक जीप गाड़ियां रास्ते से मुड़कर बड़ पीपल की बाहर निकली जड़ों पर से उछलती-कूदती हाट में घुस आई। सामने की जीप से एक आदमी रास्ता दिखा रहा था। जीप रुक गई। उसके साथ पीछे की भी।

उनपर से टपाटप हवाई शर्ट और पैंट पहने देशी साहब लोग उतर पड़े। आठ दस आदमी।

—देखो चाय है ? जल्दी करो।

एक ने आकर कहा, अच्छे पिरिच प्याले हैं तो ? दरों !

मालती ने हड़बड़ा कर कहा, नये हैं सर। निकाल देती हूँ।

यह 'सर' शब्द उसने जलपान में सीखा। पोशाक, रंग-ढंग देखकर समझ गई ये सरकारी कर्मचारी हैं।

चाय के प्याले खरीदे हुए थे। दुकान में रखते रहते हैं। टूटते ही रहते हैं प्याले। पिरिचे प्याले निकालकर वह स्वयं ही धोने बैठ गई।

एक ने पूछा यह बड़-पीपलतला तो भुवनेश्वर का है ? ठाकुर ने कहा जी हां।

प्याले धोकर मालती ने मेज पर सजा दिए। चाय का पानी ठीक से उबला नहीं था अभी। आगे बढ़कर बोली—बढ़िया बिस्कुट है सर लाऊं ?

सभी लोग आश्चर्य से उसकी ओर ताक रहे थे। मालती शर्म से ज़रा लाल हो उठी। मुंह को नीचे झुकाए बोली, ले आऊं ?

—क्या, बिस्कुट ?

—थिन अराकट, सकस

—वाह ! चार चार दो।

कांच के बर्तन से मालती बिस्कुट निकालने लगी। मालती के बोलने-चालने का ढंग देखकर चपा अवाक् हो गई थी। ज़रा भी झिझक नहीं ! झिझक तो खैर उसे नहीं है। जल में उसने जल सुपरिंटेंडेंट को देखा, कभी-कभी जिलाधिकारी भी आया किए। उन सबसे बात करने की आदत है उसे। बिस्कुट निकालकर उसने ठाकुर से कहा ठाकुर दोनों बेंच निकाल दो। साहब लोग बैठें।

इस बीच और लोग भी आए। टूलू चौधरी भी था।

साहबों ने चाय पी। दाम-वाम चुकाकर बोले, तुम्हारी दुकान अच्छी है। साफ सुथरी है। उस पार सेटलमेंट का कैंप आ रहा है हमारा। दुकान को ठीक से करो।

साहब लोग जीप लिए उस बड़-पीपल के वन की तरफ चले गए। दुकान के सामने से भुवन सरोवर के किनारे किनारे वाल बनाने वाले चौंतरों को मडमडाते हुए थरथराती हुई जीपें निकल गईं।

मालती खूब खुश हो गई। साहब लोग खुश हो गए। उसने जरा भी भूल नहीं की। जरा भी नहीं घबराई।

ठाकुर ने कहा, मौसी, अब आदमी बढ़ा ला। बड़ी भीड़ होगी। मालती सोचने लगी, मेज कुर्सी हो तो अच्छा। जगह कुछ और ज्यादा हो, तो अच्छा हो।

टिकली थी नहीं। वह लछमन और उसकी बहू से बतियाती हुई चली गई थी। लौट आई। बोली मजे की खबर है मालती दी! छिरी माती ने दुकान क्या नहीं खोली है जानती हो? वह, कौन तो उसकी होती है अपनी—विधवा है कम उमर की है उसीको लाने के लिए गई है। दुकान में बठाएगी।

मालती हसी। लेकिन उसके लिए उसके मन में कोई हलचल नहीं हुई। वह अपनी दुकान की सोच रही थी। अच्छी-सी, सुन्दर-सी दुकान!

दो साल के बाद।

भुवनेश्वर की हाट में सोमवार का हाट के दिन सवेरे। हाट तीसरे पहर लगती है लेकिन सवेरे से ही मानो जम गई। बहुत से लोग आ पहुंचे। कम से कम सौ डेढ़ सौ दुकानें भी लग गइं। लेकिन शाक-सब्जी का कच्चा बाजार नहीं। ताड़ के पत्ते की चटाई सूप टोकरियां नहीं आइ थी। खसी मुरगी भी नहीं पर कटा पाठा एक डाल से लटक रहा था। कार पीता का फेरीवाला नहीं पहुंचा। खाने पीने की दुकानें खुल चुकी। चाय की दुकान में बेहद भीड़। धरनीदास वगरह ने कपड़े की दुकान खोल दी। पान बीड़ी सिगरेट की दुकान लग गई—फलवालों ने बक्सा पर फल सजा दिए।

हाट की शकल-सूरत भी बदल गई है। हाट के बीचोबीच चारों तरफ स्थायी दुकान घर बन गए हैं। इट की दीवालें पक्की छत। पक्की दीवाल टिन की छत। मिट्टी की दीवाल और टिन या फूस का छप्पर। एक-दो नहीं।

टूलू चौधरी ही गिन रहा था। गिनकर हरिपुर के एक समय के धनी जमीदार पाट्ठ चक्रवर्ती से कहा तेरह नहीं बारह। फलवाले और पराठा-तरकारी की जो दुकान है न वह वह एक ही है।

बीच म दीवाल जरूर है पर छप्पर एक ही है। किरायेदार दो हैं मालिक एक ही है। हमारे पडो थे हरी मिसिर—उन्हीकी स्त्री के गहने पाते बेचकर यह घर बना। प्रतुल ठेकेदार ने ठीक एक महीने म घर खडा कर दिया। उसी घर को किराये पर उठाकर बेचारी विधवा बच गई। दोनो दुकानो से तीस रुपया किराया आता है। एक प्लाट—भुवनपुर मौजे तीन सो चार खतियान का हजार पतीस नबर प्लाट।

पादू चौधरी पेड के नीचे एक मोढे पर बठा था। नया मोढा। उसके कमचारी खजूर के पत्ते की चटाई पर बठे थे। खडा था टूलू चौधरी।

सब लोग सटलमेंट के मामले के लिए आए थे। किसीका कागज दिखाने का नोटिस गया। कोई झगडने आया था। किसी की जमीन दूसरे के नाम पर दज हो गई है। कुछ सूधे से लोग, कुछ बड पेचीदे दुनियादार। पेचीद स्वभाववाले सपत्ति को बनामी कराने आए थे—दूसरे एक पक्के दुनियादार से किसी जमीन के लिए उलझन की सख्त गाठ लगाकर आए थे। वे लोग अभी से सावधान हो रहे हैं। जमीदारी गई, जमीन भी शायद पच्चीस-तीस एकड से ज्यादा नही रहेगी। इसलिए अभी से उसे बेटा बहू लडकी नाती के नाम म अलग अलग दज करा रहे हैं। जमीदार लोग, खास परती जमीन जो जमींदारी हक्क के साथ जुडी है, खेत, पोखर, नाला जो भी बन रहा है सलामी ले-लेकर बदोबस्त कर दे रहे हैं। नही तो जमींदारी के साथ साथ यह सब भी सरकार के कब्जे म चला जाएगा। पुरानी रसीद पर पुराना स्टाम्प लगाकर लिखे दे रहे हैं। खेतिहर भुक्खड की तरह निगले जा रहे हैं। जिन खेतिहरो की जमा-जोत हैं उनकी हालत इस समय अच्छी है। धान का भाव दस रुपये से नीचे नही गिरता। आसाढ से बढते बढते सोलह सत्रह अट्ठारह पर पहुचा है। उन्हे गजब की भूख है जमीन की। न टीला देखता है न टेकरा, नदी-नाला भी नही लेता ही चला जा रहा है। उन्हे भी कानून मालूम है। जमीदार से कुछ कम नही समझते। वे भी पच्चीस-तीस एकडवाली

समस्या है। वे भी सेटलमेंट आफिस आए हैं। उनकी आखो मे चमक है, बातो म उमग। होठो पर हसी। जो बेचारे निरीह है उनका आख मुह देखत ही समझ म आ जाता है। दया भरी डरी हुई नजर। सारे शरीर म बेबसी की असहायता की एक मायूसी। ये आज दो साल से यहा तलवे घिस रहे ह। शुरू शुरू भीड कम थी, अब ज्यो-ज्यो दिन जा रहे हैं, त्यो-त्यो ज्यादा लोग आ रहे है। तारीख पर तारीख पड रही है। पाच पाच सात-सात दिन पर आते हैं। बहुतेरे तो बिना तारीख के भी आते हैं। सेटलमेंट के कमचारी कहते है पहाड जसा काम है हाथ स आखिर कितना सा ठेला जाएगा। हम हाथी तो है नही जानवर नही हैं—आदमी है।

लोग कहते है सब दाव-पेच हैं।

दोनो ही सच ह। इन दो सत्यो की खीचातानी म भुवनपुर की हाट म रोज हाट जसी भीड लगती है। भीड के तलवो की घिसाई आस-पास घास की निशानी तक न रही। हाट के बीच म गड्ढा हो जा रहा था इसलिए इट बिछाकर जोडो पर सीमेंट किया गया है। जिन दुकानदारो की अपनी जमीन थी उन्होने स्थायी घर बना लिया है। पडा न द बाबू के यहा क हिस्सेदारो न अपनी अपनी जगह पर मकान बनाकर किराया लगा दिया है। उनम दुकानें लग गई हैं। मोढ़ा वाला खजूर की चटाईवाला अब रोज आता है। पाच-दस मोढ़े रोज बिक जाते हैं। खजूर की चटाई लोग बठने के लिए खरीदते है। सरकारी दफ्तर के यहा कुर्सी तिपाई बिकती भी है किराये पर भी लगाई जाती है।

पाटू चक्रवर्ती का यह मोढ़ा मकान पर स लाया हुआ था। शान्ति निकेतन का यह मोढ़ा। टुनु चौधरी की भी खूब चल निकली है। सच पूछिए तो वह सटलमेंट डिपार्टमेंट म वकील मुख्तारो का कान काटता है। हाट म नया दफ्तर खुल गया है। रजिस्ट्री आफिस क काम क लिए पुरानावाला दफ्तर ही काफी है—उस उसका सदर कहा जाता है। पाटू चक्रवर्ती टुनु चौधरी का मुवक्किल है। कहिए तो यह पार्टी ही

बार आया है पाटू चक्रवर्ती। अबकी हक्क का पेचदार मामला है। लेकिन डेढ़ेक साल पहले वह रजिस्ट्री आफिस में एक बार आया था।

डेढ साल पहले की हाट से अब की हाट की शक्ल देखकर चक्रवर्ती ने हैरानी भले ही जाहिर नहीं की, तारीफ कर रहा था। वापसी में घरों की गिनती में उसने तेरह गिना, टूलू ने संशोधन करके बताया, बारह। टूलू चौधरी को जरा ज्यादा बोलने की आदत है। बोले बिना उसका चलता भी नहीं। खतियान नंबर, प्लाट नंबर आप ही आप जबान पर आ जाता है।

चक्रवर्ती ने चारों तरफ देखकर कहा, मालती का रेस्टुरेंट लेकिन बहुत अच्छा बना है। थोड़ी-सी जगह में बहुत सुंदर बना लिया है। डेढ साल पहले तक भी टिन की दीवाल और टिन की छौनी थी। अब एकबारगी पक्का बना लिया। बिजली लगवा ली।

टूलू ने कहा, अजी इसकी बात ही क्या! खूनी औरत है, जेल काट चुकी है जाबाज है। निसपर पहले बसंत बनर्जी की चेली थी। सभाओं में गीत गाया करती थी।

—अकरम-कुकरम कुछ नहीं—क्या?

—सुनता तो हूँ! कुड्डू को तो दुह लिया। यह घर तो कुड्डू की ही जमीन पर है! कुड्डू लिखकर दे गया है यह इकतल्ला दुकान और एक घर उसीने बनवा भी दिया है। ऊपर का हिस्सा इसने खुद बनवाया है।

—सुना है! बुढ़ापे में कुड्डू की अक्ल मारी गई थी। पंगु हो गया था। लकवा।

—हाँ। उस समय इसने उसकी सेवा की। सो की है। वह एक गजब की औरत है जनाब। कहा नहीं कि पहले बसंत की चेली थी। बसंत के साथ उसी समय बिगड़ चुकी थी। वह और गोपा। बसंत तो कन्हैया है न! हजार गोपिया! सभी उसकी मित्र। पहले कहा करता था कि शादी नहीं करूंगा। ब्रह्मचारी रहूंगा, लीडरी

करूगा। यह यानी मालती जब जेल स निकली यह गोश स जा जुटा था। यह क्या करती! इसने कुट्टू का फनाया। गोपा स ब्याह करके बसत ने घर बना लिया लेकिन। इसने भी बना लिया!

एक कर्मचारी दौड दौडा आया। बाबू साहब बुला रहा है। बडा उखड गया है।

चक्रवर्ती काम-काज म बडा धीर आदमी है आसानी स घबराता नही। कहा क्या जो भूख लगी है साहब का सब्र नही है?

टूलू ने कहा मैंने पहल ही बताया आदमी यह बदमिजाज है। रुपया पहले दे देने स ठडा रहता।

—तुमने ही तो देरी की। बातो म रम गए। लेकिन हा मज की बात म सभी रमत है। तुम भी मशगूल हो गए मैं भी मशगूल हो गया। लो, रुपया लेकर जाओ।

कर्मचारी न कहा, आपको जाना होगा। बुला रहा है।

—मुझको जाना पडेगा?

—जी।

टूलू ने कहा चलिए न। हज क्या है! आखिर एक बार तो हाजिरी देनी ही पडगी!

चक्रवर्ती उठा। एक तो मोटा आदमी फिर आदमी की छत बचा कर चलने की आदत। फिर भी लाचारी उसस बचते हुए एक किनार स चलना पड रहा है। हाट के आगण म धूप आने म अभी भी देर थी। आन से थोडा और आराम होगा। अगहन का अत। अब की सरदी भी ज्यादा पडी है। दुकानो म खरीद बिक्री चल रही थी। विशेष रूप स खाने पीने और पान बीडी की दुकान म। चाय की दुकान म ज्यादा भीड है। मालती के रेस्टुरेंट की छ मेजा की छब्बीस-सत्ताइस लोहे की कुर्सियो म से कोई खाली नही। श्रीमती की भी दुकान म भीड है। वहा भी भीड बढी है। उसकी दुकान माटी की थी। पक्के खभो पर टिन की छौनी। अब पक्का हो गया है। बगल म एक कमरा बढ गया है।

ऊपर कोठा। टूलू का दफ्तर श्रीमती के कोठे पर है। उसने कहा, ज़रा रुकिए—मैं कुरता वदल लू। कुरते से पसीने की बू आ रही है। अफसर जो है पसीने की बू से उखडता है।

श्रीमती की दुकान में भी सामने कुर्सी पर एक विधवा युवती बैठी है। देखने में सुन्दर भी है जवान भी है—हँसती भी खूब है। ज़रा कुछ ज़्यादा हल्की किस्म की है—अशालीन।

श्रीमती चक्रवर्ती को पहचानती है। बोली, अरे बाबू?

—हा। पहचान रही हो?

—आपको नहीं पहचानूगी भला!

—बूढा हो गया हू न!

—और मैं क्या नहीं हुई हू? चाय पीजिए न।

—रहने दो। पुकार हुई है। देर होने से शायद साहब काटता है।

हँस उठी श्रीमती। बोली, अरे बाप रे, नाक में रस्सी डालकर नचाता है!

—समय की महिमा! और, यह कौन है?

हँसकर श्रीमती ने कहा, नाते में मेरी बहिन-बेटी होती है। उस जवान छोकरी ने आकर बगल में दुकान खोल दी। मेरी दुकान कानी हो गई। बुढिया की दुकान में कौन खाता है। इसीलिए छोकरी ही ले आई। अरी नमस्कार कर न रे सावी—

सावित्री ने मुसकरा दिया—नमस्कार बाबू। आइएगा। यहीं चाय पीजिएगा।

इतने में टूलू चौधरी आ पडा, चलिए।

श्रीमती की दुकान से आगे मालती की दुकान। धनरह भीड। अंदर चार चार छोटे लडके काम कर रहे हैं। दो दो ठाकुर। उस पुराने ठाकुर के साथ यहीं का और एक छोकरा काम करता है। पहले नौकर का काम करता फिरता था। नाम है हाराधन नदी। चपा नहीं है। वह नवद्वीप चली गई है।

ठूठ से यहाँ जाती ही मालती ने जाना आना शुरू किया, चंपा ने एक दिन कहा, मौसी अब मुझे दिन करो।

उसके मुँह की ओर देखकर मालती ने कहा, अच्छा नहीं लग रहा है मौसी।

चंपा बोली—हाँ।

मालती ने कहा, तो फिर जाओ। मैं हर महीने कुछ रुपये भेज दिया करूँगी।

—नहीं। रुपये भेजने की जरूरत नहीं।

मालती ने कहा ठीक है।

उसके मन में बहुत-सी बातें आई पर उसने पूछा नहीं।

मालती आज भी चंपा मौसी के बारे में सोच रही थी। आज उसकी चिट्ठी आई है। उसने कुछ रुपये माँगे हैं। मालती चुपचाप सोच रही थी और सामने की तरफ ताक रही थी। भुवनपुर की हाट की ओर ऐसे ही देखती रही वह। उस तरह से देखते रहने से कुछ भी देखना नहीं होता। मन ही मन लेखा लेती और याद करके ही वक्त कटता। आदत हो गई है। कभी-कभार अचानक कोई हो हल्ला हो जाता है तो वह देख लेती है।

सोच रही थी चंपा मौसी को लिवा लाएगी। कभी जी में आ रहा था ले आएगी। खूब सेवा करेगी उसकी। उसके बाद समझा कर उससे कहेगी, मौसी जिसे पाप कहते हैं मैंने वह नहीं किया है। नहीं किया है। नहीं किया है। पाप जिसे कहती हो वह तो दूर की बात मैंने उसे मन में भी नहीं लाया। लेकिन खेल को अगर पाप कहो, तो मैं पापी हूँ। मेरा मन देनेवाला वह प्यार उस हनूमान के बच्चे-सा ही मर गया था। कुछ दिनों तक मरे बच्चे की नाईं मरे हुए प्यार को छाती से लगाए बैठी थी। झूठ नहीं कहूँगी। झूठ कहूँ भी क्यों मौसी! मुझे कोई उम्मीद नहीं है। अपने हाथ से बाँध हुए ढले को मैं

खोल आई हू। झूठ क्या कहू, अरमान होता है। अरमान है। नही रहा होता तो क्या मैं शहर बाजार म चली गई होती ? उसस आखिर कितना कलक होता ? माथ पर एक के बाद दूसरा आ कलक चढ रहा है उससे क्या वह ज्यादा होता ? नही होता। अपन अरमान को जो मैं किसी तरह स भी नही छोड पा रही हू ? मेरा अरमान तो वसत को घेर कर नही है। तुम जो भी कसम खाने को कहो खा सकती हू मैं। तुम्हारा वचन छूकर कह सकती हू। वसत का लकर अरमान किया था—वसत को हाथ नही दूगी—वह मेरे हिसाब की भूल थी। वसत को पाप पुण्य भी नही है। वह क्या जा है मैं नही जानती। उस भय भी नही है प्रेम भी नही है। उसे अपना काम है और है स्त्रिया के मन से खिलवाड करना। गोपा न खुद ही मुझसे कहा है, उसके विधवा होने के बाद जब जेठ से उसका मामला मुकदमा चला, उस समय वसत उसके जेठ का ही एक साप्ताहिक पत्र निकालता था। नौकर था उसका। फिर भी उसने अपने मालिक का विरोध किया था, झगडा किया था जेठ के ही अखबार मे जेठ का भडा-फोड किया था। वही उस दिन जो गोपा भुवनपुर आई, उसके दूसरे दिन वसत आया। अरे वही जिस दिन वत्ती को लेकर अनमना हो गया, जिस दिन वसत की बात सुनकर मैं चौंकी। जिस दिन उससे मैंने नाता तोड लिया। मैंने कहा, वत्ती अपनी ल जाओ। ब्याह न करके हृदय मे प्रेम करना, यह मेरे वश की बात नही! दूसर दिन दूल चौधरी वदवान के उस बाबू को लेकर आया। उस दिन क्या हुआ था पता है ? वसत वहा से सारा कागज पत्तर, दस्तावेज चिठ्ठी-पत्री गायब कर लाया था उसम गोपा के जेठ का मृत्युबाण था। उन लोगो न पुलिस म खबर दी थी।

—चार वष चाय चार चाप, आठ निमकी !

मालती हिली डुली। नजर उठाकर देखा। एक ही साथ गाहक आए थे। जिस नौकर ने उन लोगो का सामान दिया था, उसीने, जो दिया था, सो बताया। हिसाब करके मालती को दाम लेना है।

मालती जरा हँसी। इतना ही बोलना है। बोली, एक रुपया चार आना।

डेढ़ रुपया देकर भले आदमी ने कहा बाकी की सिगरेट। विल्स।

मालती ने सिगरेट निकालकर हाथ में हाथ सटाकर दे दी।

उसके बाद सौंफ सुपारी की तश्तरी बढ़ा दी।

भला आदमी चला गया।

उसके बाद टूनू चौधरी से फिर एक दिन भेंट हुई थी मौसी उस दिन तुम्हारे गौराग का भूलन था तुम दुकान नहीं आई थी। बसन्त से मेरे अलग हो जाने की बात उस समय फैल चुकी थी। बात कैसे फैलती है तुम जानती ही हो, तिसपर भुवनपुर की बात। कहते हैं

हाट मे बात खुली जहां
पल भर में जहां-तहां!

और फिर यह भुवनपुर की हाट। टूनू चौधरी ने कहा, उसे टिकली ने बताया। बताया होगा। टूनू ने कहा था, मैं यदि लिख दूं। लिख दूं कि चौदह पन्द्रह की उम्र में जब मैं जेल नहीं गई थी, बसंत की चेली थी, तभी से मैं और गोपा दोनों उसको प्यार करती थीं। वह भी हम दोनों को चाहता था। मुझसे कहा था तुमसे ब्याह करूंगा। वह जात नहीं मानता, कुछ भी नहीं मानता। उसके बाद जेल से छूटी तो देखा कि वह मुझसे शादी नहीं करना चाह रहा है। इसलिए कि वह गोपा को प्यार करता है। उससे उसका गुप्त सम्बन्ध हुआ है।

कहा था यह कहो तो कुछ झूठ कहना तो न होगा। वह गोपा को प्यार करता है। नहीं तो तुम्हें वचन देकर आज मुकर क्यों रहा है? और तुमने तो हाट में बताई है प्रेम की बात। ये बातें तुम लिख दो तो गोपा का जग्गू तुमको एक हजार रुपया देगा। साथ ही उसे तुमसे ब्याह करने को मजबूर करेगा।

मैंने कहा था, नहीं। लेकिन वह गोपा को प्यार करता है इसका सबूत पाया था। समझने में देर नहीं लगी थी। तुमसे मैंने कहा नहीं।

उस हनुमान मा की तरह मेरे प्रेम को छाती में रखकर बड़ी तकलीफ पाई थी।

प्रेम भुवनपुर की ही क्या बात, शायद तीनों भुवन में कहीं नहीं है। शायद हो भी हो—सो जैसे ही पैदा होता है वैसे ही मर जाता है। मन देकर मन मिल सकता है मन और मानुस, दोनों नहीं मिलते। अपने को देकर आदमी एक दूसरा आदमी पाता है, वहां आदमी के साथ मन नहीं रहता। मन मानुस दोनों देकर दोनों पाने ■ क्या होता है, जानती हो? अपने अपने मन को ही वापस लेता है। गोपा की बाबत भी यही हुआ है मौसी। मेरा मन भी मेरा है मेरा मैं भी मेरा है। मैंने किसी को नहीं दिया है। दी है—हंसी दी है, बातचीत दी है। और पाया है रुपया-पैसा। सुख—हां सुख भी है बनाव।

—पांच प्याला चाय दस बिस्कुट, एक पैकेट कैप्सटन सिगरेट।

गाहकों का एक दल खड़ा है। दाम देगा।

—एक कप चाय सिर्फ।

—रुकिए जरा। पहले इनका ले लें।—मीठी हंसी हंसती है मालती।—जरा देर। एक-एक करके। मैं तो अकेली हूं न।

—दस सिंघाड़ा बारह निमकी दो बड़े रसगुल्ले—ला दिए हैं।

मोटर का भोंपू बज रहा है। सेटलमेंट की जीप कहीं जा रही है।

पेड़ पर से किसी के ठोंगे पर चील ने झपट्टा मारा। ठोंगे में वह मिठाई ले जा रहा था।

एक बज रहा है। चाय की दुकान की भीड़ घट रही है। हां, सिंघाड़ा कचौरी बिक रही है। मालती उठी। नहाएगी खाएगी। उसके बाद फिर आकर बैठेगी। ठाकुर नौकर बारी बारी से नहाने जाएंगे। सेटलमेंट के मुवक्किल खाने जा रहे हैं। अभी होटल में भीड़ है। तीन होटल खुल गए हैं। खूब चलती है उनकी। तालाब में लोग नहा रहे हैं। बहुत से लोग कुएं पर सर धो रहे हैं। हाट को खाली करके मुवक्किल लोग हाट के बाहर पेड़ तले डेरा डाल रहे हैं। सोमवार की हाट। हाट

लगेगी। बाबाथान के पडे आ गए। इस समय उनकी खूब चलती है। हाट की आमदनी इसी समय से आने लगी है। सरदियो के दिन हैं, तरकारी का मौसम। इस बार तरकारी उपजी भी खूब है। और हाट के पास सेटलमट आफिस के आ जाने से दूर दूर से बिकने को आती भी है। सेट्लमेंट कप अब नाम का ही कप है—आफिस के हिसाब से कप कहा जा सकता है। नहीं तो आफिस के लिए पडों के एक करीब न—देवेनमिश्र न—घर बनवा दिया है। बड-पीपल के जगल के पास जो परती जमीन पडी है, वह पडो की है। सेवायत के नाते वह उन्हीके कब्जे म है।

और और मकान भी बन रहे है। देखा-देखी दूसरे पडे भी बनवा रहे हैं। उस जमीन के लिए मामला भी चल रहा है। पडो से पडो का।

मालती के घर मे कुआ है। छोटा सा आगन। एल आकार का थोडा-सा बरामदा। रेस्टुरेंट के अलावा दो कमरे। कमरो को मालती ने स्कूल की दीदियो को किराए पर दिया था। लेकिन वे चली गई हैं। मालती की यहा बदनामी बहुत है। स्कूल की व्यवस्थापक समिति ने एतराज किया था। कुछ दिनो तक सेटलमेट के बाबुओ को दिया था। उनके खिलाफ भी दरखास्त पडी। एक वेश्या जैसी औरत के घर कम चारी लोग रहते हैं। वे भी हट गए। उससे मालती को खास नुकसान नहीं हुआ। जिस कमरे का दरवाजा बाहर की ओर है, उसे किराए पर देकर दूसरे कमरे को बूढे ठाकुर को रहने के लिए दे दिया है। बूढे ठाकुर की वह रखल भी रहती है। वह मालती का काम काज कर देती है। उनके चार बच्चा म एक बच्चा भी यहीं रहता है।

नहाकर चूल्हे पर भात चढ़ाकर मालती खिडकी के सामने बैठी थी। वह दुतल्ले पर रहती है। घर-द्वार खासा सजा-सजाया है। यह घर वास्तव मे उस बूढ़े बनवा द गया है। बदवान का वह बाबू जिस दिन आया था, उसके तीनेक महीने बाद बूढ़ा बीमार पडा। लकवा

मार गया। बेट-बहुए उसे लेकर मुसीबत में पड़ गई। उन लोगों ने नस रखने को कहा। कुड़ू ने नर्सिन नस को नहीं रखा। वह घर के एक किनारे के कमरे में रहने लगा। काफी वस पर एक नौकर रख लिया। अस्पताल में मरने के लिए जाएगा? उसने अपने बूते पर इतना बड़ा कारबार खड़ा किया, ऐसा भाग्य बनाया—मजा से घूमा किया। इतने दिनों के बाद अन्तिम समय सबका आता है सब को आएगा। मगर इतने दिनों तक घूमते रहने के बाद वह मरेगा भी घर में नहीं? मालती कुड़ू का एहसान नहीं भूली, बल्कि उसका मेल जोल कुछ ज्यादा ही बढ़ा।

इस बस्ती के लिए ही उसने श्रीमती से चीख-पुकारकर जो कहा था, उससे गांव में ही क्या सारे इलाके में और भी नमक मिर्च मिलाकर हलचल हुई थी। और उस बस्ती को खरीदते वक्त बसंत कुड़ू से आप ही कह आया था, आपने कितने रुपये दिए हैं कुड़ूबाबू जोड़-जाड़ कर रखिएगा—मैं दे दूंगा। उसके बाद खूब मीठी मीठी किंतु तेज, जिसे मिसरी की छुरी कहते हैं उसीसे उसने कुड़ू पर चोटें की थीं। अट्ठारह साल की लड़की, और आप? कितनी उमर है आपकी? सत्तर? आपकी बड़ी पोती के कितने बाल-बच्चे हैं?

कुड़ू भी अजीब चरित्र का आदमी था। वह खूब हंसा था। कहा था, मैं आपके पिता भरत उस्ताद का शागिर्द था। कितना खाया पिया मौज-मजा किया। उस्ताद ने मुझे तबला सिखाना चाहा था, पर इकताला की कव्वाली में ताल कट गई। मैंने कहा था तबला सीखने से मैं बाज आया उस्ताद मेरे लिए सुनना ही अच्छा है। उसने कहा वही बेहतर है काका। मुझको काका कहता था। मगर आपसे वह नाता जोड़ने की जरूरत नहीं—आप लीडर हैं। खैर। ठीक तो है—आपकी उमर चौबीस-पच्चीस है। नए जमाने के आदमी हैं। उसी का लेकर आप जो हो, कीजिए।

बसंत ने कहा, आप लोग जाल फेंककर आदमी फंसाते हैं। जाल

आपको समेट लेना होगा। मैं आपको वह दे दूगा। समझे ?

दूसरे दिन बदवानवाले उस बाबू के आने की खबर पाकर बसत साइकिल स सथिया होकर जाने कहा चला गया। वह साप्ताहिक अखबार का कागज-पत्तर हटाकर यहा ले आया था। उस दिन दिन डूबते समय कुडू स्वय मालती की दुकान मे आया था। मगल का दिन। हाट नही थी। मालती का मन उस समय भी बच्चा मरे हुनु मान मा जसा था। एक अजानी रुलाई से भरा। पुकारने पर जवाब नही, हिलडोल नही। उछल-कूद नही। लकिन उसकी कल्पना स वह बसत को लेकर अपन भविष्य की रचना नही कर पा रही थी। चुप बठी थी।

कुडू न हसकर कहा हा रे मालती मैं आ पडा। तुमसे एक बात कहने के लिए आ गया।

मालती न कहा, कहिए।

—कह रहा था, तू क्या दुकान नही करेगी ?

—क्यो ? ऐसा क्या कह रहे है आप ?

—बसत बाबू कल एक बत्ती खरीद लाए। और बातें तो उसने बहुत कही। लेकिन मैंने समझा तू शायद दुकान नही करेगी।

ठीक उसी वक्त ठाकुर एक लालटन जलाकर ले आया। कुडू न कहा, अरे। लालटेन ? वह नई बत्ती क्या हो गई ?

मालती ने कहा मैंने वह वापस कर दी कुडू बाबू। जिसकी थी वह ले गया।

—ले गया ? कहती क्या हो तुम ?

—कहा तो मैंने लौटा दी।

—लौटा दी। उसीके लिए बाजार म इतनी हलचल है ! दुर दुर।

—बाजार की हलचल स मेरा क्या होना है कुडूबाबू ! मैं जल काटकर आई हू।

—तो ?

—वह लंबा फिसाना है।

—कहा नहीं जा सकता ?

—बखूबी। उससे क्या मेरी पट सकती है कुडू बाबू। वह और है मैं और हूं।

कुडू कुछ देर चुप बैठा रहा। उसके बाद बोला, देख उस श्रीमती का मैंने बहुत किया। उस जमाने में वह बड़ी तूफानी औरत थी। बानती बहुत अच्छी थी हसती अच्छी थी चलती अच्छी थी। मेरी उस समय की जुबान—बुरी बात निकल आना चाह रही है। वह मुझे अच्छी लगती थी। मेरे घर आया करती थी। मेरी स्त्री से बनती थी। उसके पास नाचती गाती थी। हरफन मौला थी। बुरी भी थी। मुझे फंसाने की ताक में थी। मगर कुडू मछली मारता है पानी में नहीं उतरता। हंसी मजाक—बहुत हुआ तो हाथ पकड़ा। कुछ अ यथा न सोचना।

मालती का मन मनुष्य का मन था। वह मन बातों बातों में मेरे बच्चे की बात भूल गया था। उसे छाती से उतारकर कब बगल में रख दिया था याद नहीं। वह कुडू की बात पर हंसते हुए ही बोली मैं भी ढाई साल जेल में थी। कहिए आप।

कुडू ने वही कहा, जो जुबेदा कहा करती थी। कहा यह संसार ही नरक है रे। मन ही मन जो हो कह लो। खैर। जो कह रहा था। श्रीमती बहुत बार बड़ी-बड़ी झंझट में पड़ी। उसके खसम ने उसे छोड़ दिया था। मैंने ही उसे बुलाकर कहा था, घर के पागल को छोड़ देने से ही बाहर वह नंगा होगा। पकड़ लो। घर में रक्खो। रुपया देकर मैंने व्यवसाय करा दिया। रुपये उन लोगों ने दे दिए। रुपये नहीं लिए, सो नहीं कहता! अच्छा ढंग से ही चल रहा था। एक देता या दूसरा लेता था। पति मर गया। हाट की वह जगह मेरी ही थी। सस्ते दाम पर दे दी। हाट उस समय जम रही थी। अब तक किराए

देखकर और यह जानकर कि तू दुकान करेगी, मुझे लगा, पास ही अगर तुझे वसी दुकान करके बिठाल दू तो उसे सबक सिखा सकूगा। जभी मैंने तुझसे पूछा, तू राजी हुई—बिठा दिया। तू अगर नही भी करेगी तो मैं उस दुकान को उठाऊगा नही, किसी दूसरे को लाकर वहा बिठा दूगा।

मालती ने कहा, दुकान मैं करूगी कुडू बाबू। कहा तो आपसे, उमसे मेरा चुक गया।

कुडू उठ खडा हुआ। बोला तो मैं चलता हू। एक बत्ती वहीं से जलवाकर भिजवा देता हू। उनलोगो ने बत्ती जलाई है। तुझे भी जलानी होगी। बस एक ग्रामोफोन का इतजाम करूगा। समझ गई। अगर हो सके, तो कल एक बार आना।

बीस ही मिनट के बाद एक जलती हुई बत्ती आ गई। यह बत्ती बसतवाली से बडी थी, कीमती, देखने म भी अच्छी।

श्रीमती दुकान मे नही थी। सवेरे टिकली ने बताया था वह अपनी किमी बहिनबेटी को लाने गई है।

मालती उम दिन दुकान से घर लौटने के रास्ते म ही कुडू के यहा गई थी। कुडू का मकान पक्के का है। मगर खुद वह माटी की दीवाल और फूस की छौनीवाले घर मे रहता है। नौकर है। फूस का घर होने के बावजूद बिजली-बत्ती है पखा है।

कुडू ने हसकर कहा तो रात को मरने के लिए क्यो आई?

—रात ही आ गई।

—मेरी बदनामी का अत नही है। तेरी भी होगी। मरेगी।

—मैं जेल काट आई हू। मुझे उसका डर नही है। आप अपनी सब बात कह आए, अब मैं अपनी सब सुना जाऊ।

—बहुत खूब। राधा के वदा दूती थी। तेरा मैं हू। आखिर मन की बात कहने के लिए भी कोई चाहिए न।

—नहा। मैं राधा नही हू। राधा नहा बनूगी।

—क्या?

—मैं राधा की तरह रोती नही। मुझसे रोया नही जाता।

—शावाश! शावाश! खाएगी कुछ?

—नही। सिर्फ अपनी सुनाकर चली जाऊंगी। आप महाजन हैं। मैं खातक हूं। आपने मुझे बुलाकर दुकान पर बिठाला है। आपको सब कहे बिना नही होगा। और उसने जीवन की प्राय सारी ही बात कही थी। कहने के बाद कहा कहते हैं, भुवनपुर की हाट में मन देने से मन मिलता है। मैंने ढेला बाधा था। कल उसे खोल दिया। मन देकर मन लेने की जरूरत नही है मुझे। इसकी जैसी झूठी बात और हो नही सकती। आदमी मिलने से मन मिलता है। आदमी अपने को देकर आदमी को पाता है—उससे मन नही पाता—ऐसा होता है, पाता है, ऐसा भी होता है। लेकिन आदमी को याद करके मन देकर मन, ऐसा नही होता।

—अरे! आखें दोनो बडी-बडी हो आई थी कुडू की। उसने अवाक होकर मालती की बात सुनी। बात खत्म होते ही आखें फाडकर कहा इतना जानती है तू!

—जेल मे सीखी है। जुबेदा बीवी से।

—यह जुबेदा बीवी कौन हुई?

मालती ने उसे जुबेदा बीवी के बारे मे बताया। कुडू ने हाथ जोड-कर नमस्कार किया। कहा, बाप रे! काली तारा नही कहूगा, मगर यह तो डाकिनी-योगिनी है रे!

ठन् से घडी मे आधा घटा बजा। आखो पर ऐनक रखकर कुडू ने घडी की तरफ देखा— अरे रे, साढे ग्यारह बज गए। जरा मजा तो देख।

—क्या हो गया?

—इतनी रात को जाएगी?

—मैं मजे म चली जाऊंगी।

—नहीं-नहीं। रोशनी लेकर कोई तुम्हे पहुंचा आए। बदनामी की परवा तो तुम्हे है नही। हा। लेकिन एक बात सुनकर जा।

—कौन-सी बात ?

—बसत गोपा के साथ उलझ गया है। बदवानवाला आदमी मेरे पास भी आया था। बसत छिप गया है।

बसत ठीक ठीक छिपा नहीं था। विचित्र आदमी है वह। वह चारो तरफ घूमता रहा और गोपा के जेठ से लडता रहा। लडा ही नही लडकर जीता। बसत के कब्जे म कुछ ऐसे कागजात आ गए थे कि गोपा का जेठ गोपा से समझौता करने को मजबूर हो गया। पचीस हजार नकद गोपा के पति का सारा सामान और बदवान में एक मकान—इसपर सुलह हुई। इनके अलावा गोपा का अपना गहना-गुरिया तो था ही। मामले के समझौते के लिए गोपा बदवान गई थी। समझौता हो जाने पर बसत का हाथ पकडकर वह ब्याह की रजिस्ट्री कराने गई। उन दोनो ने शादी कर ली।

इस बात को भुवनपुर पहुचने म देर नही लगी। बात ही नही आई बसत भी आया था। बसत मालती की दुकान पर भी आया था। खरीदकर चाय पी थी।

जाते जाते कह गया, भूल, मुझसे थोडी भूल हो गई मालती। मैं अपनी बात रख नही सका। परतु इसके लिए दोषी गोपा है—नही-नही छोडो—उसे दोषी बनाने से क्या लाभ ? फिर भी मैंने इसे सुधारने की कोशिश की थी। कोई उपाय लेकिन न रह गया था। गोपा गर्भवती है।

मालती अवाक होकर सुन रही थी।

अभी भी वह बीच-बीच म आता है। सभा अभी भी करता है। हाट मे ही करता है। एक दिन सभा म किसी ने पूछ दिया—पहले अपनी कफियत दीजिए तो आप ! आपने द के यहा की विधवा लडकी से शादी क्या की ? गोपा से ?

बसत गरज उठा था—इसलिए कि विधवा विवाह कानून से जायज

है, इसलिए कि विधवा विवाह धम सगत है। गोपा मुझे प्यार करती थी, मैं भी गोपा को प्यार करता था, इसलिए। और जात पात? जात-पात का भेद पाप है, अन्याय है। जात-पात मैं नहीं मानता।

गजब। एक ही बात म सब सुन्न घसीट गए थे। बसत उस दिन भी आया था। अभी भी अक्सर आता है। एक झमेला हो गया है। सेटलमेंट के चक्कर मे आ गया है। भुवनपुर की माटी का चक्कर भी कहिए। यहा की माटी पर उसके पाव गड गए हैं। गोपा के रुपये से बसत ने मकान बनवाया है। बदवान के मकान को बेचकर यहा मकान बनवाएगा। लेकिन जमीन का झमेला हो गया है। वह रही वह जगह। भुवनश्वर के पडो की जगह म दस कट्ठा जमीन। बसत ने वहा इट चूना, बालू गिराया। पडा ने एतराज करके काम रोक दिया। वह जगह खोकाठाकुर की है। खोकाठाकुर ने शरत उस्ताद को स्टाम्प पर अपना मकान लिख दिया था और कहा था मेरा जो कुछ भी है आप ले लीजिएगा। लेकिन उस दस्तावेज पर दाग नबर देकर यह जगह नही लिखी हुई है। उस समय यह जगह हाटवालो की मला माटी की जगह थी। अब पडा ने आपत्ति की है। चूकि ये लोग खोकाठाकुर के अपने सग हैं इसलिए इस जमीन क हकदार यही लोग हैं।

बसत ने गोपा स रुपय लिए हैं। प्रेस खरीदेगा। अखबार निकालेगा। गोपा के बच्चा हुआ था। गुजर गया।

अब एक दूसरे को जकडकर दोनो मीटिंग में जाते हुए हैं। गोपा शायद चुनाव लडेगी। गोपा ने हसते हुए मालती ■ कहा है क्या मजा है मीटिंग करते हैं मौज स रहते हैं।

मालती न पूछा था सुख सुख म है गोपा?

—सुख-दुख नही समझती। मज म हू। वह शराब पीता है मैं सिनमा देखती ■। मेरे भी दोस्त हैं। वह भी बाघजी लिए रहता है।

उसक बाद धीरे ■ उसके कान म कहा जानती है? कभी-कभी मैं भी पीती हू।

—क्या ?

—शराब। पार्टी-वार्टी में जाती हूँ न। घर में भी कभी-कभी। यह तो आजकल का फैशन है।

सारी दुनिया ही में नित नूतन है। भुवनपुर में भी। हाट में इसका मेला लगता है। मालती से न हो सका। वह सदा खेल ही खेलती गई। भुवनपुर की हाट में आज मन देकर, मन लेकर आज-कल कल परसों लौटा देना चल पड़ा है।

भात जलने लगा क्या ?

झट उठी वह। थोड़ा सा पानी डालकर चलाया। हाँ, जल ही गया। आज नसीब में जला हुआ भात ही है। मालती ने उतार लिया।

अक्सर होता है—कोई नई बात नहीं। संसार में शायद एक वही पुरानी रह गई। होते-होते भी नई नहीं हो सकी। कभी-कभी सोचती है काश, यदि वह गोपा की तरह बसंत को पकड़ पाती बांध पाती, तो वह भी गोपा की तरह सुख-दुःख समझे बिना मजे में रहती। मीटिंग करती। बसंत शराब पीता वह सिनेमा देखती। पार्टी में पीती।

न यह उससे नहीं होता। उसमें एक गजब की प्यास है।

मात्र मन ही नहीं मात्र मनुष्य ही नहीं, मन और मनुष्य दोनों पाकर भी शायद उसकी प्यास नहीं मिटेगी। मगर अब वह जिंदगी को खींच नहीं पा रही है। और फिर भी बदनामी का अंत नहीं।

ओ। पहली बदनामी कुन्दू को लेकर।

कलंक लगा—मौसी चली गईं। उसके मन ने कहा, जाओ।

कुन्दू कलकत्ता हुआ। अपने उस बंगले में एक प्रकार से अकेला ही पड़ा रहना। वह जाती सिरहाने के पास बैठती। कहा घर-द्वार बड़ा गंदा हो रहा है कुन्दूबाबू!

कुन्दू ने फीका हँसकर कहा, कौन करे? किससे कहूँ? लड़के कहते हैं अस्पताल जाओ। अस्पताल मैं नहीं जाता। मरने के समय मेरे

मुह मे तुलसीदल दगा वहा, दूध गगाजल देगा ? मैं भला अस्पताल जाऊ ?

—कोई नर्स रख लीजिए।

—नर्स ? दुर-दुर।

—ठीक तो है। मुझे रख लीजिए।

—तू ? तू रहेगी ?

—रहूगी। दोनो शाम सफाई कर जाऊगी।

—उहू। रह सकेगी ?

—सो—। जरा सोचकर हसती हुई बोली—आ, सकूगी। रखिए ?

कुडू ने बगल के कमरे मे जगह कर दी थी। छि छि से भुवनपुर भर गया। कुडू के लडके-बडके तग आ गए। उन्होने आपत्ति की—बदनामी जो फल रही है नही सुन रहे है ?

कुडू ने कहा नही !

कोई ना महीने मे सेवा जतन के बाद कुडू चगा हो गया। लाठी के सहारे थोडा थोडा चलने लगा।

उधर दो महीने से दुकान म नुकसान हो रहा था। श्रीमती ने बहिन-बेटी को लाकर अपनी दुकानदारी जमा ली। मालती कुडू को छोडकर दुकान आ नही रही थी। कुडू न सुना तो कहा यह नही होगा। चल, रिक्शा करके मैं खुद जाऊगा।

दुकान गया। ठेकेदार को बुलाकर कहा तीन महीने म अदर पक्के का मकान बन जाना चाहिए। रुपया पसे दूगा मैं।

चार महीने लगे थे। उस अरसे मे किए कुडू दिन की दुकान को वहाँ से खिसकाकर ज्यादा किराए की जगह म ले गया था। चार महीने के बाद कुडू स्वय उस मकान म रहने के लिए आया था। मकान मालती के नाम लिख दिया था।

दुकान को कुडू ही सजाकर द गया है।

मालती दुकान म बठा करती। बीच बीच म उठकर कुडू का दख

आया करती। बाहर गाहकों की भीड आती। वह हसती हुई फिर आकर कुर्सी पर बैठ जाती।

कुड्डू आखिर गुजर गया। इसी मकान में मरा।

उसके सिरहाने मैं मालती ने तुलसी का बिरवा रखा था। उसने बेटी बेटा को बुला लाई थी। उन लोगों ने दूध गंगाजल दिया था।

उसके बाद एक एक करके कितनों के साथ उसकी बदनामी हुई, इसका हिसाब नहीं।

मन कभी-कभी चचल हुआ। सेटलमेंट आफिस का एक बाबू। कम उमर का। बड़ा अच्छा लगता था। वह मालती को चाहने लगा था। मालती डावाडोल हुई थी। लेकिन सुना कि उसके स्त्री है। उसके बाद से उसने हसी मजाक ही किया। इससे ज्यादा नहीं।

और भी कितनों के साथ। लेकिन वह असह्य हो आया। अब नहीं। बीच बीच में नाटक को खत्म करने की इच्छा होती। उसकी वासना कभी कभी नदी की बाढ़-सी उमड़ आती।

भगवान को भी नहीं पुकार सकती। भगवान पर भी तो उसे विश्वास नहीं। रहता तो, तुम्हारे ही पास मालती आती मौसी!

श्रीमती की दुकान में ग्रामोफोन बज उठा। नाच का गीत। हाट शुरू हुई।

न देर है अभी। डेढ बज रहा है। ठाकुर आकर खडा हुआ। तरकारी लेकर आया था। आलू की भुजिया, गोभी की तरकारी, मछली।

—और वह क्या है?

ठाकुर ने कहा बड़े की तरकारी।

मालती ने कहा बाप रे! इतना क्यों?

—खाओ न! दुनिया में खाओगी नहीं तो क्या करोगी?

गुस्सा हो आया। फेंक देने की इच्छा हुई उठाकर। मगर अपने को जब्त किया। कहा, नहीं। ले जाओ। वह ले जाओ।

—खाम्रोगी नहीं ?

—नहीं !—खूब चिल्लाकर बोली।

अड की तरकारी का कटोरा लेकर ठाकुर चला गया। वह खाने बठी। अचानक यह क्या हो गया उस। सब उठाकर फेंक करके हसिए से जसे बासदेव को काटा था, वसे ही अपने को काटने की इच्छा होने लगी।

ग्रामोफोन म दूसरा गीत बज उठा।

कार फीतावाला उसकी खिडकी के ही पास चिल्ला रहा था, कार, फीता। फीता कार। जमाई को बाधो तो खुलेगा नहीं—

उठ बठी वह। खिडकी से उभककर देखा हाट लग गई है। आज सवेरे सवेरे ही लग गई। लेकिन दोपहरी ढल रही थी। अभी शाम के गाहक कम होंगे। बीडी सिगरेट बिकेगी।

हाथ धोकर वह जरा लेट गई। तद्रा आ गई। अचानक आख खुली। ठाकुर पुकार रहा था माजी।

—क्या है ?

—बसत बाबू गोपा—ये सब आए हैं। बुला रहे हैं।

—बसत। गोपा। किसलिए ?

—बठेंगे जरा।

सीभकर उठी वह। दरवाजा खोलकर निकली। गोपा खडी थी। बाहर के दरवाजे के पास बसत रिक्शा का किराया चुका रहा था। उसके साथ एक और आई। एक नहीं दो जने। एक की पोशाक अजीब-सी। गरमा भया। पटनाव का कपडा सफेद। सर पर गरमा रग की पगडी। माला पर नीला चश्मा। चहरे पर चेचक का दाग। वह एक मादमी का हाथ पकडकर अन्दर आ रहा था। अधा है क्या ? कौन है ? बसत कहा से आया ?

शायद कोई सभा करेगा। यह भी कोई पेशा है। वह साभी। मारी गत स बूटा यही पर है ?

बसत ने कहा, हा।

अघा ही है वह। बडी होशियारी के साथ टटोलकर पाव रख रहा था। उसने आवाज दी मालती!

कौन?—अचरज मे पड गई मालती।

बसत ने पुकारा, मालती!

मालती सीढिया से नीचे उतर आई।

उधर ग्रामोफोन बज रहा था। अबकी उसीके रेस्टुरेंट मे। वही गीत—

कहा ठिकाना मन राधा का कहा भुवन म कौन भवन मे।

मालती बरामदे पर आई। नीरस गले से ही बोली, भाभो। लेकिन उसकी वह पुकार कोई नहीं सुन पाया। नीला चश्मावाला पगडवाला आदमी बोल उठा, हाय-हाय-हाय! और साथी का हाथ छोडकर सामने को हाथ फैलाते हुए गा उठा

कह सकती है कौन सजनिया कौन स्वजन रे!
अरे
अरे किस बस्ती में किस नगरी मे किस जगल म,
किस निजन म!

ओ मरी मन राधा का—

अचानक गाना बद करके बोल उठा मेरी 'गुदगुदागुदु' कहा है?

बसत ने उसके बदन पर हाथ रखकर कहा, होगा? फिर होगा?

—फिर होगा? क्यो?

—वह देखो, मालती खडी है।

—ऍ! मालती! बलिहारी, बलिहारी। कहा है रे शरीर छोरी कहा है? वीर बाकुरी कहा है? बाप को बचाने के लिए वासदेव जसे पहलवान, राक्षस कहो, उसे काट डाला और सजा काटी—तू वीर है। कहा है तू? मैं अघा हू रे! कहा है?

मालती बोल उठी, कौन? उसके आश्चय की सीमा नही थी।

ग्रामोफोन के रेकड की आवाज और इस आदमी का गला हूबहू एक।

बसत ने कहा, पहचान नही रही हो?

—पहचान नही रही है?—हा हा करके हस उठा वह आदमी। उसके बाद गा उठा—उज्ज्वल नीला तारा।

सोनाठाकुर। नोवूठाकुर। लेकिन शक्ल कसी हो गई है? सारे चेहरे पर चेचक का दाग। वह रग होते हुए भी जस नही रहा है। लवा दुबला। आखें नीले चश्मे से ढकी। कहता है अधा हो गया है। वे आखें? गजब की। ओह। उसके मन म चुपचाप एक ओह हुआ और तुरन्त यह क्या हो गया? आखो म जलन हो गई—ठीक जलन जसी। तुरन्त ही उसने महसूस किया कि उसकी आखो म आसू आ गया है। उसके मन मे खोकाठाकुर का वही रूप वही काति नाच उठी। चपा मौसी कहती थी सोनाठाकुर। आ। आसू शायद ढुलकता आता है। उसने झटपट आसू पोछा। उसके बाद आगे बढी। पाव छूकर प्रणाम किया।

—मालती। वाह वाह। प्रणाम कर रही है।—झुककर उसने उसके बाल पर हाथ रक्खा। मालती खडी हो गई। उसके सर पर हाथ फेरकर वह बोला रुक जा। देखू जरा तू कसी हुई है। अपने हाथ बालो पर कपाल पर फिर कई बार सहलाकर बोला वा वा वा तू तो खूब सुदर हो गई है रे। खूब सुदर।

मालती समझ गई खोकाठाकुर पागल ही हो गया है। उसने बात को उलटकर कहा तुम्हारी यह कसी शक्ल हो गई ठाकुर।

—क्या हो गई है?

—देख नहा पाते हो?

खोकाठाकुर ने चश्मे को उतार दिया कसे देख पाऊ? आ दोनो आखें गल गई है। आ। मेरी आखो म आसू आ रहा है।

बसत ने कहा चल, अब बाहर खडे-खडे नही। बठने की जगह दे जरा। सबेरे हवडा म गाडी पर सवार हुआ हू। क्या भई नहा

ओगे न ?

—अरे बाप रे ! नहाए बिना तो मर जाऊगा। लेकिन वह फिर होगा। पहले तुम्हारा काम। जिसके लिए आया गया है। समझ गए ! बाप रे ! नव स सुना है चल रही है। दिए हुए का हरण करनेवाला ! बाप रे बाप ! दस्तावेज मे लिखा नही है तो क्या हुआ ! मैं तो उस्ताद से कह गया था, मेरा जो भी है सब ल लेना। मेरी गुरु दक्षिणा। टूलू चौधरी गवाह है, धरनीदास है श्रीमत मर गया।

मालती जगह बनाकर उन्हें अदर लिवा गई। बिठलाकर एक टेबिल फन लगा दिया। वहा थोडा जलपान कर लो बसत दा।

बसत न कहा, चाय दे।

खोकाठाकुर ने कहा, मुझे थोडा पानी पिला पानी। और मर पेने को चाय वाय दे। क्या खाओगे मन्ना ?

मन्ना लडका सा है। वह बोला चाय ही पिऊगा।

मालती जा रही थी। खोकाठाकुर ने कहा, अरे, अपने आदमियो से कह दे। तू बठ। बठ।

खोकाठाकुर ने कहा, मौनी नवद्वीप चली गई है। तुझसे नही पटी। तूने खूब अच्छी दुकान है। पक्का घर। बिजली की बत्ती। बडी चलती है। वाह ! वाह ! नौकरो से कह द, ल आए। तू बैठ। अंतिम दिनो म तून बुडू की बडी सेवा की। मैं कहता हू वाह ! वाह !

मालती का मन गमह म सख्त हो उठा। किंतु अपने को जब्त किया उसने। वाली अभी अभी बठती हू ठाकुर। नौकरों से भी यह सब बनता है भला ! कितने दिनो के बाद आए हो जरा। आदर जतन करू। बसत दा लीडर है। पान से चूना भी गिर जाए तो किसी दिन मीटिंग म पोल खोल देगा। गोपा नहाओगी तुम ? कर दू इंतजाम ?

खोकाठाकुर बोल उठा ठीक ठीक। ठीक कहा है। जा-जा।

मालती चली गई। उसने सुना कि खोकाठाकुर गुनगुना रहा है। पहन वह गोपा को लेकर कुआ तले गई। वह नहाएगी। गोपा ने उससे

कहा खोकाठाकुर इस समय मशहूर आदमी है रे। ग्रामोफान रेकड म उसका गीत आता है। वह जो कौन सजनिया कौन स्वजन रे वाला गीत है न वह तो उसीका गाया हुआ है। अच्छा पसा मिलता है। कही सास्कृतिक आयोजन कुछ होता है तो इसे रुपये देकर ले जाते है लोग।

मालती म अब अवाक होने की भी शक्ति नही थी। उसका भीतर जसा तो निर्वाक हो गया। जो बातें वह कहती रही वह उसी तरह से कही, जसे दुकान मे सोचते सोचते भी हसकर गाहको से कहती है। अपने मन म वह उस खोकाठाकुर और इस दुबले, अधे मले रगवाले खोकाठाकुर की सोचने लगी। दोनो हरगिज नही मिल रहा है। सिफ बात और मन स मिल रहा है—वह आदमी वही है।

खोकाठाकुर का बडा नाम है। बडी आमदनी है। यह बात मानो उसके मन म नही पठी।

वह जरा हसकर चली गई। जरा देर म लौटी—नौकर क हाथ म ट्र पर चाय चाप सिघाडा। अपने हाथ म शरबत का ग्लास। एक टिन गोल्डफ्लक सिगरेट। उसे खोकाठाकुर के बीडी पीने की गाथा पीने की याद हो आई। ठाकुर बठा बठा तब भी गुनगुना रहा था। बसत बग म स निकालकर कागज-पत्तर देख रहा था।

शरबत का ग्लास ठाकुर के हाथ मे देकर मालती ने कहा पियो।

—अरे मीठी मीठी गध आ रही है। रोज सिरप। वा वा वा। तू बहुत अच्छी हो गई है मालती। बडी अच्छी। जाती है मेरी इन आखो के गए पाच छ साल हो गए। केवल निकला।। उसके बाद से एक चीज समझ म आई। चेहरे पर हाथ फेरकर मैं समझ सकता हू कि रूप कसा है। और वदन की गध से यह समझ लता हू कि मन कसा है। साबुन-तल की गध नही। मुझे एक गध मिलती है। तेरे बदन की गध मुझ मिली है।

—पी ला। शरबत पी लो।

शरबत पीकर इगार स ग्लास को रखने जा रहा था। मालती ने

उसके हाथ से ग्लास ले लिया—दो। देने-लेने मे दोनो के हाथ एक-दूसरे से लगे।

—रुक जा। रुक जा।

हाथ पर हाथ फेरकर कहा, देखें। बडा मुलायम है रे। बडा मीठा।

—छोडो। यह लो। उसने सिगरेट का टिन और दियासलाई दी—पीयो! जो बीडी फूका करते थे—और—

हा-हा करके हस उठा खोकाठाकुर।—याद है? हा-हा-हा हा। एक ही कश म बीडी को साफ कर देता था। और, उस मास्टर का कान पकडना? हा-हा हा-हा।

कमरा हसी के मारे कापने लगा। एकाएक हसना बद करके बोला, लेकिन अब तो मैं यह सब पीता-वीता नही हू।

—नही पीते हो?—मालती को आश्चर्य लगा।

हाथ बढाकर बसत ने सिगरेट दियासलाई ले ली—मुझको दो। गोल्डफ्लेक है! वाह!

—अब तो ठाकुर एक नामी आदमी है—काफी कमाई—गोल्डफ्लेक के सिवा दे सकती हू भला! सो तुम भी मशहूर आदमी हो—तुम्ही लो।

बसत ने कहा हा। नवीन बाऊल बहुत बडा आदमी है। प्रसिद्ध आदमी। खैर। मैं कप से ही आता हू तुम बैठो नोव।

गोपा नहा रही थी। खोकाठाकुर के साथ का वह लडका हाट देखने गया। बसत चला गया। बैठ रहे खोकाठाकुर और मालती। मालती ने कहा तुमने यह सब छोड दिया है, ताज्जुब लगता है!

खोकाठाकुर ने कहा, गला बैठ जाने लगा। हरगिज ठीक नही हो रहा था। कपनी ने कहा डाक्टर को दिखाओ। डाक्टर ने कहा, अत तक कैंसर हो जाएगा। मैंने कहा सो हो। आप मेरा गला ठीक कर दीजिए। बस हो गया। कहा बीडी सिगरेट पियोगे तो गला दिन दिन बैठता ही जाएगा। कैसर भी होगा। समझा? क्या कहू? गाना-वाना बद हो जाएगा। बाप रे! छोड दिया।

—कसर !—मालती रो पड़ी—इलाज नहीं कराया ?

—कराया। जाच-वाच की। गले का मास वास देखा। कहा, नहीं, कैंसर नहीं हुआ है। लेकिन सिगरट गाजा पीने से होगा। गला ठीक हो गया। वह गा उठा—

कुल रक्खू कि कलक बताए कौन हाय रे
कुल सोने की सेज कलकी काजल केश सुहाय रे!
कुल रक्खू कि रखू कन्हैया
कुल से रह न कान्ह री दैया
कुल खोऊ तो कूल नहीं फिर, बीच भवर रह जाए रे!

मालती के आसू अब रोके नहीं रुके। गाल से होकर भरने लगे। यह गीत मानो उसी का हो। यह तो वही है। उसका कुल भी गया कन्हैया भी। माथे पर केवल कलक का बोझा लिए भुवनपुर की हाट में सौदा करती फिरती है। जीवन में आकठ तृष्णा। एक को उसने मन दिया अपने आपको दिया उसे नहीं पाया नहीं पाया! भुवनपुर की हाट में केवल पसो की ही लेन देन है। इसके सिवा सब भूठ है।

गाना बद करके खोकाठाकुर ने कहा अब मरे गले में कुछ भी नहीं है। खूब अच्छा हो गया है। और भी खुल गया है। समझी? गीत की कन्टर भी खूब है। खूब। गीत भी मेरा है। मेरा। मैंने लिखा है। अरे चुप हो गई! तारीफ नहीं की? मालती चली गई?

मालती हट गई। खोकाठाकुर ने उसके मुह की ओर हाथ बढ़ाया। देखने लगा, वह है या नहीं।

फिर आवाज दी मालती। तेरी गध मिल तो रही है मुझे। चली तो नहीं गई है?

मालती उठ खड़ी हुई। आखें पोछकर बोली खाओगे क्या, सो कहो। मछली-बछली तो खाते हो न?

—खाता हू। समझी—मास। थोड़ा-सा मास चाहिए।

—मास खाते हो?

—खाना पड़ता है। डाक्टर ने कहा है। जानती हो कसर तो नही हुआ, हो गया टी० बी०। देख नही रही है, दुबला हो गया हू।

—टी० बी० ?

—हा। बुखार होने लगा। उसके बाद मुह से खून आने लगा। सोचा, गला फट गया होगा। फिर डाक्टर से दिखाया। उसने छाती की तसवीर ली। कहा, टी०बी० है। कहा, अस्पताल म भर्ती हो जाओ। मैंने ना किया। गाना बद हो जाएगा। बठकी बद हो जाएगी। मरना है तो गाते गाते ही मरूगा। मरने के समय के लिए गीत लिखूगा एक लिखा भी ठीक मरने के समय का नही कुछ पहले का। सुनेगी ?

और वह शुरू हो गया—आ!

मालती की बोलती बद हो गई। वह ना नही कर सकी।

खोकाठाकुर गाने लगा—

खत्म हुई बेला मला की, हुआ घाट का वहा इशारा
बोझ कहा रक्खू यह सरका विकट नदी है नही किनारा
दरदी कहा, कहा अपने जन
जो लेगा माथे का कचन
मन मान ना फकू जल म बडे जतन का यह धन सारा।

अचानक थक गया। बोला तू रो रही है मैं समझ रहा हू। रहने द।

मालती ने आखो को पोछ करके कहा तुम यहा कहा आए हो ? वह जगह तुमने वसत को दी है, सटलमट की अदालत म यही कहने के लिए ?

—हा रे। वसत बहादुर है। खूब बहादुर है। खोज करके ठीक ही निकाल लिया! समझी! कहा मैं आया हू कि तुम कुछ रुपये ले लो और लेकर मुझे लिख दो। तुम्हे कुछ कमी तो है नही।—ठीक ही कमी मुझे नही है। अच्छा मिल जाता है। और मिल चाहे नहीं मिले गुरु को जवानी दिया है लिखने म ही चूक हो गई, तो क्या उसका रुपया लू! और फिर वसत बहादुर है अच्छा आदमी है कलेजावाला

है। गोपा को ब्याह कर लिया। खोन्टे का काम तो नहीं किया न! नौकर है। भक्ति करता हूं उसकी। एसा की मैं भक्ति करता हूं। मैंने कहा, इसके लिए रुपया किस बात का? रुपया किसलिए? चलो चलो कह दूगा। मैंने दान किया है। गुरु को दिया है। बगैर मेरे गुरु का बेटा है! चला आया। कह दूगा, काम बन जाएगा। कल चला जाऊगा। तुम लोगों से भेंट हो गई। बाबा मुरलीधर को दण्डवत कर आया। जाते वक्त फिर एक बार कर लूगा।

बाहर हाट लगी थी। एक बहुत बड़े छत्ते में मानुस मधुमाखी भन भन गुन-गुन कर रहे थे। बीच बीच में दो चार खूब ऊंचे गले की चीख पुकार।

या तो झगड़ा होगा, या कोई किसी को पुकार रहा होगा। या फिर जोर जोर से कोई अपने सौदे की हांक लगा रहा है। लेकिन मालती को लगा सारा भुवनपुर आधी रात जैसा सुन्न हो गया है। कहीं कोई जाग नहीं रहा है। उसी में वह खोई जा रही है। बात चुक गई है चिंता खो गई है। जीवन ही शायद समाप्त हो जाए।

अजीब है खोकाठाकुर।

नवीन बाऊल का नाम सुनकर सेटलमेंट आफिस के साहब ने कहा गाना सुनाना पड़ेगा।

खोकाठाकुर खुश हो गया। बहुत खुश। बोला बेशक। लेकिन वहां, हाट पर।

हाट में जोरों की बत्ती जलाकर महफिल जमी। भीड़ बहुत हुई। सारे भुवनपुर के लोग जुटे।

मालती ने मना किया नहीं। यह क्या कर रहे हो?

जो लड़का साथ में था वह अपने तो मना नहीं कर सका। मालती से कहा मना करने के लिए। लेकिन खोकाठाकुर ठठाकर हंस पड़ा।

मालती बोली ऐसे हंसो मत ठाकुर। तुम अपना भला-बुरा नहीं

समझते हो।

अंधा ठाकुर पैरों में घुंघरू बांधते हुए बोला, अरे, भुवनहाट में गा लेने दो जी की झोली खाली करके! अरे यह तो पद ही बन गया। वाह-वाह!

> भुवनहाट में गा लेने दो जी की झोली खाली करके।
> ले जाने दो दुख उतारकर सुख से अपना आंचल भरके!
> यहां बंधा मनस का ढेला।
> गिरकर जा खोया उस बेला।
> किस जादू ने किया रतन उसको अलबेला।
> स्वर्ण सूत में पहन उसे तू गले गूंथ करके!

अवाक् हो गई मालती। बात नहीं पूरी। उसने हाथ पकड़कर उसे ले जाकर महफिल में उतार दिया। देखते ही देखते नोवूठाकुर एक और ही आदमी बन गया। गेरुआ झब्बा पहनकर मस्त हो उसने गाना शुरू किया। सबसे पहले वही गीत। उसके बाद गीत पर गीत। घुंघरू बांधे नाचा। लोग मंत्रमुग्ध हो गए। वाह-वाही उसने खुद दी। हाय हाय करके सरस वाह खुद ही किया। कभी बोला—अहा हा—

साढ़े दस बजे के बाद महफिल टूटी। फिर भी उसे छुट्टी नहीं मिली। मालती की दुकान के सामने कुर्सी डालकर सटलमट का साहब बैठा। बीच में खाकाठाकुर को बिठाया। कहा, अब आपकी बात सुनूंगा।

नोवूठाकुर तो हंसते हंसते बेहाल—बात! बात क्या?

—आपकी कहानी। यहां से बाउल होकर चल गए थे आप।

नोवूठाकुर सहसा गंभीर हो गया। फिर अचानक ही हंसकर बोला, जरा आदमी के मन को तो देखिए। गुस्सा हो आया। राम राम! यानी उस समय बड़ा दुःख था। समझ गए। गुरु बुरा कहता था लोग बुरा कहते थे। गांजा पिया करता था। कि ऐसे में जयदेव के मेले में



एक बाऊल का गीत बडा भा गया। मैंने पकडा उसका पल्ला! मुझे गाना सिखाओगे? वह बोला, होगा तुझसे? अच्छा जरा गा तो कोई एक पद देखू, कैसा गाता है! मैंने उसको उसी का गीत सुना दिया। बहुत खुश हो गया। बोला, चल। लेकिन बडी तकलीफ होगी। मले मे मेरा वह उस्ताद था। श्रीमत था। श्रीमत को मैंने पोखरा दे दिया। आ यही देखिए। जबानी दाग। बाबुआ ने बात पलटकर कसा किया, देखिए जरा। मालती लडकी बडी अच्छी है। मेरा गीत सुनने की ताक मे लगी रहती थी। बडा अच्छा लगता था! उसका क्या हुआ सो देखिए!

जरा देर चुप रहकर बाला स्वर। जो हुआ सो हुआ। भुवनपुर की हाट मे रोज रोज फौजदारी। आदमी का स्वभाव है यह। मारता है, मार खाता है। सजा भोगता है। लेकिन इस लडकी ने भोगकर भी जीत लिया है। क्या गजब किया है देखिए!

किसी ने कहा अपनी बात कहिए।

—मेरी बात? यह भी तो मेरी ही बात है। मालती को देखकर क्या खुशी हुई, कह नहीं सकता। क्या बताऊ। वसी ही खुशी बसत को देखकर हुई! अलबत। मद है। वाह वा। वाह वा मैं भी हू। मेरी भी वाहवाही है। कुछ दिनो तक दो साल घूमा किया। चेचक हुई। भयंकर चेचक। पहले हुई गुरु को। गुरु चल बसे। मुझको हुई। मैं कसे जिदा रह गया नही जानता। बच तो गया पर दोना आखें गइ। रास्तो की खाक छानता रहा। गुर ने कहा था जा, तुझे मैंने दिया। अब अपने मे अभ्यास करते रहना—रास्ते रास्ते गाते चलना—लोग सुनेंगे तेरा भी अभ्यास होगा। उसीसे जो मिलेगा तेरा गुजारा हो जाएगा। जो सोचना हो मन म सोचना। याद रखना, पाप नही है, पुण्य भी नही है। लेकिन एक हिसाब है। उसी हिसाब स सुख घटा है यह राज। खोजने-खोजने कष्ट होगा फिर सुखी भी होगे। मन के उमी भाव का एक मैं पिराना पद बनेगा। वही गाया करना। मैं वसा ही

करता चल रहा था। एक दिन एक जगह नदी के किनारे बड़ी हलचल हो रही थी। आंखा से देख तो पाता नहीं। लाठी से टकटोर कर चलता हू। एक आदमी से पूछा, क्या भैया क्या है? तो बोला, तसवीर ले रहा है। बायस्कोप। उस समय सिनमा फिलिम क्या होता है नहीं जानता था? अब बहुत सीखा। बहुत। अब पढना पडता है लिखता-पढता हू। सो मैं भी खडा हो गया। बाता से कुछ-कुछ समझ रहा था। इतने म उनम से एक आदमी ने मेरा रग-ढग देखकर पूछा क्या है? तुम क्या देख रहे हो?

मैंने कहा अरे बाबा, सुन रहा हू। सुनकर समझ रहा हू।

—पोशाक तो बाऊल की है। गाना आता है?

—आता तो है। सुनिएगा? मेरा तो काम ही सुनाना है बाबा।

बोला तो बठ जाओ।

कुछ दर म व लोग खाने बठे। मुझसे पूछा, खाओगे? कहा, दो। बोला मुरगी? मैंने कहा जो भी दोग बाबा वही खाने का आदेश है गुरु का। लेकिन मुरगी कभी खाई नहीं है मास मत देना, बाकी सब दो।

बहुत हसे लोग। फिर गाना-वाना सुनाया। वही गाना समझ गए— मन राधा का कहा ठिकाना!' सुनकर वे बडे ही खुश हुए। कहा, पूरण से कम नहीं है। उस समय तक मैंने पूरण को नहीं सुना था। बाद म सुना। बहुत अच्छा। खैर जो भी हो। उनलोगो न मेरे गीत का रेकड किया। बीस रुपए दिए। उनम से एक ने मुझसे कहा मेरे साथ कलकत्ता चलो। लाभ होगा नाम होगा। रकड म तुम्हारा गाना आएगा। मैं चला गया। यह दो साल पहल की बात है। लोगों ने बताया, उस आदमी ने मुझे ठग लिया। मरे गीत के रेकड का सौ रुपया मुझे दकर रायल्टी वे ल लेते हैं। उनके पास स मैं दूसर सज्जन के पास गया। उसके बाद मेला जुट गया। अपना डेरा हुआ। अब तो लोग काफी खातिर करत हैं। लेकिन कहते हैं, मुझे ठगते हैं लोग। मैं जानता हू। दो-तीन औरतो ने पीछा पकडा था। मेरे साथ-साथ घूमती थीं। मैं तो बडी आफत मे

पढ़ा ! कोई रुपया लेकर लिसाब पग्ती। कोई धुन सीखकर चपत। कोई कहती, मुझसे शादी कर लो। मगर ब्याह मैं किससे करूं? इसमे अपने गुरु का हिसाब है। जो लड़की मरी सरवत हो, जो मुझमें म डूब, उसे छोड़कर किससे ब्याह करूं? गो गुरु ने बचा लिया, जस ही सुना कि मुझे तपेदिक हो गया है, वसे ही एक एक करके भाग गई। मैं समझता हू, तपेदिक नहीं, यह गुरु का आशीर्वाद है। जय गुरु। समझ गए। एक बार की बात है, तकिए के नीचे हजार रुपये रखे थे। एक औरत ने देख लिया था, उड़ा लिया। उसके बाद बोली, कुछ रुपये उधार दो घर म बड़ा अभाव है। छुटकारा मिल गया। अब मुझसे भूत की तरह डरती है—

इतना कहकर वह हा-हा करके हंस उठा।

फिर बोला, वसन मेरे गुरु का लड़का है। इसने जो किया गुरुपुत्र के सिवाय और कौन कर सकता है! मुझे यहा ले आया—भुवनपुर। मिट्टी का बंधन इसने मिटा दिया। भुवनपुर की हाट—अहा—

भुवन हाट म गा लेने दो—

समझ गए यह गीत आज ही बनाया है!

मालती अपनी कुर्सी पर बैठी सुन रही थी। नींद आ रही थी शायद! मेज पर सर रखकर सो रही थी मानो।

महफिल टूटी। रात के बारह बज रहे थे। नोवूठाकुर कमरे मे अपने बिस्तर पर बठा था। सोया तो नींद नहीं आई। बचपन की बातें याद आने लगी। एक के बाद दूसरी तसवीर तर जाने लगी।

कभी-कभी लगने लगा, कही कोई एक आदमी जाग रहा है। बाकी सब सन्नाटा। रात के करीब तीन बज रह होगे।

एकाएक दरवाजा खुल गया।

नोबू ने पूछा—कौन? और फिर तुरत ही बोला—मालती?

उसे उसके बदन की गध मिली।

मालती ने कहा हा।

—क्या है रे ?

मालती ने नि सकोच कहा, सुनो। कल तुम्हारा जाना नही होगा। कल तुम नहीं जा पाओगे।

—क्यों रे ?

—कल ही नहीं, कभी नही जा पाओगे। मैं तुम्हारी सेवा करूगी।

—मालती ! मालती ! मेरे पास आ—सुन।

मालती उसके पास जाकर बठी। नोबूठाकुर ने उसके माथे पर, मुह पर हाथ फेरकर कहा, सेवा करगी ? मेरी सेवा करेगी तू ?

—तुम्हारी सवा करूगी। तुम्हारा इलाज कराऊगी। तुम्ह बचाऊगी। मैं तुम्हारे रुपये नही चुराऊगी ठाकुर तुमसे उधार भी नहीं मागूगी। तुम्हारी धुन भी नही सीखूगी। यदि हो सके तो तुम मुझे अपन आप को देना।

—ऐं रो रही है तू ?—पैरा पर आसू टपका—मालती, तू मुझे लेगी ?

मालती उसके पैरो म मुह गाडकर औंधी पड गई। कहा, मुझसे अब नहीं सहा जाता। तुम मुझे स्वीकारो।

नोबू ने कहा चल। मेरा हाथ पकडकर मुझे ले चल। भुवनेश्वर थान म बाबा का साक्षी रखकर तुझे ले आऊ। ले पकड मेरा हाथ।

रास्ते में दद से कोई कराह रही थी। कोई स्त्री। टिकली की बहन। आसन्नप्रसवा थी। उसके बच्चा हो रहा था।

नोबू ने कहा, कौन है ? क्या है ?

उधर कोई रो रही थी। चुनरिया। उसका बाप बीमार था।

मालती बोली, वह कुछ नही है चलो।

दोनो भुवनेश्वर थान चले गए।